सितम्बर 2012 ▪ ₹ 25/-

चन्दामामा

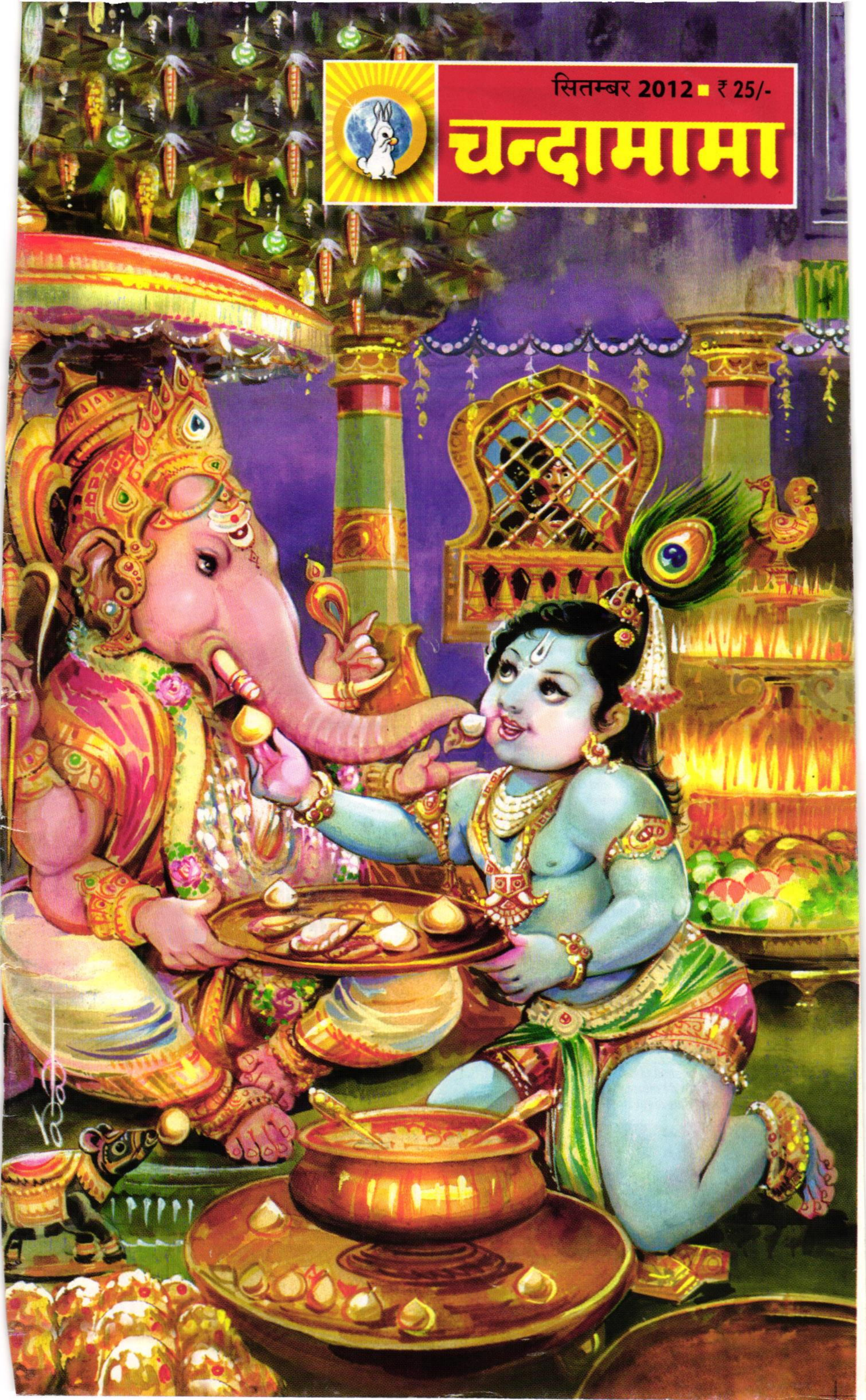

EACH POWER CAN BE UNLOCKED BY EATING THEIR FAVOURITE POPPINS. 10 POWERS: *SHAPE SHIFTER*-GREEN APPLE, *SPEED*-MANGO, *FLIGHT*-ORANGE, *GIANT*-WATERMELON, *STRENGTH*-RASPBERRY, *SHRINK*-LYCHEE, *INVISIBLE*-PINEAPPLE, *STRETCH*-MUSK MELON, *FISSION*-BLACK CURRANT, *FORCE FIELD*-GUAVA.

RECAP: RAM AND SHYAM RESCUE AN ALIEN - ZARTOGAARR, WHAN HIS SPACESHIP CRASHES TO EARTH. IN RETURN HE GIFTS THEM THE DEKATRIX, *A POWERFUL GADGET* WITH *10 POWERS.*

www.chandamama.com/parle/

murugappa
BSA LADYBIRD
Your best friend for life.
BSA LADYBIRD
Breeze
Ride like a wild Breeze
When there's a Breeze around, every day looks even more exciting. The dashingly designed cycle is your perfect partner for the daily getaways and weekend adventures. Ride the joy.
Attractive Product Benefits: Designer Step Through Frame Attractive Wire Mesh Basket | MTB Tyres | Stylish Chain Cover Designer Skirt Guard | Strong Integrated Carrier
Available in four colours
Black
Aqua Green
Steel Blue

September 2012 ₹25/-

***Founded by* B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher :
Prashant Sharad Mulekar

Associate Editors :
R. Vaasugi, K. Raja Sekhara Raju

Sub Editor :
Patricia Pandian

General Manager :
Sowmya Bharadwaj

Senior Artists:
K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh, Sandeep Solkar

Artist :
Venki

Layout Designers :
B. Thirumal, K. Narendra, N. Sivakumar

Production In-charge :
Prashant Pawar

Circulation:
circulation@chandamama.com

Asst. Manager - Sales & Circulation:
Subhankar Rej

Sales Officer - Circulation :
K. Ravishankar

Advertisement :
sales@chandamama.com

Customer Help :
Ph: 022 40786043
customerhelp@chandamama.com

Head Office :
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
P.O.Box No:19407, Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email:chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Published, Printed and Owned by CHANDAMAMA INDIA LTD.,
Published and Printed on their behalf by Prashant Sharad Muleker
Published at B-3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East) Mumbai - 400093.
Printed At :- Mothers Graphics (I) Pvt. Ltd. 91D, Govt. Ind. Estate, Charkop, Kandivali (W), Mumbai - 400067.
Editor :- Prashant Sharad Mulekar

H

अनुक्रम

चन्दामामा

Volume-3 September 2012 Issue-09

* पाठकों के पत्र ...०६
* दृष्टि दोष ...०७
* मेरी स्मृतियाँ ...०९
* स्वर्ण भूमि पुरस्कार ...११
* बड़ की गवाही ...१७
* दिव्य उपवन ...२०
* मित्र-सम्प्राप्ति-२ ...२४
* कुमारवर्मा की विचारोत्तेजकता ...२७
* प्रधानमन्त्री की चतुराईपूर्ण योजना ...३०
* महिमावाली बेहंगी ...३२
* जल राक्षस ...३५
* विजय स्तंभ ...३९
* मूल्य ...४३
* असफ़ल उपाय ...४४
* बिना कान के गणपति ...४८
* जुलाहे की चतुराई ...५२
* स्थिर जल ...५४
* शिथिलालय-३० ...५५
* विचित्र कर ...६३
* ध्वनि भय ...६४
* जायदाद का बंटवारा ...६६
* सब से महान व्यक्ति ...६७
* चान्दीमल का भेद ...७०
* मैं क्या बन सकता हूँ? ...७३
* चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - ४४ ...७४
* हँसते-हँसते हो जा लोट-पोट ...७५
* चूँ-चूँ का डिब्बा ...७६
* भारत दर्शक ...७८
* बीरबल ...८०
* ट्रेज़र बॉक्स ...८२

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

भगवान गणेश का आशीर्वाद...

इस माह, जबकि हम भगवान गणेश का जन्मदिन मनाने वाले हैं, वर्तमान वैश्विक परिदृश्य भी कुछ इस प्रकार का है कि जैसे लोगों को अड़चनों का सामना करने के लिये 'दैवीय सहायता' की आवश्यकता है।

मानसून ने मुद्रास्फीति के दबाव और बढ़ाकर आम आदमी के जीवन को और दुश्कर बनाया है। आओ, हम न केवल अच्छी बरसात के लिये, बल्कि लोगों के पानी का उपयोग करने में अधिक समझदारी से काम लेने के लिये भी प्रार्थना करें, जिससे इस अमूल्य संसाधन का दुरुपयोग न हो और साथ ही वॉटर हारवेस्टिंग योजनाओं के उपयोग से हम भविष्य के लिये तैयार हो पाएँ, जिसका चन्दामामा ने हमेशा समर्थन किया है।

अब भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी हैं, एक ऐसे व्यक्ति, जो भारत की जनता, राजनीति और वातावरण के बारे में गहराई से जानकारी रखते हैं। चन्दामामा की ओर से नए राष्ट्रपति को शुभकामनाएँ और उनका स्वागत।

हम हमारे पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे हमें और अधिक कहानियाँ भेजें जिन्हें पत्रिका और चन्दामामा की वेबसाइट पर उपयोग किया जा सके।

- सम्पादक

पाठकों के पत्र

मैं आपकी आर्टबुक२ का गर्वोन्नत स्वामी हूँ...महान चन्दामामा की ६० वर्षों की यात्रा का वर्णन करने वाली ऐसी शानदार आर्टबुक के प्रकाशन के लिये धन्यवाद और बधाई...!!! आपने युवाओं और मुझ जैसे ७३ वर्ष के वृद्धों के लिये यह महान श्रम किया है जो अब तक इस देश में किसी ने नहीं किया था। आर्टबुक अद्भुत है, श्री शंकर के चित्र और शानदार पेंटिंग बहुत अच्छे छपे हैं। और आपने सभी के लिये आकर्षक बनाने के लिये इसे अंग्रेज़ी में रखा है!!

मैं लगभग १९५६ से विदेशों में रहने के कुछ अन्तराल के अलावा लगातार चन्दामामा पढ़ रहा हूँ। मेरे पास तेलुगु चन्दामामा की बहुत सारी जिल्दें हैं, मैं ७३ की उम्र में भी पढ़ता हूँ और अपने नाती-पोतों को इन कहानियों के बारे में बताता हूँ।

- ए. आर. सर्मा, हैदराबाद

मैंने बहुत सी पत्रिकाएँ पढ़ी हैं लेकिन चन्दामामा ही अकेली सबसे ज्ञानवर्धक पत्रिका है। मेरी नानी, मेरी माँ, उनकी बहनों और भाइयों के लिये चन्दामामा खरीदती थीं क्योंकि उन्हें वह पढ़ने में आनन्द आता था। चन्दामामा हर माह उनके घर आती ही थी। मैं उम्मीद करता हूँ कि यह पत्रिका लाभ कमाएगी और साप्ताहिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित होगी।

- महीधर, (ईमेल से)

६६ वर्ष पूरे होने पर चन्दामामा को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं चन्दामामा को लम्बे समय तक सफलता के लिये शुभकामनाएँ देती हूँ। मैं यह देखकर बहुत प्रसन्न हूँ कि चन्दामामा सही सामग्री के चयन के माध्यम से अपनी लोकप्रियता को वापस पाने को ओर सही कदम बढ़ा रही है। थिरुट्टिरकु थक्का सत्ची, दादाजी की कहानियाँ और वेताल कथाएँ जैसी कहानियाँ चन्दामामा की शैली से मेल खाती हैं और पढ़ने में शानदार हैं।

- साईलक्ष्मी कोरडा, न्यूजर्सी, अमेरिका, (ईमेल से)

मैंने २५ वर्षों के अन्तराल के बाद दो दिन पहले चन्दामामा पत्रिका देखी। जब मैंने पुराने अंकों को छुआ, तो मेरी स्मृति ने मेरे न भूल सकने वाले बचपन को छुआ। हो सकता है आजकल चन्दामामा एक ब्रांड नेम हो। लेकिन मेरे लिये तो यह भारतीय लोगों का एक प्रतीक है। दूसरे शब्दों में, चन्दामामा किसी के भी लिये बचपन का प्रतीक है।

- वेन्नेलकान्ति रामाराव, आन्ध्र ज्योति सम्पादकीय बोर्ड, हैदराबाद

दृष्टि दोष

पुराने ज़माने में क़ातिलों और लुटेरों को ही नहीं, छोटी-मोटी चोरियाँ करनेवालों को भी कड़ी सज़ा दी जाती थी। उनके गले में काठ बाँध दिया जाता था और धूप में बिठा दिया जाता था।

रतन नामक एक आदमी ने गाँव के बाहर चरते हुए एक बैल को पकड़ लिया, उसके गले में रस्सी बाँध दी और ले जाने लगा। एक चरवाहे ने यह चोरी देख ली और ग्रामाधिकारी को इसकी सूचना दी। ग्रामाधिकारी ने नौकरों को भेजकर रतन को गिरफ्तार कराया। उसके गले में काठ बंधवा दिया और सूर्यास्त तक कड़ी धूप में उसे बैठे रहने की सज़ा सुनायी।

थोड़ी देर बाद रतन के गाँव के किशन ने जब यह दृश्य देखा तो उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, "यह क्या है? तुम्हारे गले में यह काठ क्यों बाँधा गया?"

"क्या बताऊँ। यह मेरी बदनसीबी है।" रतन ने कहा। किशन ने पूछा, "साफ़-साफ़ बताओ, ऐसा क्यों हुआ?"

"गाँव से निकल रहा था। हरे-भरे खेत के पास बड़ी रस्सी मिल गयी। बस, ले ली। मुझसे कोई बड़ा जुर्म नहीं हुआ।" रतन ने कहा।

"रास्ते में मिली रस्सी ले लेने पर इतनी बड़ी सज़ा?" किशन ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा।

"इस रस्सी के पीछे कम से कम पाँच-छः सौ रुपयों की क़ीमत का एक बैल है। दृष्टि दोष के कारण मैं यह देख नहीं पाया।" रतन ने दीन स्वर में कहा।

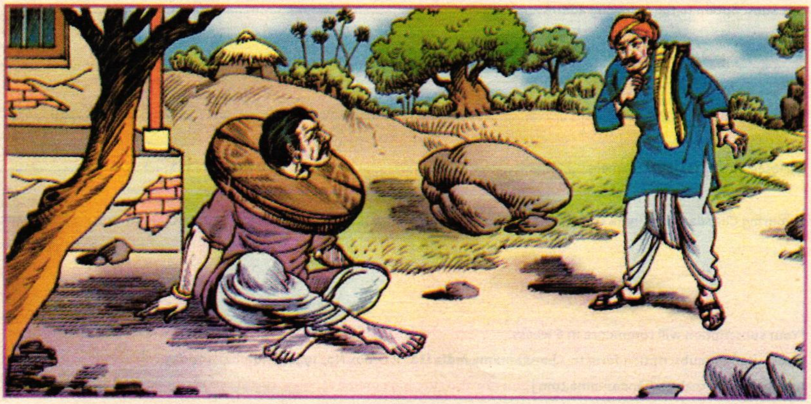

Subscribe

Chandamama

Because stories make the world go round...

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 10% off on subscription renewals! (All Editions)

Chandamama is monthly magazine available in English and 11 regional languages.
Junior Chandamama is for children above 4 years and is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama: (Tick whichever is applicable):

- ☐ English
- ☐ Assamese
- ☐ Bengali
- ☐ Kannada
- ☐ Hindi
- ☐ Gujarati
- ☐ Malayalam
- ☐ Marathi
- ☐ Oriya
- ☐ Sanskrit
- ☐ Tamil
- ☐ Telugu
- ☐ Junior (Only in English)

Take Your Pick!	1 Year	2 Year	3 Year	4 Year	5 Year
English (₹ 30/- per copy)	₹ 360	₹ 645	₹ 915	₹ 1150	₹ 1350
You Save		₹ 75	₹ 165	₹ 290	₹ 450
Junior (₹ 20/- per copy)	₹ 240	₹ 430	₹ 610	₹ 765	₹ 900
You Save		₹ 50	₹ 110	₹ 195	₹ 300
Regional (₹ 25/- per copy)	₹ 300	₹ 540	₹ 765	₹ 960	₹ 1125
You Save		₹ 60	₹ 135	₹ 260	₹ 375

Annual Subscription Overseas: US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

Name:...

Address:..

....

City:.................................... State:.. Pin:..............................

Date of Birth:........................... Sex:......... Telephone:........................... Mobile:...............................

Email:.. Subscription Number (for renewals):.................................

Gift Subscription to the following address:...

....

....

Enclosed Cheque / DD* for Rupees.. Cheque / DD No.:..................................

favouring Chandamama India Ltd on.. bank.

*Your subscription will commence in 6 weeks.

Please mail the subscription form to: **Chandamama India Ltd.**, P. O. Box No.: 19407, Mumbai-400093.

Email: customerhelp@chandamama.com | You can also subscribe online at: **www.chandamamashop.com**

**Conditions apply

मेरी स्मृतियाँ - तमिल

मैं कक्षा चौथी में अम्बुलीमामा का प्रशंसक बना था, और अब मैं ६७ वर्ष का हूँ। मुझे यह कहते हुए गर्व है कि अम्बुलीमामा के साथ मेरी मित्रता पहले से भी गहरी है। मैंने मर्यादाई रमन, वेताल, बीरबल, सिंदबाद और अन्य कहानियों को बहुत सराहा है। एक बार जब मेरे चाचा हमारे घर आए, तो वे अम्बुलीमामा की एक प्रति लेकर आए थे। मेरे चचेरे भाई ने कहा कि वह पहले पढ़कर फिर मुझे पत्रिका देगा। उस दिन जब मैं स्कूल से वापस लौटा, तो मुझे पता लगा कि मेहमान पत्रिका लेकर ही वापस चले गए हैं। मैं बहुत रोया और तब तक रोता रहा जब तक कि मेरे माता-पिता ने मुझे एक प्रति न ला दी। बाद में, कॉलेज के समय मैंने अम्बुलीमामा के लिये एक आलेख लिखा। १९६३ में, 'मेरा गाँव - वथिराइप्पु' और मेरा आलेख प्रकाशित हुए और मुझे इसके लिये पाँच रुपये प्राप्त हुए। आज भी, यदि मुझे कोई पुरानी प्रति मिलती है, तो मैं बच्चों को वह पढ़ने के लिये देता हूँ। अम्बुलीमामा अब एक नए रूप में आ गया है, लेकिन फिर भी, इसकी गुणवत्ता में कोई कमी नहीं आई है।

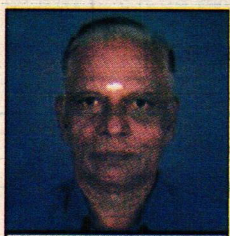

Name: Narayanan
Vadapalani, Chennai.

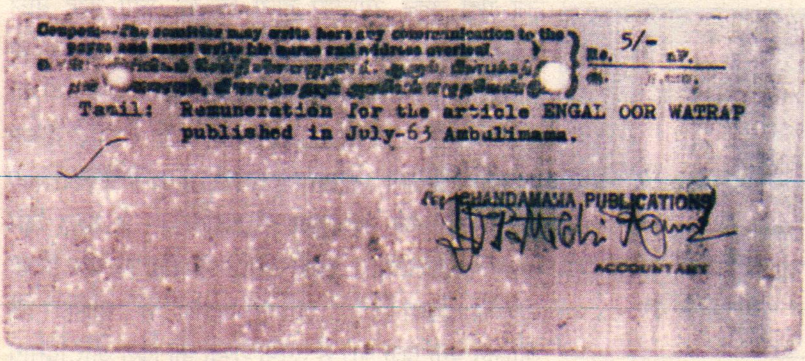

Rs. 5/- nP.

Tamil: Remuneration for the article ENGAL OOR WATRAP published in July-63 Ambulimama.

For CHANDAMAMA PUBLICATIONS

ACCOUNTANT

मेरी स्मृतियाँ - हिन्दी

जब मैं पटियाला जिले के घग्गा में सरकारी हाई स्कूल का छात्र था, तो मेरे बड़े भाई भूपेन्द्र सिंह आशत स्कूल से चन्दामामा घर लाया करते थे। जैसे ही वह आते, हम चारों भाई एक-दूसरे से पत्रिका छीनने की कोशिश करने लगते और कहते कि 'इसे पहले मैं पढ़ूँगा' और लेकर दौड़ पड़ते थे। यह चन्दामामा में छपने वाले सुन्दर चित्रों

की कमाल था। यह अब ३५ वर्ष पुरानी बात हो चुकी है, किन्तु लगता है जैसे कल ही की बात हो। जब पंजाबी में चन्दामामा छपनी शुरू हुई, तो हम हिन्दी के साथ पंजाबी संस्करण भी लेने लगे। लेकिन हमें पंजाबी संस्करण पढ़ने का सौभाग्य अधिक समय तक नहीं मिला। इस पत्रिका ने बच्चों के साहित्य को बहुत समृद्ध बनाया है। बच्चों में पढ़ने की आदत डालने और उन्हें नैतिक मूल्य देने में इसकी भूमिका को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इतने लम्बे और फलदायी सफ़र के लिये चन्दामामा के समूचे स्टाफ़, लेखकों और पाठकों को बधाई दी जानी चाहिये।

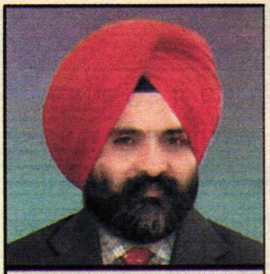

Dr. Darshan Singh Aashat
Occ: Sr. Stenographer
Patiala (Punjab)

मेरी स्मृतियाँ - हिन्दी

मेरे बचपन के दिनों में मेरी माँ मुझे एक चन्दामामा दिखाकर सुलाती थीं और बड़ा होने पर मुझे चन्दामामा अपने हाथों में मिल गया! यह मामा भी मेरे जीते-जागते मामा से कम प्रिय नहीं था। मैं अपने पिताजी को भी ध्यानपूर्वक चन्दामामा पढ़ते हुए देखता था। तब मुझे बहुत आश्चर्य होता था कि क्या कोई बाल पत्रिका किसी बड़ी उम्र के व्यक्ति को इतनी पसन्द हो सकती है? जब मैं अपने दादा एवं पिताजी से पूछता था तो वे कहते थे कि देखो दूसरी पत्रिकाओं में तुम्हें केवल कहानियाँ मिलेंगी, लेकिन चन्दामामा से तुम्हें नैतिक शिक्षा भी मिलेगी, जो आजकल की पत्रिकाओं में बहुत कम देखने को मिलता है। किसी और ने भी कहा कि जब हाँ या नहीं की दुविधा होती है, तब इसे पढ़ना उनकी मुश्किल को आसान बना देता था। मैं उनके शब्दों को दिल और दिमाग से महसूस करने लगा जब मैं गर्मी की छुट्टी के महीनों में चन्दामामा को अपना साथी बनाकर अपने साथ रखता था, हर जगह इसे अपने साथ ले जाने लगा और अपनी कल्पना को उड़ान देकर इसकी कहानियों का एक पात्र बन गया।

Kushal Chand Sahu
Chaampa (CG) - 495671

एक बार मेरे मित्र ने पूछा कि मुझे यह इतनी क्यों पसन्द है, तो मैंने कहा कि जब तक वह किसी किताब को मन से नहीं पढ़ेगा तब तक वह उसे अच्छी नहीं लग सकती। चन्दामामा एक अच्छी परम्परा का निर्वाह कर रही है। मुश्किलों के बावजूद मैं चन्दामामा के अमरत्व के लिये दिल से प्रार्थना करता हूँ और यह आगे बढ़ती रहे यही कामना करता हूँ।

बेताल कथा

स्वर्ण भूमि पुरस्कार

हठी राजा विक्रम पुनः पेड़ के पास गए और शव को उतार लिया। उन्होंने उसे अपने कंधे पर डाला और हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल दिये। तब शव में स्थित वेताल ने कहना शुरू किया, "राजा विक्रम, मैं तुम्हारे दृढ़ निश्चय और परिश्रम की सराहना करता हूँ। न जाने अन्त में तुम्हें तुम्हारे प्रयत्न का पारितोषिक मिलेगा कि नहीं। मुझे एक कहानी याद आ रही है जिसमें एक मेहनती किसान को अच्छा फल देने के बाद भी इनाम से वंचित होना पड़ा। यह कहानी सुनो जिससे तुम्हें थकावट का अहसास न हो।" फ़िर वेताल ने कहानी कहना शुरू किया।

मैत्रेयपुरम राज्य पर राजा आनन्दसेन राज्य करता था। उसे कृषि का शौक था। जब कभी शासन की जिम्मेदारियों

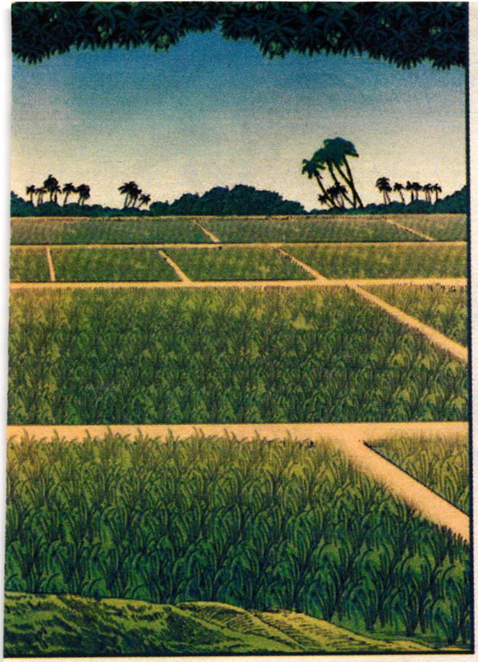

से समय मिलता, वह अपने राज्य में खेती का निरीक्षण करता। कृषि की नई नई तकनीकों पर वह ध्यान देता और पैदावार बढ़ाने की कोशिश करता। अपने अध्ययन को लेकर वह राज्य के सभी किसानों से विचार-विमर्श करता और अधिक से अधिक अन्न पैदा करने के लिए उनका उत्साह बढ़ाता।

एक बार उसने एक प्रतियोगिता आयोजित करने का विचार किया जिसमें किसानों को एक वर्ष में सर्वाधिक फ़सल पैदा करनी थी। सम्पूर्ण राज्य में प्रतियोगिता के नियम और दिये जाने वाले पारितोषिक की घोषणा की गई। किसानों को न केवल अधिक फ़सल पैदा करनी थी अपितु अपने सर्वाधिक उत्पादन से सबको अपनी ओर आकृष्ट भी करना था। देश के प्रत्येक कोने से ऐसे किसानों में से सर्वोत्तम किसानों को चुना जाना था। उन्हें ''स्वर्ण भूमि'' पारितोषिक और साथ ही रुपयों की एक बड़ी राशि इनाम के रूप में दी जानी थी।

बहुत से उत्साही किसानों ने इस प्रतियोगिता में भाग लेने में रुचि दिखाई और तुरन्त तैयारियों में जुट गए। एक वर्ष बीत गया। इनाम दिये जाने का दिन नज़दीक आ रहा था। राज्य के लोग ये जानने के लिए उत्सुक थे कि कौन कौन विजेता बनेंगे। घोषणा के दिन सभाकक्ष खचाखच भर गया।

राजा के संकेत पर प्रधान-मन्त्री मैनाक ने खड़े होकर कहा, ''मैं समस्त किसानों का स्वागत करता हूँ। हमारे श्रीमन्त महाराज को ''किसानों के मित्र'' के रूप में जाना जाता है और ऐसा ही है। इस प्रतियोगिता ने आप लोगों में जो उत्साह भर दिया है वह स्पष्ट झलक रहा है। इस एक वर्ष में किसानों में से अनेक किसानों ने अपने आप को खेती को समर्पित कर दिया, अपने बच्चों की तरह अपने खेतों की देखभाल की और अत्यधिक अन्न उपजाया। परन्तु क्योंकि इनाम थोड़े ही हैं अतः हमने केवल चार विजेता चुने हैं। शेष किसान भाइयों को भी निराश होने की ज़रूरत नहीं है। हमारे महाराज ने अब से हर वर्ष यह

प्रतियोगिता रखने का निर्णय किया है। मुझे आशा है कि आप इसी प्रकार लगातार उत्साह और अनुशासन का प्रदर्शन करेंगे और इस प्रतियोगिता को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करेंगे जिसका अन्य देश भी अनुसरण करें,'' और अपनी जगह पर बैठ गया।

फ़िर राजा ने सभा को सम्बोधित किया- ''यह अच्छा लक्षण है कि आप सब ने इस प्रतियोगिता में रुचि ली। मुझे आशा है कि इस प्रतियोगिता को जारी रखने का मेरा निर्णय अधिकाधिक लोगों को कृषि को व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिये प्रोत्साहित करेगा। मैं स्वयं विजयी लोगों के नाम घोषित करूँगा और उनके द्वारा अर्जित फ़सल का विवरण प्रस्तुत करूँगा क्योंकि यह मेरा अत्यन्त प्रिय विषय है। सबसे पहले राज्य के पश्चिमी क्षेत्र से प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले कृषक रमाकोटि का मैं स्वागत करता हूँ।''

किसान रमाकोटि ने सभा को प्रणाम किया। राजा ने कहना जारी रखा, ''रमाकोटि ने अपना ध्यान सब्जियों की तरफ़ केन्द्रित किया और पहले कभी न देखे गए आकार की सब्जियाँ उगाईं। अब वह अपने खेत में उगाया गया एक कद्दू आपके सामने पेश करेंगे। फिर उन्होंने कद्दू को सभा में पेश करने के लिए इशारा किया।

महल के चार रक्षक एक बहुत बड़ा और भारी कद्दू बड़ी कठिनाई से उठा कर लाए और एक मेज पर रख दिया। बड़े अविश्वास से लोगों ने उसे देखा। वह सौ लोगों की सब्जी के काम आ सकता था।

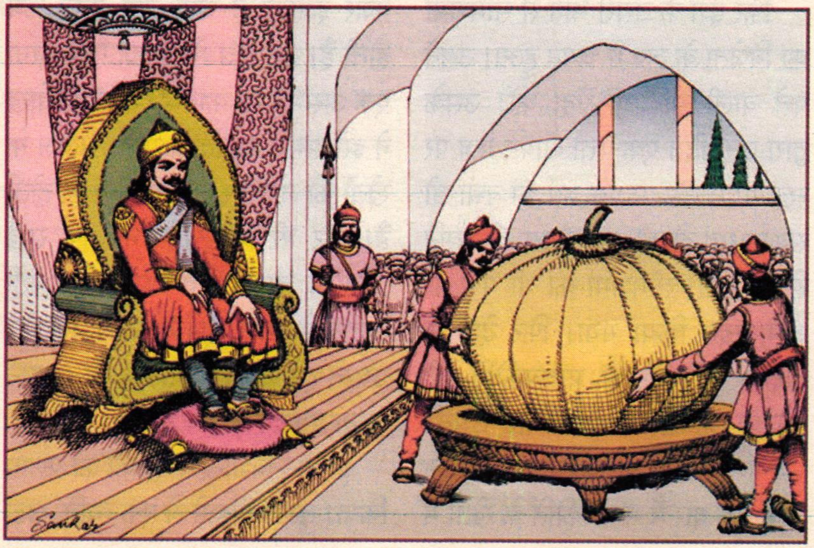

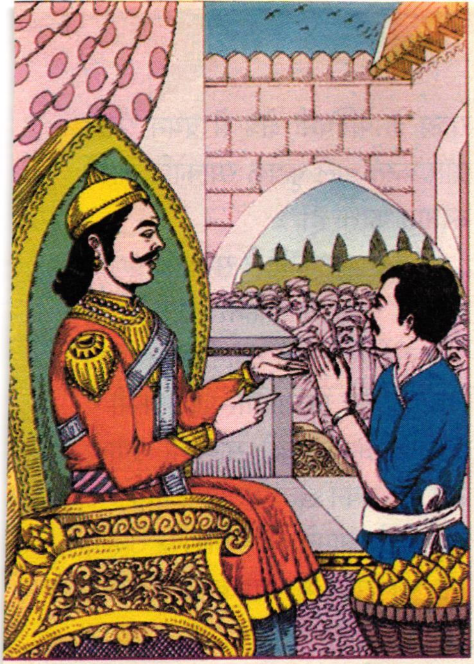

फिर राजा ने उसे "स्वर्ण भूमि" पुरस्कार और इनाम की राशि दी और दुशाला उढ़ा कर उसका सम्मान किया। तालियों की गड़गड़ाहट से कक्ष गूँज उठा।

फिर देश के उत्तरी भाग से सोमशर्मा का विजेता के रूप में चयन हुआ। उसने पत्ते वाली सब्जियाँ पैदा कीं। उसके द्वारा उत्पादित एक पत्ता लाकर मेज पर रखा गया। उस पर एक वर्ष का बच्चा सो सकता था। दोबारा कक्ष प्रशंसा की ध्वनि से भर गया। सोमशर्मा का भी मंच पर अभिनन्दन किया गया। फिर देश के दक्षिण की ओर से माधवकीर्ति को विजयी घोषित किया गया। उसकी उपलब्धि के बारे में राजा ने कहा, "हाल ही में एक बार मैं माधवकीर्ति के खेतों में से निकला। हवा के साथ ही उसके बगीचे के आमों की सुगन्ध भी आई। उससे मेरी भूख गायब हो गई और मुझे ऐसा सन्तोष हुआ जैसे मैंने एक टोकरी आम खाये हों। न सिर्फ़ मुझे बल्कि मेरे सब साथियों को भी ऐसा ही अनुभव हुआ। बाद में हमें पता चला कि उसके बगीचे से आने वाली हवा में सांस लेने से कई रोगी भी ठीक हो जाते हैं। मैं स्वयं इसके हुनर का गवाह हूँ।" फिर माधवकीर्ति के बगीचे के एक टोकरी आम मेज़ पर रखे गए। उनकी खुशबू से सारा कक्ष महक गया। माधवकीर्ति का भी सम्मान किया गया।

अन्त में देश के पूर्वी भाग से विशाख को चौथा विजयी व्यक्ति घोषित किया गया। राजा ने कहा, "पूर्व में खेती की स्थिति से हम सभी परिचित हैं। वह एक बंजर इलाका है जहाँ वर्षा बहुत कम होती है। उस क्षेत्र में अनाज पैदा करना एक असंभव सा काम है। परन्तु विशाख ने इसे संभव कर दिखाया है। चावल के खेतों को लगातार पानी की ज़रूरत होती है। फिर भी विशाख ने न सिर्फ़ सूखे प्रदेश में चावल पैदा किए बल्कि बड़ी तादाद में किए। मुझे लगता है कि ऐसे उभरते हुए नौजवान किसान का सम्मान करना एकदम उचित है।"

किसान विशाख ने दर्शकों को प्रणाम किया। तुरन्त भीड़ में से एक व्यक्ति खड़ा

हो गया। उसका नाम भैरवनाथ था। उसने कहा, ''महाराज आपकी आज्ञा हो तो मैं एक बात पर सभा का ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा।'' आनन्दसेन ने अपना सिर हिलाया, ''भैरव,एक राजा की यह जिम्मेदारी है कि वह अपनी प्रजा की राय का सम्मान करे, कहो।''

भैरव ने कहा, ''महाराज, वह जमीन का हिस्सा जिस पर विशाख ने खेती की, मेरा है। उसने मुझ से उसे दो साल के पट्टे पर लिया था। मेरी ज़मीन के उपजाऊ होने की वजह से ही वह इतनी अधिक पैदावार कर सका। इसलिए तर्कसंगत रूप से यह सफलता मेरी है क्योंकि वह ज़मीन मेरी है। पट्टे पर ज़मीन लेने वाले विशाख को इनाम देना क्या अनुचित नहीं है?'' भैरवनाथ ने प्रश्न किया।

''तुम्हारी ज़मीन उपजाऊ होगी, परन्तु वह तो विशाख ही था जिसने उसका उपयोग किया। तो क्या उसका सम्मान किया जाना उचित नहीं?'' राजा आनन्दसेन ने पूछा।

''महाराज, हम आपका निर्णय स्वीकार करेंगे। फिर भी मुझे लगता है कि आपका निर्णय सभी ज़मीन मालिकों के लिए ठीक नहीं है,'' भैरवनाथ ने कहा और बैठ गया।

राजा आनन्दसेन ने कुछ देर विचार

किया फिर अपने प्रधानमन्त्री से विचार-विमर्श करके कहा, ''भैरव तुमने जो कुछ कहा उसमें दम है। ''स्वर्ण भूमि'' पुरस्कार पाने के असली हकदार तुम ही हो। फिर भी इनाम की रकम विशाख को दी जायेगी।'' भैरवनाथ खड़ा होकर खुशी-खुशी बोला, ''मुझे हृदय से आपका निर्णय स्वीकार है। यही नहीं, आपके इनाम की रकम में मैं अपनी तरफ़ से पचास हज़ार स्वर्ण-मुद्राएँ और मिलाऊँगा।''

विशाख ने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया कि उसे राजा का निर्णय बुरा लगा। उसने सहर्ष इनाम की राशि ले ली। लेकिन लोगों को उस पर दया और भैरवनाथ पर क्रोध आया।

इसके बाद वेताल ने राजा विक्रम से

पूछा, "भैरवनाथ ने चालबाजी से पुरस्कार प्राप्त किया। इसलिए उसे लोगों की नज़र में गिरना पड़ा। राजा आनन्दसेन भी एक गरीब, मेहनती किसान के विरुद्ध निर्णय लेने का दोषी है। इतने बुद्धिमान राजा ने कैसे ऐसा असंगत निर्णय ले लिया? विशाख के यह अपमान सहने व कोई प्रतिक्रिया न देने का क्या कारण है? यदि तुम इन प्रश्नों के उत्तर जानकर भी चुप रहागे तो तुम्हारे सिर के सहस्त्रों टुकड़े हो जायेंगे।"

राजा विक्रम बोले, "वेताल, जैसा कि तुम समझते हो राजा आनन्दसेन का निर्णय असंगत नहीं था। भैरवनाथ की समस्या उसके अहम् की थी। उसे इस बात से ईर्ष्या हो रही थी कि उसकी ज़मीन का उपयोग करके कोई और अपनी पहचान बना रहा था। उसको पुरस्कार देने से न तो समाज में भैरवनाथ का रुतबा बढ़ेगा और न किसी तरह विशाख का अपमान होगा। विशाख की प्रशंसा पहले ही राज्यभर में फैल चुकी थीं। इसके लिये उसे किसी सम्मान की आवश्यकता नहीं थी। जबकि भैरवनाथ के अहम् को सन्तुष्ट कर देने से भविष्य में होने वाली समस्याओं पर विराम लग जाता। ज़मीन ख़रीदने के लिये विशाख की धन की आवश्यकता को भी राजा समझता था। इसीलिए उसने भैरवनाथ का सम्मान किया जबकि इनाम की राशि विशाख को दी। भैरवनाथ का अहम् सन्तुष्ट हुआ और उसने उत्साह में इनाम की राशि में अपनी तरफ से और धन मिला दिया। विशाख राजा का ध्येय समझ गया। विशाख को धन मिला और भैरवनाथ भी खुश हो गया क्या इससे आनन्दसेन की बुद्धिमानी नहीं झलकती?"

राजा विक्रम के इस प्रकार अपना मौन तोड़ते ही वेताल शव सहित अदृश्य होकर फिर पेड़ पर जा लटका।

- एस. श्रीनिवास

बड़ की गवाही

एक गाँव में सेठ नारायणदास नाम का एक धनी रहा करता था। वह एक दूर गाँव की ओर जा रहा था कि रास्ते में मटरू नाम का एक ग्रामवासी दिखाई दिया। उसने कहा, "सेठजी, घर ढह गया है। यदि जल्दी ठीक न कर लिया, तो मुझे और बच्चों को किसी पेड़ के नीचे खड़ा होना पड़ेगा। दो सौ रुपये दोगे तो गेहूँ कटते ही तुम्हारा रुपया तुमको वापस कर दूँगा।" नारायणदास नरम आदमी था। मटरू को इनकार न कर सका। उसने अपने बटुवे से दो सौ रुपये निकालकर दिये। मटरू ने यह ऋण निश्चित समय पर न चुकाया। एक फ़सल कटी। दूसरी भी कट गई।

एक बार सेठ ने मटरू से कहा, "क्यों भाई मटरू वह कर्ज़ चुकाया ही नहीं?"

"क्या कर्ज़?" मटरू ने कहा।

"उस साल, घर ठीक करने के लिए गरमियों में दो सौ रुपये जो लिये थे। तुम इस तरह बात कर रहे हो जैसे कुछ याद ही न हो।" सेठ ने कहा।

"अगर मैं भूल भी गया था, तुम्हारे पास तो दस्तावेज होगा। उसे भेज दो, मैं दे दूँगा।" मटरू ने कहा।

"तुमने तो कोई दस्तावेज़ लिखकर न दिया था। मैंने भी यह सोचकर कोई कागज़ न लिखवाया कि कर्ज़ जल्दी दे ही दोगे।" सेठ ने कहा।

"वाह, यह भी खूब है। भले ही

वी. सत्यनारायण

तुम धनी हो, क्या तुम मुझ पर ऐसे कर्ज़ भी थोप सकते हो जो मैंने नहीं लिए हैं? यह भी क्या भलमनसाहत है?'' मटरू ने गला फाड़कर कहा।

दो चार आदमी जमा हो गए। वे सेठ और मटरू से पूछताछ करने लगे।

सेठ ने जो कुछ गुज़रा था वह बताया। मटरू ने कहा कि वह सब झूठ था।

''जो भी कुछ है गाँव के मुखिया तय कर देंगे, चलो, उनके पास चलो।'' गाँववालों ने कहा।

''मुखिया ही सही, जो कुछ गुज़रा है, उसे सच सच कहने में मुझे क्या डर है?'' कहता मटरू सबसे आगे चला।

मुखिया बड़ा अक्लमन्द था। बड़ी सूझ-बूझ वाला और अनुभवी था। उसने जो कुछ सेठ को कहना था, सुना। मटरू की बात भी सुनी।

''मैं क्या कोई भिखारी हूँ? दो सौ रुपये का कर्ज़ करने की मुझे क्या पड़ी है? यह सच है कि मैंने फ़सल बेचकर अपना घर ठीक करवाया था। यदि सेठ ने मुझे कर्ज दिया ही था तो क्या वह बिना लिखा-पढ़ी के दे देता?'' मटरू ने पूछा।

मुखिया ने सेठ की ओर मुड़कर पूछा, ''आपने मटरू को रुपया कहाँ दिया था? रुपया देते समय क्या किसी ने नहीं देखा था?''

''वहाँ कौन था? एक बड़ के पेड़

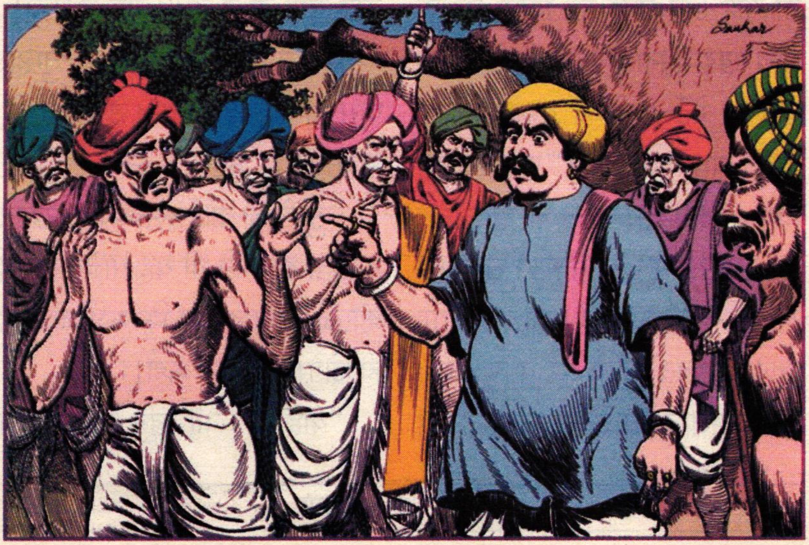

के नीचे बैठकर रुपये दिये थे।" सेठ ने कहा।

"तब क्या है। उस बड़ के पेड़ को गवाह बनाया जाय। आप अभी जाकर उस बड़ के पेड़ से कहिये कि मैंने बुलाया है।" मुखिया ने सेठ से कहा।

सेठ ने हिचकते हुए कहा, "क्या बड़ का पेड़ आकर गवाही देगा?"

"जब मैं बुला रहा हूँ, तो वह क्यों नहीं आयेगा? जाकर जल्दी कहो। यह बड़ से कह कर आप चले आना, हम सब आपका इन्तज़ार करते रहेंगे।" मुखिया ने सेठ को भेज दिया।

वहाँ जो लोग एकत्र हुए थे, मुखिया की बात सुनकर, अचरज में थे। मटरू की खुशी का ठिकाना न था। वह मन ही मन सोच रहा था कि मुखिया पगला गया था। कर्ज़ तो क्या साबित होगा।

थोड़ी देर तक, मुखिया चुप रहा। फिर उसने मटरू से पूछा, "क्यों मटरू, क्या सेठ अब तक वहाँ पहुँच गया होगा?"

"अरे अभी कैसे? वह तो ढाई मील दूर है। तिस पर अभी बारिश हुई है। रास्ते में बड़ा कीचड़ होगा। यही नहीं, वहाँ इतने बड़ के पेड़ हैं कि कौन सा बड़ का पेड़ा था, पहिचानना मुश्किल है," मटरू ने कहा।

मुखिया ने मटरू की पीठ पर लाठी मारकर कहा, "चोर कहीं का, तुम यह भी जानते हो कि किस पेड़ के नीचे रुपए दिये थे।"

मुखिया की सूझबूझ पर सब चकित थे। मटरू मान गया कि उसने कर्ज़ लिया था। उसने चुका भी दिया। मटरू को रुपए तो देने ही पड़े, शर्म के मारे वह फिर कभी सर उठाकर गाँव में न चल सका।

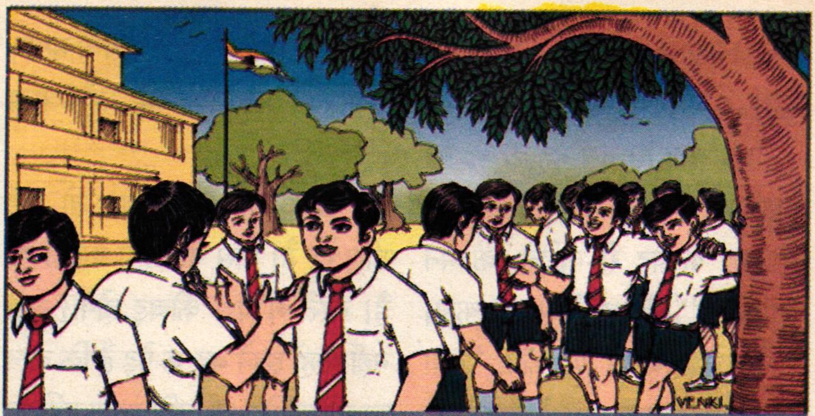

दिव्य उपवन

गर्मी की छुट्टियों के बाद वह स्कूल खुलने का पहला दिन था। बासना कस्बे के शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र अपनी गर्मी की छुट्टियों के विषय में बड़े उत्साहित होकर बातें कर रहे थे।

रवि ने पूछा, "प्रकाश, तुम छुट्टियों में कहाँ गए थे? तुमने कैसे समय बिताया?"

"हम दिल्ली गए थे। मेरे डैडी के बड़े भाई वहाँ रहते हैं। मैंने लाल किला देखा। हमने आगरा जाकर ताजमहल भी देखा। इन छुट्टियों में हमने खूब मजे किये," प्रकाश ने कहा।

"रवि, तुम्हारा क्या रहा?" रामू ने पूछा। "हम अपनी दादी के घर गए थे," रवि ने उत्तर दिया, "गर्मी की छुट्टियाँ कितनी जल्दी बीत गईं," रवि बोला। जल्दी ही कुछ और बच्चे, आदित्य, राजेश, शेखर अपनी अपनी छुट्टियों के बारे में बताने लगे। भास्कर सब की सुन रहा था परन्तु स्वयं कुछ नहीं बोल रहा था।

यह देखकर आदित्य ने उससे पूछा, "भास्कर, क्या बात है? हम सब इतने चहकते हुए अपनी अपनी छुट्टियों के बारे में बता रहे हैं, पर तुम इतने चुप हो। तुम छुट्टियों में कहाँ गए थे?"

भास्कर ने उत्तर दिया, "हम कहीं नहीं गए। हम सब भी मैसूर जाने ही वाले थे परन्तु जिस दिन हम निकलने वाले थे उसी दिन मेरी छोटी बहन बीमार पड़ गई। उसे डेंगू बुखार हो गया था। हमें उसको अस्पताल में भर्ती करना पड़ा। मेरी बहन अब भी बहुत कमज़ोर है। आज वह स्कूल नहीं आई है। डॉक्टरों ने उसे कुछ दिन और विश्राम करने की सलाह दी है।

वाय. सुवर्णकला

मेरे माता-पिता को बहुत चिन्ता हो रही थी। मेरे डैडी कह रहे थे कि उसके इलाज में भी बहुत पैसा खर्च हुआ था।'' भास्कर की आँखें आँसुओं से धुंधली हो गईं। सब को उसके लिए बहुत दुख हुआ। वे उसे खुश करने का प्रयत्न करने लगे।

''हमने पढ़ा था न कि डेंगू बुखार मच्छरों से होता है?'' शेखर ने पूछा।

''डेंगू और मलेरिया मच्छरों से ही होते हैं,'' राजेश ने कहा। ''यदि हम अपने आसपास सफाई रखें, तो हम मच्छर मक्खियों को दूर कर सकते हैं। हमें अपने आसपास के वातावरण को साफ रखने की कोशिश करना चाहिए। स्वास्थ्य ही धन है, जैसा कि कहा जाता है'' आदित्य बोला।

तभी स्कूल की घंटी बजी। सब बच्चे प्रार्थना-सभा के बाद अपनी अपनी कक्षा में गए। अगले दिन, स्कूल के बाद सभी बच्चे स्कूल के मैदान में इकट्ठे हुए।

''प्रिय भास्कर, तुम्हारी छोटी बहन अब कैसी है?'' बच्चों ने पूछा। ''ठीक है। धीरे धीरे वह अच्छी हो रही है,'' भास्कर ने कहा।

आदित्य ने कहा, ''दोस्तों, मुझे तुम सब से कुछ कहना है। मैंने ये छुट्टियाँ अपने चाचा के साथ अमेरिका में बिताईं। अमेरिका से लौट कर मैं अपनी यात्रा के सब अनुभव तुम सब के साथ बाँटना

चाहता था। मैं बड़ी बेसब्री से स्कूल फिर से खुलने की प्रतीक्षा कर रहा था।

मेरे चाचा अमेरिका में हमें उन सब स्थानों पर ले गए जो देखने लायक हैं। अभी तक हम जिन स्थानों के बारे में केवल किताबों में पढ़ते थे उनको आँखों से देखना बहुत अच्छा लगा। मैं एक महीने वहाँ रहा। वहाँ रहते हुए और उन दर्शनीय स्थानों को देखते हुए मैंने इस बात पर गौर किया कि वे लोग अपने स्थानों को कितना साफ-सुथरा रखते हैं।''

''अमेरिका को देखने में जितना आकर्षण है उतना ही यह देखना भी कि वे सफाई का कितना ध्यान रखते हैं।''

''हमारे घरों से अधिक साफ तो उनकी सड़कें होती हैं। उन चौड़ी सड़कों

पर गन्दगी का नामोनिशान नहीं दिखता। कोई सड़कों पर थूकता नहीं है। वे सड़कों के किनारे कचरा नहीं फेंकते। हरेक व्यक्ति कचरा डालने के लिए विशेष रूप से रखे गए डिब्बों में ही कूड़ा डालता है।"

रवि बोला, "हमारे देश में भी बहुत से दर्शनीय स्थान हैं। वास्तव में सभी की अपनी अपनी विशेषताएँ होती हैं। लेकिन हम जब रेल से सफ़र करते हैं तो कागज़ और भोजन की वस्तुओं को लपेटने के कागज़ आदि यूँ ही खिड़की से बाहर फेंक देते हैं। वे हवा से पीछे की ओर उड़कर हमारे चेहरे से टकराते हैं। कभी कभी लोग थूक देते हैं और वह खिड़की के पास बैठे व्यक्ति के मुँह पर गिरता है।"

आदित्य कहता गया, "मैंने वहाँ बस और रेल दोनों में किसी तरह की गन्दगी नहीं दिखी। चाहे कोई छोटा तालाब हो या झील, वे उसके आसपास खूब सफाई रखते हैं।"

"प्रिय मित्रों, हमें आज से ही अपना वातावरण साफ रखने के लिए कदम उठाना चाहिए। दूसरों से अपनी तुलना करके अपने में सुधार लाना अच्छी बात है। हमें यह निश्चित करना है कि कोई भी भास्कर की बहन की तरह बीमार न पड़े। अपने सीमित साधनों के भीतर अपना वातवरण साफ़ रखने के लिए हमें अधिक से अधिक प्रयत्न करना है। यदि हम मिलकर काम करें तो ऐसा कुछ नहीं है जो प्राप्त न किया जा सके।"

इस प्रण को पूर्ण करने के लिए बच्चों ने आपस में हाथ मिलाए। जितने भी बच्चे प्रण करने में शामिल थे उन्होंने मिल कर एक योजना बनाई। सबसे पहले उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से स्कूल परिसर में सफाई की।

बच्चों ने अपने आप को अलग-अलग टीमों में बाँटा और छुट्टियों में शहर में घूम-घूम कर लोगों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे सड़कों पर थूकना छोड़ दें और कचरे के डिब्बों में ही कचरा डालें। वे अपने साथ इश्तिहार ले गए और लोगों को समझाया कि किस प्रकार हमारे शरीर के कीटाणु थूक आदि के द्वारा दूसरों के

शरीर में प्रविष्ट होकर उन्हें बीमार बनाते हैं।

उन्होंने प्लास्टिक के बैग से होने वाले नुकसानों के बारे में भी उन्हें समझाया और उन्हें काम में न लाने की सलाह दी। शुरू में हर कोई उन पर हँसा और उन्हें चिढ़ाया। परन्तु धीरे-धीरे लोगों को बच्चों द्वारा सफाई के प्रति व्यक्त की गई गंभीरता और उससे होने वाले लाभ समझ में आने लगे। कुछ और बच्चे इस में शामिल हो गये और यह बच्चों का पर्यावरण के लिए अभियान बन गया।

इससे उस छोटे से शहर के लोगों के मन में भी परिवर्तन आया। वे गाँव की झील के आसपास इकट्ठा हुए कचरे को उठाकर उसे उचित जगह पर डालने लगे। वे स्कूल के चारों ओर, सड़कों के दोनों ओर जहाँ भी उचित जगह मिलती वहाँ छायादार पौधे लगाने लगे। वे स्कूल के वार्षिकोत्सव में छोटे नाटक करते जिनसे बच्चों को पर्यावरण को साफ रखने का महत्व समझ में आए।

आदित्य और उसके मित्रों ने यह फैसला किया कि वे स्कूल के बाद कॉलेज और अपना गाँव छोड़ कर दूसरे शहरों में जाने पर भी इस अभियान को चालू रखेंगे। जब फिर से उन्होंने स्कूल के वार्षिकोत्सव में भाग लिया तो जिलाधीश ने हरा-भरा वातावरण कार्यक्रम की सफलता के भागीदार विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र और इनाम दिए।

फिर उन्होंने विद्यार्थियों को सम्बोधित किया और कहा कि उन्होंने अपने क्षेत्र को सुन्दर नन्दनवन में परिणत कर दिया है। उन्होंने कहा कि उस स्कूल और उस गाँव ने पूरे जिले ही नहीं बल्कि राज्य के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया है। उनका गाँव धीरे धीरे स्वच्छ और हरा-भरा बन रहा था, उन नौजवान विद्यार्थियों के अथक प्रयास को धन्यवाद।

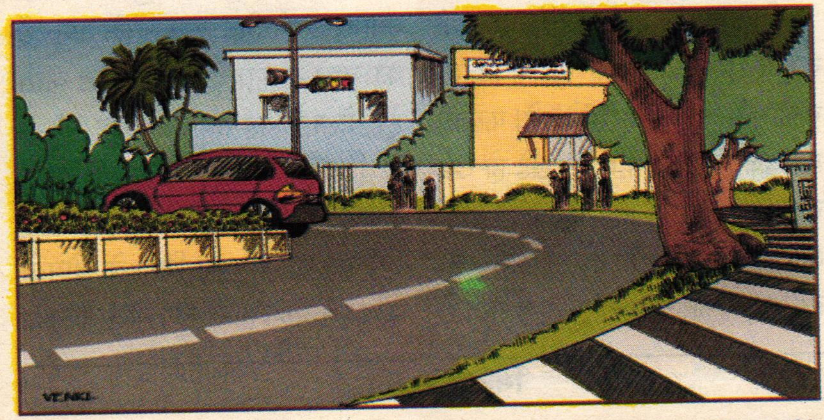

पंचतंत्र

बहेलिये के चले जाने पर चित्रग्रीव ने अपने अनुचरों से कहा, "दुष्ट बहेलिया चला गया है। अब हम निश्चिंत होकर महिलारूप्य नगर को चले जायेंगे। उस नगर की उत्तरी दिशा में हिरण्यक नामक मेरा एक मित्र है जो चूहा है। वह हमारे जाल को काटकर हमें मुक्त कर देगा। विपत्ति के समय मित्र ही काम आते हैं, दूसरे तो सहानुभूति के दो शब्द भी नहीं कहते।"

चित्रग्रीव के मार्ग दिखाने पर सभी कबूतर हिरण्यक नामक चूहे के निवास वाले सुरंग तक उड़कर चले गये। कबूतरों का राजा सुरंग के द्वार पर खड़े हो उच्च स्वर में बोला, "हे मित्र हिरण्यक! शीघ्र आ जाओ, मैं बड़ी विपत्ति में फँसा हुआ हूँ।" यह पुकार सुनकर हिरण्यक सुरंग में से ही चिल्ला उठा, "तुम कौन हो? यहाँ पर क्यों आये हो? तुम किस प्रकार की विपत्ति में फँसे हुए हो? सारी बातें मुझे सविस्तार सुना दो।"

इस पर चित्रग्रीव ने यों कहा: "मैं कबूतरों का राजा चित्रग्रीव हूँ। तुम्हारा मित्र हूँ। जल्दी आ जाओ। तुम्हारी सहायता की जरूरत है।"

ये शब्द सुनकर हिरण्यक अपने मित्र को देखने की खुशी में सुरंग से बाहर आया। अपने मित्र तथा उसके अनुचरों को जाल में फँसे देख दुख प्रकट करते हुए बोला, "यह सब कैसे हुआ?"

चित्रग्रीव ने कहा, "क्या तुम समझ न सके? पूर्व जन्म में मैंने जो पाप किये, उसी का यह फल है! जिह्वा के लोभ में पड़कर मैं यह विपत्ति खुद मोल ले चुका

मित्र-सम्प्राप्ति-२

हूँ। तुम शीघ्र हमको इन बंधनों से मुक्त कर दो।''

इस पर हिरण्यक ने कहा, ''पक्षी सौ मील की दूरी पर स्थित अपने आहार को देख सकता है, मगर आँखों के सामने स्थित जाल को देख नहीं पाता। फिर भी भाग्य ज्यादा प्रबल होता है, मैं इसी निर्णय पर पहुँचा हूँ। इसका तुम क्या जवाब देते हो? अत्यन्त बलवान सूर्य तथा चन्द्रमा क्या राहू के शिकार नहीं होते? मत्त हाथी, जहरीले साँप, हवा में उड़नेवाले पक्षी क्या मानव के हाथ नहीं पड़ जाते? चाहे जहाँ जिस रूप में ज़िन्दगी काटते हों, मृत्यु समस्त प्राणियों का पीछा करती ही है।'' यों कहकर हिरण्यक पक्षियों के जाल को काटने लगा।

इस पर चित्रग्रीव ने हिरण्यक से कहा- ''दोस्त! तुम पहले मेरे बंधनों को न काटो, मेरे अनुचरों को मुक्त करके तब मेरे बंधन काट दो।''

''ये बातें बेतुकी हैं। मालिक के बाद ही अनुचरों की बारी आती है।'' हिरण्यक ने कहा।

''दोस्त! ऐसा मत कहो! बेचारे ये सब मुझ पर आधारित अभागे हैं। अपने परिवार को छोड़ मेरे साथ आये हुए हैं। क्या इनके प्रति मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं है? राजा चाहे जैसा भी गरीब क्यों

न हो, अपने सेवकों के प्रति यदि दया रखता है तो वे उसका साथ नहीं छोड़ते। अलावा इसके इतने सारे बंधनों को काटते तुम्हारे दाँत टूट सकते हैं, अथवा मेरे अनुचरों के मुक्त होने के पहले ही वह शिकारी बहेलिया पुनः लौट सकता है। ऐसी हालत में मुझे नरक की प्राप्ति होगी। अपने अनुचरों के कठिनाइयों में रहते जो राजा सुख भोगता है, वह मरने पर नरक में चला जाता है।'' चित्रग्रीव ने समझाया।

इसके उत्तर में हिरण्यक ने यों कहा: ''मित्र! मैं राजाओं के कर्तव्य जानता हूँ। तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए ही मैंने ये शब्द कहे। तुम परीक्षा में सफल निकले। तुम और अनेक हजारों कबूतरों के राजा बनने योग्य हो। अपने अनुचरों के प्रति

दया रखनेवाला राजा तीनों लोकों पर शासन कर सकता है। मैं तुम्हारे अनुचरों को इन बंधनों से मुक्त कर देता हूँ।''

यों कहकर हिरण्यक ने सभी कबूतरों के बंधन काट दिये। तब चित्रग्रीव से कहा, ''दोस्त! अब तुम लोग स्वेच्छा पूर्वक अपने स्थानों को लौट सकते हो। फिर कभी कोई विपदा आ गई तो मेरे पास आने में कोई संकोच मत करो।'' ये शब्द कहते हिरण्यक अपनी सुरंग में चला गया।

इसके बाद चित्रग्रीव अपने अनुचरों के साथ उड़कर चला गया। इस दृश्य को स्वयं अपनी आँखों से देख लघुपतनक नामक कौआ अपने मन में यों सोचने लगा, ''ओह! हिरण्यक कैसा भद्र स्वभाव का है। कैसा विवेकशील है। क्या मैं अपने प्रारब्ध पर अकेले विजय प्राप्त कर सकता हूँ? मैं भी इस चूहे के साथ मैत्री करूँगा। अपार सागर भी तो अपने मित्र चन्द्रमा की सहायता से ही ऊपर उठता है।''

यों सोचकर वह हिरण्यक की सुरंग के पास पहुँचा। और चित्रग्रीव के स्वर में पुकारा, ''अबे हिरण्यक! सुनो तो सही।'' यह पुकार सुनते ही हिरण्यक को संदेह हुआ कि कहीं उसने कुछ बंधन छोड़ न दिये हों, सुरंग में से ही पूछा, ''कौन है?''

''मैं लघुपतनक नामक कौआ हूँ।'' कौए ने जवाब दिया। ये बातें सुनते ही हिरण्यक अपनी सुरंग में और दूर चला गया और बोला, ''तुम यहाँ से तुरन्त चले जाओ!''

कौए ने पूछा, ''मुझे क्यों दुत्कारते हो? मैं जरूरी काम से तुम्हारे पास आया हूँ।''

''तुम्हारे तथा मेरे बीच मैत्री हितकर नहीं है!'' हिरण्यक ने जवाब दिया। ***(क्रमशः)***

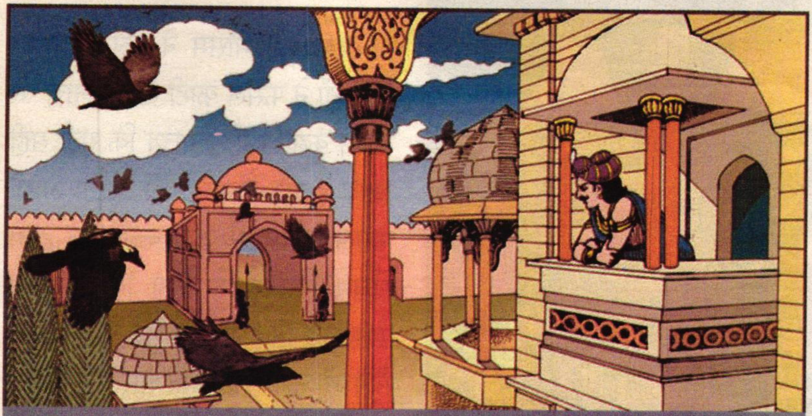

कुमारवर्मा की विचारोत्तेजकता

एक बार कलिंग राज्य पर वीरवर्मा नामक राजा राज्य करता था। अचानक उसकी मृत्यु हो जाने के कारण उसके पुत्र राजकुमार कुमारवर्मा को कलिंग का राजा बना दिया गया। कुमारवर्मा को राई का पहाड़ बनाने और गुस्से के अतिरेक में नाटक करने की आदत थी। एक बार राजकीय बगीचे से महल को लौटते समय दुर्घटनावश कुमारवर्मा का पैर एक साँप पर पड़ गया। साँप ने फुंफकार कर उसे काटने का प्रयत्न किया। राजा को भागना पड़ा। इस घटना से राजा को बहुत अपमान महसूस हुआ।

राज्य में जितने भी साँप थे, उसने सबको पकड़कर मार डालने का हुक्म दिया। हज़ारों साँप मारकर राजा के सामने लाए गये। तब कुमारवर्मा सन्तुष्ट हुआ।

दूसरे दिन पौ फ़टते ही कौओं की काँव काँव से राजा कुमारवर्मा की गहरी नींद में व्यवधान पड़ा। नींद खराब करने के लिए राजा कौओं पर नाराज़ हुआ। उसने अपने सैनिकों को हुक्म दिया कि राज्य में कोई कौआ उड़ता हुआ नहीं दिखना चाहिए। क्योंकि और कोई रास्ता नहीं था अतः सैनिकों ने ढेर सारे कौओं को मार डाला। तब कुमारवर्मा शान्त हो गया।

एक बार जब राजा नगर-भ्रमण पर निकला तो सड़क के कुछ कुत्ते उस पर भौंकने लगे। राजा को बहुत गुस्सा आया। तब उसने हुक्म दिया कि राज्य के सब कुत्ते मार दिये जायें। इसलिए कुत्तों को भी मार डाला गया। राज्य के लोगों को राजा के ये बिना सोचे समझे किये गये

बी.वी.पटनायक

कार्य उचित नहीं लगे परन्तु उनमें बोलने का साहस नहीं था। दिन बीतते गए।

जल्दी ही डाकुओं का गिरोह घरों पर डाका डालने लगा। जब डकैतियाँ बढ़ने लगीं तो लोग राजा के पास शिकायतें लेकर जाने लगे। राजा ने रात को शहर की निगरानी के लिए और अधिक पहरेदार नियुक्त किये। बढ़ाये हुए सिपाहियों के वेतन के बोझ से राजकोष पर दबाव बढ़ा।

फिर बारिश का मौसम आ गया। राज्य में तेजी से छूत की बीमारियाँ फैलने लगीं। लोगों ने शिकायत की और राजा ने चिकित्सा सेवाओं को बढ़ा दिया। इससे राजकोष पर और भार बढ़ा। फिर भी स्थिति में सन्तोषप्रद सुधार नहीं हुआ।

जल्दी ही मौसम ने पलटा खाया। किसानों ने फसल काटी और अनाज घर लाये। कुमारवर्मा ने सोचा कि यही सही समय है और किसानों को अपनी आधी फसल खज़ाने में जमा कराने का हुक्म दिया। किसानों ने कहा कि इस बार फ़सल उम्मीद से कम हुई है। हर बात बिगड़ती नज़र आई और शासन ने स्थिति पर नियन्त्रण खो दिया। गरीबी फैली और विद्रोह होने लगे। राज्य में कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगड़ती गई।

कुमारवर्मा ने अपने मन्त्रियों की आपात्कालीन बैठक बुलाई। उसने उनसे कहा, ''हमारे राज्य पर कोई दुर्भाग्य की छाया मँडरा रही है। अपने राज्य की समृद्धि और शान्ति वापस लाने के लिए हमें पूजा-पाठ कराना चाहिए।''

एक वरिष्ठ मन्त्री ने हिम्मत जुटा कर कहा, ''महाराज, मैं यह बात स्थिति पर गहन विचार करने के बाद कह रहा हूँ। कहा जाता है कि सच बोलने से लोग हमारे शत्रु बन जाते हैं। परन्तु मैं सच बोलूँगा चाहे आप नाराज़ हों। यदि मेरी कही हुई बातें सुनने के बाद आप ऐसा तय करें, तो मैं फाँसी पर चढ़ने के लिए तैयार हूँ। परन्तु कृपया मेरी बात अवश्य सुनें चाहे उसके बाद आप मुझे सज़ा दे दें।'' उसने कहना ज़ारी रखा, ''पशु-पक्षी मनुष्य को जीवित रहने में मदद

करते हैं। हमसे बदले में बिना कुछ चाहे वे हमारी मदद करते हैं। परन्तु आपने कई पशु-पक्षियों को मरवा कर पारिस्थितिकीय सन्तुलन बिगाड़ दिया।''

''गली के कुत्ते यहाँ वहाँ पड़ी हुई चीज़ें खाते और रात को घरों की रक्षा करते। परन्तु आपने जरा सी बात पर उन्हें मरवा दिया। इससे चोरों का काम आसान हो गया। फिर आपको नगर की रक्षा के लिए अतिरिक्त रक्षकों की नियुक्ति कर भारी पारिश्रमिक देना पड़ा, और उससे राज-कोष पर बोझ बढ़ा।''

''एक कौआ एक सफ़ाई-कर्मचारी की तरह होता है और शहर को साफ़ रखने में लोगों से अधिक अच्छा काम करता है। जूठन से लेकर मरे हुए जानवरों और पक्षियों के शरीरों तक वह कुछ भी खा सकता है। अपनी सेवा के बदले वह हम से कोई आशा नहीं रखता। परन्तु वे आपकी नींद खराब करते थे सिर्फ़ इसलिए आपने उन्हें मरवा दिया। उसके बाद से शहर उतना साफ़ नहीं रहा और बीमारियों को बढ़ावा मिला। उनकी रोकथाम से राजकोष का खर्च और बढ़ गया।''

फिर साँपों का किस्सा। जब उन्हें मरवाया गया तो शहर में चूहों का प्रकोप बढ़ गया और वे फसलें चट करने लगे। परिणाम-स्वरूप अन्न की कमी हुई। किसान हमेशा की तरह कर चुकाने लायक नहीं हैं। यदि साँप होते तो वे चूहों को खाकर फ़सलों को बचा लेते। अधिक गरीबी के लिए यह एक अप्रत्यक्ष कारण बन गया।'' मन्त्री ने कहा।

अब कुमारवर्मा की समझ में आ गया कि उसका तर्कहीन गुस्सा ही सारे फ़साद की जड़ था। वह समझ गया कि पशु-पक्षी हमारे जीवन में क्या स्थान रखते हैं और मनुष्य की जिम्मेदारी है कि उनकी रक्षा करे। उसे पश्चाताप हुआ और वह सही नीतियाँ अपनाने लगा।

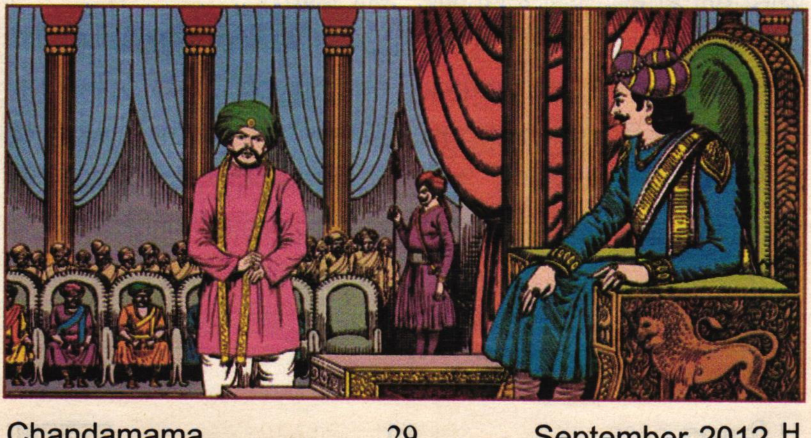

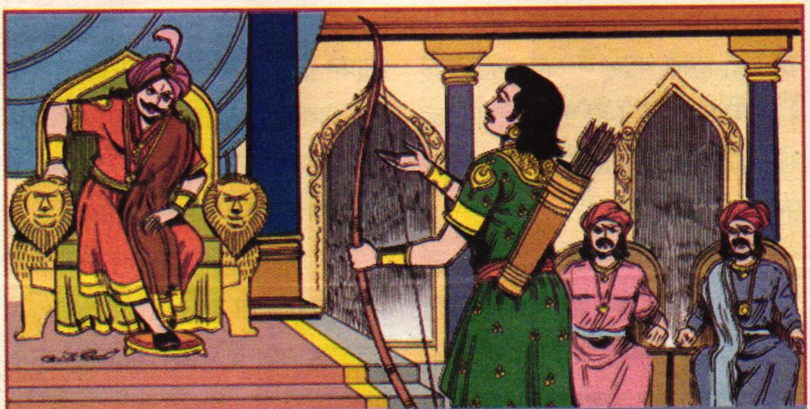

प्रधानमन्त्री की चतुराईपूर्ण योजना

कलिंग का राजा कात्यायन प्रशंसा का भूखा था। यदि कोई उससे मिलने आता और उसकी ज़रा सी भी तारीफ़ कर देता तो उसे वह मुँह-माँगी वस्तु दे देता।

एक दिन राजा कात्यायन दरबार में था तब ही एक अजनबी वहाँ आ गया और बोला, ''महाराज, मैं एक धनुर्धर हूँ। मैंने कई देशों में जा जाकर अपनी कला का प्रदर्शन किया है। मैं आपके पास आया हूँ क्योंकि मैंने आपकी उदारता की प्रशंसा सुनी है। मुझे आशा है कि आप मेरी एक इच्छा पूरी करेंगे जो कि बचपन से मेरी अभिलाषा रही है।'' कात्यायन जो कि अपनी तारीफ़ सुनकर हमेशा खुश हो जाता था, आगन्तुक से बोला, ''मुझे बताओ कि तुम्हारी क्या इच्छा है, मैं उसे पूरी करूँगा।''

''महाराज, वास्तव में तो वह ज़रा सी बात है। बहुत लम्बे समय से मेरी यह अभिलाषा बनी रही कि मुझे वह अधिकार और ऐशो आराम मिले जो एक राजा भोगता है। यदि एक महीने के लिए आप मुझे अपने सिंहासन पर बैठने दें तो, मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा।''

धनुर्धर की इस अप्रत्याशित माँग से सभी सभासद् हक्के-बक्के रह गए। राजा कात्यायन अब मुश्किल में फँस गया और सहारे के लिए उसने प्रधानमन्त्री की ओर देखा।

राजा का संकेत पाकर प्रधानमन्त्री ने धनुर्धर से कहा, ''राजा बनने के लिए व्यक्ति को उस लायक होना चाहिये। कम से कम पहले धनुर्विद्या में ही हमें अपनी योग्यता दिखाओ।'' ''निश्चित ही, जैसा आप कहें'' उसने कहा। ''कल महल के मैदान में तुम्हारी विद्या की परीक्षा होगी।''

जे. मार्टिन फिनले

प्रधानमन्त्री ने कहा और उसे भेज दिया। अगले दिन परीक्षा देखने के लिए सभी मैदान में एकत्रित हुए। प्रधानमन्त्री ने कहा, ''हमारे द्वारा बताये हुए लक्ष्य को तुम्हें लगातार तीन बार सफलता पूर्वक भेदना होगा।''

''मैं तैयार हूँ,'' धनुर्धर बोला। प्रधानमन्त्री ने धनुर्धर से लगभग सौ गज़ की दूरी पर एक लड़के को सिर पर अमरूद रख कर खड़ा कर दिया। फिर उसने धनुर्धर को अमरूद को भेदने के लिए कहा। धनुर्धर ने बिना किसी परेशानी के निशाना लगा दिया। फिर प्रधानमन्त्री ने एक दूसरे लड़के को ठीक उसी जगह खड़ा करके उसके सिर पर अमरूद रखा। धनुर्धर ने इस बार भी बिना प्रयत्न सही निशाना लगाया और ऐसे जताने लगा जैसे यह तो कुछ न था।

प्रधानमन्त्री ने फिर उसी स्थान पर एक लड़के को खड़ा किया और उसके सिर पर फल रखा। किन्तु इस बार धनुर्धर ने निराशा भरी आवाज में कहा, ''मैं इस परीक्षा से हट रहा हूँ,'' और वहाँ से चल दिया।

परीक्षा देखने के लिए इकट्ठा हुए लोग समझ न पाए कि धनुर्धर पीछे क्यों हट गया।

प्रधानमन्त्री ने मुस्कुराते हुए कहा, ''महाराज, पहले दो लड़के धनुर्धर के सम्बन्धी नहीं थे। अतः वह लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित कर सका। तीसरा लड़का स्वयं उसका बेटा था। इस विचार ने कि यदि लक्ष्य चूक जाता तो उसके बेटे का क्या होता, उसे विचलित कर दिया।''

राजा कात्यायन ने चतुराई से स्थिति को सम्भाल लेने के लिए प्रधानमन्त्री की तारीफ़ की और उसे इनाम दिया। राजा ने भी प्रशंसा सुनकर आवेश में न आ जाने का सबक सीखा। उसने लोगों की उन्हीं इच्छाओं की पूर्ति करना शुरू किया जो जायज़ होती थीं।

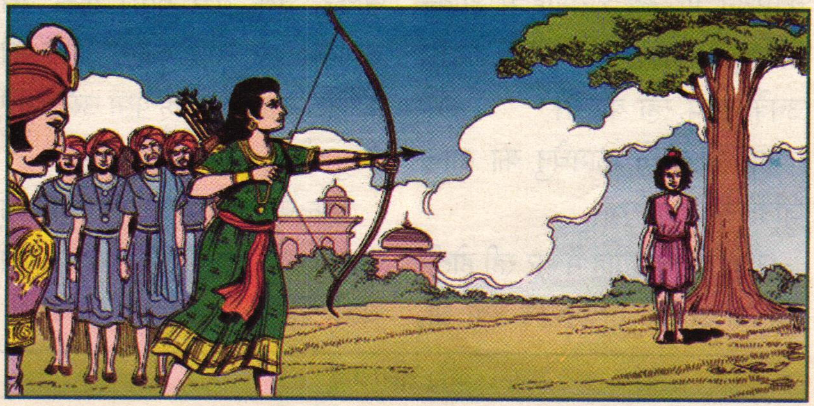

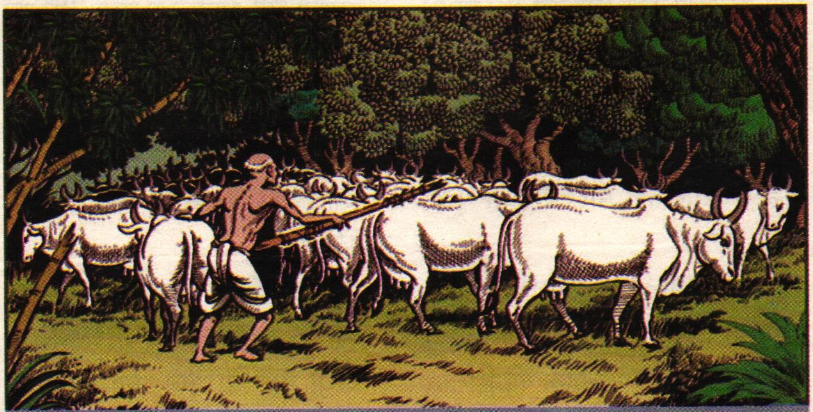

महिमावाली बेहंगी

हिमालय पर्वत में मानसरोवर के पास चरागाह में गाँववाले अपनी गौवें चराया करते। चरवाहे जब सवेरे शाम गौवों की गिनती करते, तो गौवों की संख्या ठीक रहती। यदि कोई दुपहर को गिनता, तो ऐसा लगता, जैसे एक गौ अधिक हो।

इसका एक कारण था। प्रति दिन कामधेनु भी उस चरागाह में आकर बाकी और गौवों के साथ चरा करती। उनके साथ रहा करती।

पर किसी ने कामधेनु का आना जाना नहीं देखा था।

गौवें जब चरागाह में चर रही होतीं, तब जो अधिक गौ दिखाई देती थी, वह कामधेनु ही थी, यह किसी को न मालूम था।

वहाँ पास में, एक गाँव में एक बूढ़ा रहा करता था। वह रोज कन्धे पर बेहंगी रखकर, जंगल में जाया करता। वह वहाँ सूखी लकड़ियों को चुनकर इकट्ठा कर लेता और गट्ठर बाँधकर बेहंगी के दोनों तरफ रखकर, गाँव ले जाकर, उन्हें बेच देता। कुछ पैसे कमाता। इस तरह गुज़ारा करने की कोशिश करता, पर वह पैसा उस बेचारे के गुज़ारे के लिए काफ़ी न था।

एक बार वह जंगल की ओर जा रहा था, तो उसको रास्ते में कुछ गौवें चरती दिखाई दीं।

जी. नागराजु

वह बेहंगी से उनको हाँकता, रास्ता बनाता चला गया। इस प्रकार उसके जाने से कामधेनु के कुछ बाल उसकी पुरानी टूटी-फूटी बेहंगी में अटक गये। किन्तु उसे कुछ मालूम न हुआ।

वह बूढ़ा न जानता था कि उसने कामधेनु को हाँका था, या उसके बाल उसकी बेहंगी में फंस गये थे।

परन्तु जब उसने रोज की तरह लकड़ियाँ चुनकर, गट्ठर बाँधकर बेहंगी उठाई, तो उस में कौवे के पर जितना भी भार न था।

बूढ़े को आश्चर्य हुआ, उसने कुछ और लकड़ियाँ काटकर, बेहंगी के दोनों ओर रख लीं। बेहंगी उठा कर देखी। तब भी भार पंखों जितना ही था।

बूढ़े को आश्चर्य तो था ही, तब उसे आनन्द भी हुआ। उसने अपने कन्धे जितने ऊँचे बड़े-बड़े लकड़ियों के गट्ठर बनाये। उनके आगे पीछे बेहंगी लगाकर, वह उनको ढोकर गाँव ले गया।

लकड़ियाँ जब बेचीं तो बूढ़े को रोज़ की अपेक्षा चार गुनी आय हुई। उसके घर का खर्च तो पूरा हुआ ही उसके पास कुछ पैसे बच भी गये।

उसके बाद वह बूढ़ा उस बेहंगी की दया के कारण ढेर सारी लकड़ियाँ लाता और उन्हें लाकर बेचता। वह सुख से रहने लगा।

एक दिन बूढ़ा जब बेहंगी लेकर आ रहा था, तो एक धनी सामने से आया।

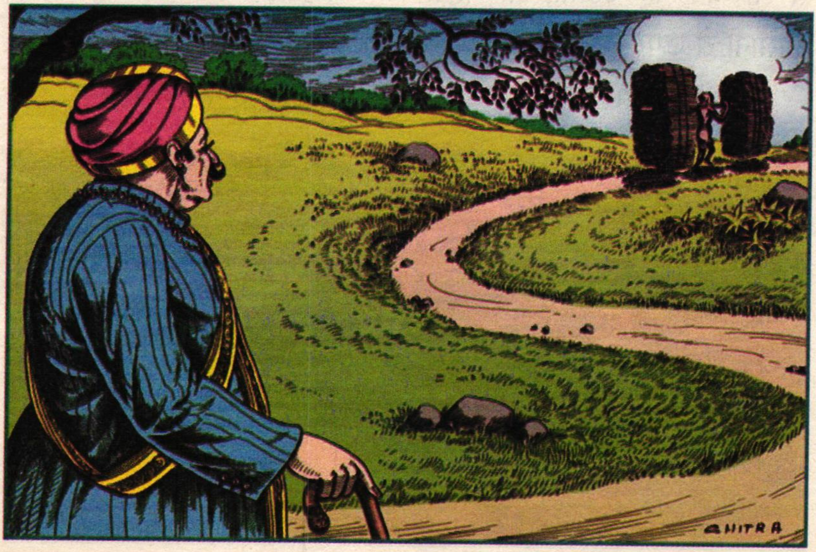

दूर से उसे आते देख उसने सोचा, "जो इतना भार ढो रहा है वह कितना बलवान होगा।" जब उसने उसको पास आकर देखा, तो बेहंगी ढोनेवाला बूढ़ा निकला। उसका आश्चर्य और बढ़ा।

"अरे बूढ़े! इस उम्र में भी इतना भार ढो रहे हो?" धनी ने पूछा।

"इसमें मेरी खूबी क्या है, क्या इसका चौथाई हिस्सा भी मैं ढो पाऊँगा? यह सब तो इस बेहंगी की दया है महाराज।" बूढ़े ने विनयपूर्वक कहा।

धनी को विश्वास नहीं हुआ। उसने स्वयं बेहंगी उठाकर देखी। एक अंगुली से भी जब वह उठाता, तो बेहंगी आसानी से ऊपर उठती।

"बूढ़े, जो कहार हमारे लिए पानी लाता है, वह ढोते-ढोते मर रहा है। क्या यह बेहंगी दोगे? मैं तुम्हें तीन सौ मोहरें दूँगा।" धनी ने कहा।

पहले तो बूढ़ा देने के लिए नहीं माना। फिर वह मान गया। तीन सौ मुहरों से वह जिन्दगी-भर आराम से रह सकता था। उसने गाँव में लकड़ियाँ बेच दी और बेहंगी धनी को बेचकर, उससे तुरन्त मुहरें वसूल कर लीं। धनी जब बेहंगी घर ले जा रहा था, तो उसे वह बहुत पुरानी दिखाई दी।

कहीं कहीं तो वह छिलका छिलका हो रही थी। इसलिए रास्ते में उसने बढ़ई से उस पर रेती करवाई। उसे साफ़-सुथरा बनाकर घर ले गया।

परन्तु बढ़ई की रेती लगते ही कामधेनु का बाल उसमें से निकल गया और वह मामूली बेहंगी बन गई।

जल राक्षस

किसी दूर देश में, एक झील के पास एक झोंपड़ी में, एक गरीब किसान रहा करता था। उस किसान के तीन लड़के थे। माँ-बाप के गुज़र जाने के बाद, दोनों बड़े भाइयों ने जो कुछ ज़मीन-जायदाद थी, उसे खा-पीकर खत्म कर दी।

"यह घर मेरा है।" बड़े ने कहा।

"घर में जो कुछ सामान है, वह मेरा है," मंझले ने कहा। "और मेरा क्या है?" तीसरे ने पूछा।

"तेरा? घर और घर के सामान के अलावा, अगर कुछ हो, तो ढूँढ़कर ले लेना।" दोनों बड़े भाइयों ने कहा।

तीसरे ने सारा घर देख-दाख कर कोने में ताड़ के रेशे का एक गट्ठर देखा। भाइयों ने कहा कि वह उसे ले सकता था। ताड़ के रेशे को कन्धे पर रखकर, वह झील के किनारे गया।

वह झील के किनारे के एक पेड़ के सहारे बैठकर सोच रहा था कि रोज़ी रोटी के लिए क्या किया जाय कि उसे इतने में एक गिलहरी दिखाई दी।

उसने सोचा कि ताड़ के रेशे से, रस्सी बनाऊँगा, रस्सी के फन्दे, फिर उनसे तरह तरह के जानवर पकड़कर और उनके चमड़े बेचकर गुज़ारा किया जा सकता है। उसने झट एक फन्दा बनाकर गिलहरी को पकड़ लिया। मगर जब उसने उसको पकड़ लिया, तो उसको उसे मारने की इच्छा न हुई। इसलिए उसने तख्तियों से एक

वी. वेंकटदासु

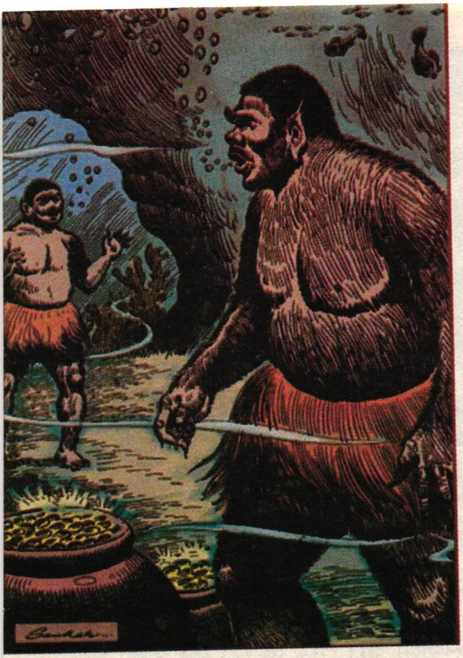

छोटा घर बनाया और उसमें उसे रख दिया।

उसी तरह उसने एक खरगोश भी पकड़ा। वह उसे भी न मार सका। उसको भी उसने उस तख्तियों के घर में सुरक्षित रख दिया।

वह वहीं किनारे पर बैठा रहा और ताड़ के रेशे से फन्दे बनाने लगा। उसके देखते-देखते एक बड़ा भालू पास ही एक गुफ़ा में घुसा।

जब वह किसान का लड़का फन्दे बना रहा था, तो पानी में उसे गलगल ध्वनि सुनाई दी। जब उसने सिर उठाकर देखा तो पाया कि एक लड़का पानी में से आधा ऊपर उठा। उसने एक पत्थर पकड़ रखा था और उसके ऊपर से उसे देख रहा था।

उस झील में एक जल राक्षस रहा करता था। वह कभी पानी से बाहर न आता। यदि कोई झील के पास आता तो इधर-उधर के जादू करके वह उसे पानी में उतारकर, उसे अन्दर घसीट लेता। कहा जाता था कि उसने कई यात्रियों को इस तरह घसीटकर उनका बहुत सा सोना जमा कर रखा था। किसान के लड़के ने सोचा कि उस जल-राक्षस का लड़का ही उसे देख रहा था।

"हमारी झील के पास आकर तुम क्या कर रहे हो?" उस राक्षस के लड़के ने पूछा।

"मैं इस झील को फन्दे में कसने जा रहा हूँ, तब यह झील उसमें बन्द हो जायेगी।" किसान के लड़के ने कहा।

राक्षस के लड़के ने तुरन्त डुबकी लगाई और उसने राक्षस को किसान के लड़के की बात बताई।

"वह इतना करेगा? उसे जीने न दो। तुम बाहर जाओ और उससे पेड़ पर चढ़ने की बाजी लगाओ। जब वह पेड़ पर चढ़कर थक जाय, तो उसे पानी में धकेल दो। बाकी जो कुछ

करना होगा मैं देख लूँगा।'' राक्षस ने अपने लड़के से कहा।

राक्षस के लड़के ने बाहर आकर किसान के लड़के से कहा, ''क्या पेड़ पर चढ़ने में मेरा मुकाबला कर सकते हो?''

''देखते नहीं हो? मैं काम कर रहा हूँ। चाहो तो मेरे छोटे भाई से मुक़ाबला करो।'' कहकर उसने तख्तियों के घर में से गिलहरी छोड़ी। राक्षस के लड़के ने अभी पेड़ पर हाथ रखा था कि गिलहरी चोटी की टहनी पर जा चढ़ी।

राक्षस के लड़के ने फिर पिता के पास जाकर ये सब बताया।

''तो उसे तुम भागने के लिए ललकारो। उसे झील के चारों ओर दौड़ाओ। जब वह थक जाये तो झील में धकेल देना,'' राक्षस ने कहा।

राक्षस के लड़के ने बाहर आकर फिर कहा, ''तो आओ, मेरे साथ दौड़ लगाओ।''

''आँखें नहीं हैं? मैं काम में लगा हूँ। मेरे छोटे भाई को हराकर देखो।'' कहकर किसान के लड़के ने खरगोश छोड़ा। छोड़ने की देरी थी कि वह बाण की तरह भागा और अदृश्य-सा हो गया।

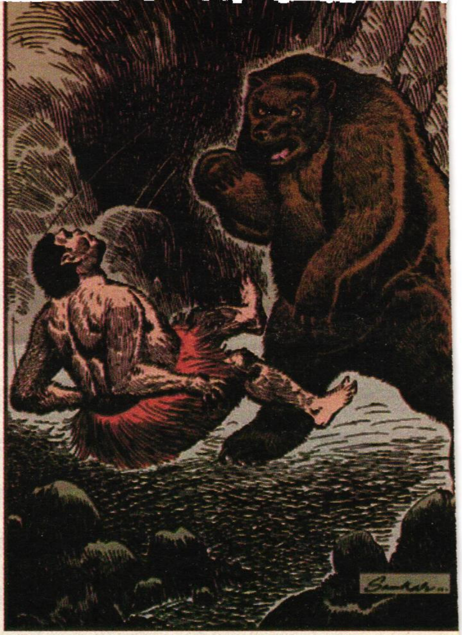

राक्षस के लड़के ने जाकर यह पिता को बताया।

''आश्चर्य की बात है। इस बार उसे कुश्ती के लिए बुलाओ। हराकर उसे पानी में फेंक दो,'' राक्षस ने कहा।

''अभी मेरा काम पूरा नहीं हुआ है। वह जो गुफ़ा दिखाई दे रही है, उसमें मेरा बाबा है। उससे कुश्ती करो, तुम जीतो तो जानूँ।'' किसान के लड़के ने कहा।

राक्षस के लड़के ने जाकर गुफ़ा में भालू को उकसाया। भालू ने उसे नोचा। उसे चीर फाड़कर छोड़ दिया। वह जैसे-तैसे बच बचाकर, पिता के पास गया और उसने उसे सारा वृत्तान्त

सुनाया।

जल राक्षस डर गया।

''यह कोई उद्‌दंड मालूम होता है। इसके भाई पेड़ पर चढ़ने में, दौड़ने में, तुमसे आगे बढ़े हैं। इसके बाबा ने तो, करीब-करीब तुम्हें मार ही दिया था। यह शायद हमारी झील में फन्दा लगाकर, हम सबको कहीं बन्द न कर दे। यह जाकर पूछो कि कितना सोना देने पर वह हमें छोड़कर चला जायेगा।'' राक्षस ने लड़के से कहा।

उसने जाकर किसान के लड़के से पूछा।

''तुम सोना लाओ, सोना देखकर बताऊँगा।'' किसान के लड़के ने कहा।

राक्षस का लड़का कुछ सोना लाया। किसान का लड़का खुश न हुआ। राक्षस देते देते इतना ऊबा कि उसके पास जितना सोना था, वह सब उसने भेज दिया।

''इसके अलावा, हमारे पास रत्ती-भर सोना नहीं है।'' राक्षस के लड़के के कहने पर किसान का लड़का वह सब सोना लेकर अपने पिता के घर आया।

''तुम्हें इतना सोना कहाँ से मिला?'' भाइयों ने आश्चर्य से पूछा।

''इस रस्सी से यह कमाया है।'' छोटे भाई ने कहा।

''यह घर, इस घर का सामान लेकर हमें वह रस्सी दे दो।'' बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा।

छोटे भाई ने रस्सी दे दी।

अपने पिता का घर ठीक करवाकर, अपने धन से खेत, गौ आदि खरीदकर, वह आराम से रहने लगा। किसी को न पता था कि उसके भाई, वह रस्सी लेकर कहाँ चले गये थे।

विजय स्तंभ

उज्जैन और अवन्ति पड़ोसी राज्य थे। दोनों राज्यों के बीच पीढ़ियों से दुश्मनी चली आ रही थी। हर नई पीढ़ी के आने के साथ उनके बीच शत्रुता और गहराती जा रही थी।

अवन्ति के राजा मौनमुद्रा की मृत्यु होने पर उनका पुत्र अभिसिक्त गद्दी पर बैठा। अभिसिक्त एक सच्चा और मृदु हृदय शासक था और साथ ही एक अच्छा प्रशासक भी। वह दोनों राज्यों के बीच की शत्रुता को समाप्त करना चाहता था।

उसने उज्जैन के राजा जयसिंह को इस आशय का एक सन्देश भेजा, "मैं आपसे मित्रता करना चाहता हूँ। हमें अपने अतीत को भूलकर दोनों राज्यों को इस मित्रता से मिलने वाले लाभ लेने देना चाहिये।"

लेकिन राजा जयसिंह शान्ति का पक्षधर नहीं था। यहाँ तक कि उसने अवन्ति पर आक्रमण करने उसे जीतने का प्रण भी कर लिया। राजा अभिसिक्त को राजा जयसिंह के इरादों की जानकारी हो गई। वह चुप रहा और उसने बात को आगे नहीं बढ़ाया। लेकिन जयसिंह ने सच में ही अवन्ति राज्य पर आक्रमण की तैयारी आरम्भ कर दी।

राजा अभिसिक्त के गुप्तचरों ने राजा जयसिंह की युद्ध की तैयारियों की ख़बरें लगातार उस तक पहुँचाईं। लेकिन उसे यह पसन्द नहीं था कि जन-कल्याण के लिये रखा गया धन युद्ध की तैयारी में लगाया जाए। इसलिये अभिसिक्त ने अपने युद्ध की तैयारी पर ख़र्च को नहीं बढ़ाया। उसने सोचा कि यदि जयसिंह वास्तव में युद्ध की घोषणा करेगा तो वह किसी

एन. शिव नागेश्वर राव

तरह उसे सन्धि करने के लिये मना लेगा।

कुछ समय बीत गया। तभी अवन्ति राज्य का सेनापति बीमार पड़ गया। जयसिंह को जब यह बात पता लगी, तो उसे यह अवन्ति पर आक्रमण का अच्छा अवसर लगा। राजा अभिसिक्त ने जयसिंह के पास यह कहते हुए सन्धि का पैग़ाम भेजा: "जयसिंहजी, युद्ध के फलस्वरूप अनावश्यक रक्तपात होगा। दोनों राज्यों की प्रजा का जीवन मुश्किलों में घिर जाएगा। हमारे मन की शान्ति छिन जाएगी। कृपया युद्ध को रोककर शान्ति को अपनाएँ।"

लेकिन जयसिंह ने अभिसिक्त के शान्ति सन्देश पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह युद्ध के लिये तैयार हो गया। और कोई उपाय न देखकर राजा अभिसिक्त ने राजा जयसिंह के विरुद्ध युद्ध में अपनी सेना का नेतृत्व किया। अवन्ति के सैनिक अपने राजा के प्रति अपने प्रेम और समर्पण के साथ अपनी पूरी शक्ति से लड़े। लेकिन अवन्ति की सेना उज्जैन की सेना के सामने टिक न सकी। विजयश्री ने जयसिंह का वरण किया।

जयसिंह ने अभिसिक्त को कारागार में डालकर अवन्ति पर कब्ज़ा कर लिया। अवन्ति की प्रजा बहुत निराशा में डूब गई। तब राजा जयसिंह ने राज्य के मध्य में अपनी विजय की निशानी के रूप में एक स्तंभ का निर्माण करने की सोची। फिर उसने सम्बन्धित अधिकारियों को बुलाकर उनसे एक माह के भीतर विजय स्तंभ बना देने का आदेश दिया।

मज़दूर इकट्ठे किये गए। उन्होंने निर्माण शुरू किया। लेकिन काम की प्रगति बहुत धीमी थी। अधिकारी राजा जयसिंह से मिलकर उन्हें जानकारी देने गए। "महाराज, विजय स्तंभ का निर्माण एक माह में हो पाना मुश्किल है। इसका कारण यह है कि कारीगर बहुत अनिच्छा से काम कर रहे हैं। जयसिंह ने उत्तर दिया, "उनका वेतन दुगना कर दो। फिर वे मन लगाकर काम करेंगे।" एक सप्ताह बाद अधिकारी फिर आए। "क्या विजय स्तंभ का काम ठीक

चल रहा है? मज़दूर मन लगाकर काम कर रहे हैं?'' राजा ने पूछा।

अधिकारी बोले, ''वेतन दूना हो जाने के बाद भी मज़दूर अब भी बहुत धीमे काम कर रहे हैं। वे मन से काम नहीं कर रहे। यहाँ तक कि हमारी कोड़े लगाने की धमकियों का भी उनपर कोई असर नहीं हो रहा है और वे उसी प्रकार काम कर रहे हैं।''

इसपर राजा क्रोधित हो गया। उसने मज़दूर नेता को अपने सामने हाज़िर होने का हुक्म दिया। मज़दूरों का नेता मंगाराम भीड़ से निकलकर राजा के सामने आया। ''तुम लोगों की पगार दुगनी कर दिये जाने के बाद भी काम में देरी क्यों हो रही है?'' राजा ने कड़कते स्वर में पूछा।

मंगाराम ने उत्तर दिया, ''महाराज, हमें हमारे राजा अभिसिक्त के प्रति बहुत आदरभाव है। यह तथ्य कि आपने हमारे दयालु राजा को कारागार में डाल रखा है और हमारे राज्य पर अधिकार कर लिया है, हमें बहुत पीड़ा देता है। इस कारण हम विजय स्तंभ के निर्माण में पूरे मन से हाथ नहीं बँटा पा रहे, जिससे काम में देरी हो रही है।''

इस उत्तर से राजा जयसिंह और क्रोधित हुआ। उसने मंगाराम से कहा कि यदि उस दिन से एक सप्ताह के भीतर विजय स्तंभ का निर्माण पूरा नहीं हुआ तो वह

उन सभी को सूली पर चढ़ा देगा।

लेकिन इसके दस दिन बाद तक विजय स्तंभ का निर्माण पूरा नहीं होने पर जयसिंह का पारा आसमान छूने लगा। वह मंगाराम को सन्देश भेजने ही वाला था कि वह स्वयं विजय स्तंभ पर उसके नीचे काम करने वाले सैकड़ों मज़दूरों के साथ वहाँ आ पहुँचा।

उसने कहा, ''महाराज, हम आपके आदेश के अनुसार एक सप्ताह में काम पूरा नहीं कर पाए। हम इसका परिणाम भुगतने और मृत्युदण्ड पाने के लिये तैयार हैं।''

राजा जयसिंह को झटका सा लगा। उसने पूछा, ''क्या तुम्हें अपनी जान प्यारी नहीं है?'' मंगाराम के साथ सभी

मज़दूरों ने उत्तर दिया, "हमने निश्चय किया है कि इस राज्य में अपने राजा के बिना जीने से मृत्युदंड का वरण अच्छा होगा।"

अपने राजा के प्रति उनकी वफ़ादारी देखकर जयसिंह को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "तुम सब अपने राजा को इतना मान क्यों देते हो?" इसपर उन्होंने उत्तर दिया, "महाराज, हमें ऐसे अनगिनत अवसर याद हैं जब उन्होंने हमारी भलाई को अपने सभी निर्णयों में सर्वोपरि स्थान दिया। एक बार जब राज्य में अकाल पड़ा, तो हमारे राजा भूखे रहे और अपने सभी राजसी सुख छोड़कर तब तक हमारी तरह रहे जब तक कि बुरा वक्त बीत न गया। इस प्रकार यह हमारी ओर से बहुत ही तुच्छ त्याग है कि हम अपने राजा के लिये जीवन त्याग दें।"

राजा जयसिंह सोच में पड़ गया था। ऐसा लगता था जैसे उसमें कोई तीसरा नेत्र खुल गया था और वह भावुक हो गया। उसने उपस्थित लोगों से कहा, "तुम्हारे राजाअभिसिक्त तुम जैसे प्रजाजनों को पाकर धन्य हैं। मुझे ऐसे सज्जन पुरुष की मित्रता की पहल पर ध्यान दिये बिना उसे कारागार में डालने का बहुत अफ़सोस है।"

"अतः, मैं न केवल उन्हें कारागार से बाहर लाऊँगा, बल्कि यह राज्य भी उन्हें वापस कर दूँगा!" जयसिंह ने अपने वचन को निभाया। वह अवन्ति का राज्य वापस राजा अभिसिक्त को देकर स्वयं उज्जैन चला गया।

एक पखवाड़े बाद, उसे राजा अभिसिक्त का सन्देश मिला। उसमें लिखा था, "प्रिय मित्र, पिछले पन्द्रह दिनों में मेरे लोगों ने उस विजय स्तंभ का निर्माण पूरा कर लिया है जो आप बनाना चाहते थे। वे इस रूप में आपके प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाना चाहते थे। मैं इस स्मारक के अनावरण के अवसर पर आपका गर्मजोशी से स्वागत करता हूँ।"

मूल्य

एक समय की बात है, दो पड़ोसी राजा एक-दूसरे के धुर विरोधी थे। दोनों राज्यों के बीच की सीमारेखा का झगड़ा इतना गंभीर हो गया कि बहुत जल्दी दोनों राज्यों के बीच युद्ध भड़क गया। भयंकर युद्ध हुआ और फिर उन दोनों राजाओं में अधिक शक्तिशाली, सुरेन ने दूसरे राजा से युद्ध जीत लिया।

दूसरा राजा, काटा, युद्ध हारने के बाद भागकर जंगल में चला गया और अपनी हार का बदला लेने के लिये उचित मौके की तलाश में रहने लगा। युद्ध जीतने के मद में चूर सुरेन ने राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया कि राजा काटा का सिर लाने वाले किसी भी व्यक्ति को एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ दी जाएँगी।

मुनादी करने वालों ने पूरे राज्य में घूम-घूमकर इस इनाम का प्रचार किया।

यह समाचार मिलने पर काटा ने अपने सन्देशवाहक के माध्यम से इनाम की घोषणा पर टिप्पणी कीः

''तुमने मेरे सिर पर एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का इनाम रखा था। मैं इससे गर्व का अनुभव कर रहा हूँ क्योंकि मैं इसके लायक हूँ,'' उसने कहा।

''लेकिन मैं तुम्हारे सिर के लिये एक दमड़ी भी व्यय नहीं करूँगा। इसका कारण यह कि कि तुम्हारे सिर का कोई मूल्य ही नहीं है और उसे किसी कचरे के ढेर पर ही डाला जाना चाहिये।''

यह उत्तर सुनकर सुरेन पर जैसे घड़ों पानी पड़ गया और वह शर्म और ग्लानि से ठगा सा रह गया!

असफ़ल उपाय

एक नगर में एक धनी रहा करता था। दान आदि देने के कारण वह दानी के रूप में भी प्रसिद्ध था। पास के ही नगर में एक और धनी था। लेकिन वह बड़ा लोभी था। जो लोग दानी की प्रशंसा करते, इस लालची कंजूस को दुत्कारते भी।

कंजूस ने जैसे भी हो, अपनी बदनामी दूर करनी चाही। उसके पास एक विश्वासपात्र नौकर था। उसने उससे सलाह मशवरा किया और उससे कोई उपाय सोच निकालने के लिए कहा।

''लोगों से आप अपने को दानी नहीं कहलवा सकते। परन्तु पास के शहर के दानी धनी को आसानी से ठगा जा सकता है। उसको एक दिन अपने यहाँ न्यौता दीजिये। जब वे हमारे घर में होंगे तो मैं वेष बदल बदलकर माँगने आऊँगा। जब वे देख रहे हों, तब आप मुझे हर बार सौ-सौ मोती दीजिये। वे चकित हो उठेंगे और जो कोई मिलेगा उससे आपकी दानशीलता की प्रशंसा करते रहेंगे। बिना एक पैसा खर्च किये आपको भी बड़ी ख्याति मिलेगी,'' नौकर ने कंजूस को सलाह दी।

''हाँ, तुम्हारा उपाय बहुत अच्छा है। कल ही उन्हें भोजन पर बुलाया जाय। तुम शाम को उनके शहर जाओ, जैसे उसको निमन्त्रित करना हो, वैसे करके आओ। कल सवेरे ही उन्हें अपने घर बुला लाना,'' कंजूस ने कहा।

एम. मंगाराव

नौकर दानी के नगर गया। उसने उनसे कहा, ''हमारे मालिक ने अपने घर आपको न्यौता दिया है। आप कृपया उनका आतिथ्य स्वीकार कीजिये।''

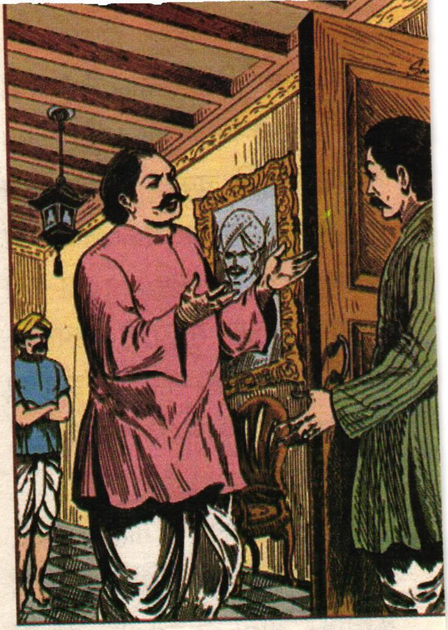

''तुम्हारे मालिक तो बिल्ली के लिए भी कुछ नहीं छोड़ते, फिर वे मुझे कल क्यों बुला रहे हैं? क्या बात है?'' दानी ने कंजूस के नौकर से पूछा।

''हुज़ूर! लोग जो मेरे मालिक के बारे में कहते हैं, लगता है, आपने भी उस पर विश्वास कर लिया है। सच तो यह है कि वे बड़े उदार और दानी हैं। वे मामूली भिखारियों को भी सौ मोती से कम नहीं देते। वे गुप्तदान ही करते हैं। किसी तीसरे आदमी को नहीं मालूम होने देते। और क्या कहूँ? कल आप स्वयं देख लेंगे। अब यह बताऊँ कि उन्होंने आपको क्यों बुलाया है? अब तक उन्होंने लाख मोती दान में दे दिये हैं। इसलिए वे मन्दिर में कल अभिषेक करवा रहे हैं। इस अवसर पर उन्होंने एक योग्य व्यक्ति को घर में आतिथ्य देने का निश्चय किया है। क्योंकि इस इलाके में आप ही उनके बराबर दानी हैं, इसलिए आपको न्यौता भेजा है,'' कंजूस के नौकर ने कहा।

दानी ने थोड़ी देर सोचकर कहा, ''अच्छा तो अपने मालिक से कहना कि मैं कल सवेरे आ जाऊँगा।'' नौकर कंजूस के घर वापिस गया। जो कुछ उसने दानी से कहा था, उसको बताया। वह नौकर की सूझ-बूझ पर बड़ा सन्तुष्ट हुआ।

अगले दिन दानी, कंजूस के घर गया।

''आप आये, और साथ कोई नौकर भी न लाये,'' कंजूस ने कहा।

''नौकर को कुछ काम था, इसलिए वह पीछे रह गया। काम होते ही वह भी आ जायेगा।'' दानी ने कहा।

"सुनता हूँ कि मेरे नौकर ने आपको बता दिया है कि मैं लाख मोती अब तक दान में दे चुका हूँ। मैं बिल्कुल नहीं चाहता कि मेरे दान के बारे में किसी को कुछ मालूम हो। दान-धर्म करना मेरे लिए मुख्य है। ख्याति-कीर्ति पाना मुख्य नहीं है। इसलिए मेरा भेद कभी किसी को न बताइये।" कंजूस ने कहा।

कंजूस के नौकर ने कहा, "हुज़ूर, मैं मन्दिर जाकर अभिषेक आदि करवाकर आता हूँ।" कहकर वह घर चला गया।

कुछ देर में, एक बूढ़ा भिखारी वहाँ आया। कंजूस ने अपने पास रखी थैली में से सौ मोती निकालकर उसे दे दिये।

बूढ़े भिखारी के चले जाने के बाद एक बैरागी आया। उसे भी उसने सौ मोती देकर भेज दिया। तब से भोजन के समय तक एक गूँगा, एक अन्धा, एक बंजारा, एक यात्री, एक मदारी, इस तरह दस आदमी आए। कंजूस ने इन सब को सौ-सौ मोती तो दिये ही, साथ ही अपने नौकर की चतुराई की भी मन ही मन प्रशंसा की कि उसने किस अच्छे ढंग से इतने सारे वेष बदले थे।

दानी ने कंजूस से कहा, "मैंने आप जैसा दानी कहीं नहीं देखा है, न कहीं सुना ही है। आज ही आपने हज़ार मोती दान में दे दिया।"

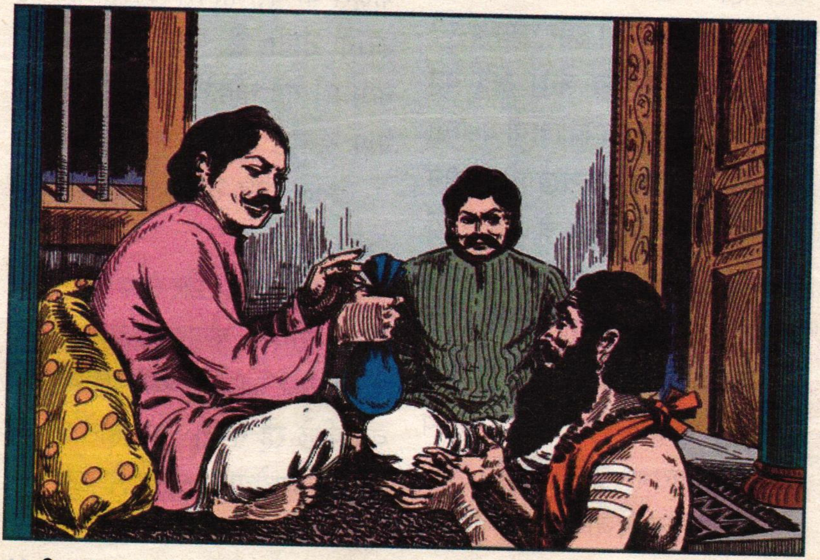

''नहीं, दस आदमी आये, दस बार मैंने सौ सौ मोती दे दिये। यह तो मेरे लिए प्रथा सी हो गई है,'' कंजूस ने उपाय की सफलता के बारे में प्रसन्न होते हुए कहा।

दुपहर को कंजूस का नौकर अपने मामूली वेष में आया। उसने अपने मालिक से कहा, ''अभी ही पूजा समाप्त हुई है। ये लीजिये प्रसाद लाया हूँ,'' कहकर वह थाल के साथ घर के अन्दर गया।

थोड़ी देर में कंजूस भी अन्दर गया, उसने नौकर से कहा, ''नाटक तो तुमने खूब खेला, कहाँ है हमारा धन?''

''यह लीजिये, यह रखे पाँच सौ'' कहकर नौकर ने कंजूस को थैली दे दी।

''अरे, पाँच सौ क्या? मैंने तो तुम्हें हज़ार मोती दिये थे,'' कंजूस ने कहा।

''जी नहीं, मैं पाँच बार ही आया था। जब-जब आया, आपने मुझे सौ-सौ मोती दिये।

''आने को तो दस आए थे। अगर तुम पाँच बार आए थे, तो पाँच बार और कौन आया था?'' कंजूस ने फिक्र में ज़ोर से पूछा।

''शायद वह हमारा नौकर होगा।'' दानी की आवाज़ सुनाई दी। जब मालिक और नौकर अन्दर बातचीत कर रहे थे, तो उसने धीमे से अन्दर आकर उसकी बातचीत सुनी।

''हमारा नौकर भी आया जाता है, आपके दिये मोती कहीं न जायेंगे। वह भी विश्वासपात्र है।'' दानी ने कहा।

कंजूस आश्चर्य और अपमान से ढह सा गया। उसकी चाल न चली।

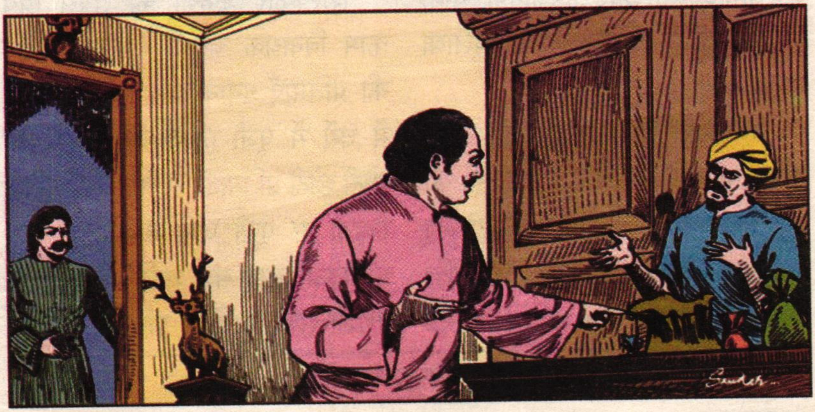

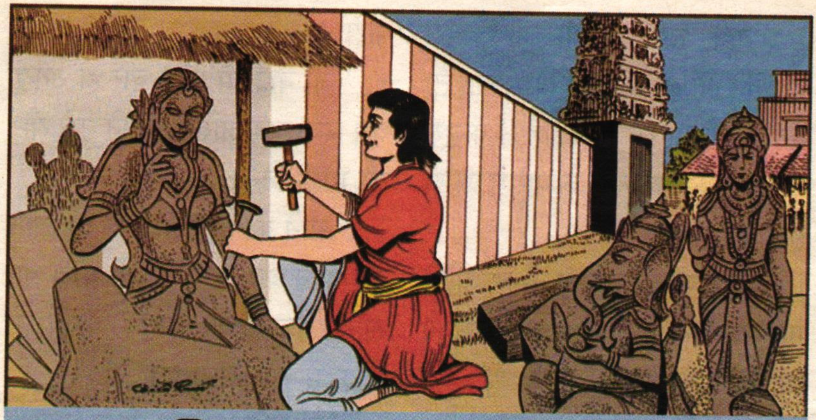

बिना कान के गणपति

बहुत पहले सिरिपुरम् राज्य पर राजा प्रह्लादवर्मा राज्य करते थे। उन दिनों सिरिपुरम् में जकन्ना नाम का एक महान शिल्पी था। जकन्ना शिल्पकारों के परिवार से सम्बन्ध रखता था। जकन्ना ने उनसे ये हुनर प्राप्त किया परन्तु उसने अपने हुनर को इतना तराशा जितना उन लोगों में से कोई न तराश सका। उसकी बहुत पूछ थी और उसे लगातार मन्दिरों, राजकीय इमारतों और सार्वजनिक स्थानों के लिए मूर्तियाँ तराशने के लिए बुलाया जाता था।

चन्देरी के राजा ने एक साथ कई मन्दिर बनवाए थे। उसने जकन्ना को वहाँ आकर मन्दिर की दीवारों और गोपुरम् पर मूर्तियाँ अंकित करने के लिए निमन्त्रित किया। वह काम इतना अधिक था कि उसको पूरा करने में कई वर्ष लगते। जकन्ना ने कुछ शर्तों के साथ निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। उन शर्तों में सबसे महत्वपूर्ण शर्त यह थी कि वह प्रतिवर्ष विनायक चतुर्थी के अवसर पर एक महीने के लिए अपने गृहनगर सिरिपुरम् आयेगा। विनायक चतुर्थी के उत्सव की समाप्ति पर गणेश प्रतिमा के विसर्जन के बाद ही वह लौटेगा।

शिल्पकार जकन्ना का सबसे प्रिय काम विनायक चतुर्थी के लिए गणेश की प्रतिमाएँ बनाना था। इन प्रतिमाओं में घरों में पूजी जाने वाली मिट्टी की छोटी छोटी प्रतिमाओं से लेकर सार्वजनिक स्थानों पर पूजी जाने वाली बड़ी बड़ी प्रतिमाओं तक सब शामिल होती थीं। गणेशोत्सव के लिए प्रतिमाएँ बनाकर

पी. वेंकटेश्वर राव

उसे अपार सन्तोष और सुख मिलता था।

जब जकन्ना शिल्पकारी का काम सीख रहा था तब उसके पिता ने कहा था, ''शिल्पकारी करने का मतलब पत्थरों में आँख, नाक आदि खोदना भर नहीं है। जो भी मूर्ति हम बना रहे हैं उसे उस शिल्प में जीवित कर देने में हमें सक्षम होना चाहिए। अगर हम ईश्वर की प्रतिमा बना रहे हैं जिसने हमें बनाया है तब तो हमें दीनता, भक्ति और समर्पण की भावना से काम करना चाहिए। अपने काम के प्रति इतना समर्पित होना चाहिए कि ईश्वर की जिस प्रतिमा के सामने लोग सर झुकाएँ उसमें से दिव्यता का प्रकाश फैले।''

विनायक चतुर्थी के लिए सिरिपुरम् जाते समय उसे ये शब्द याद आ रहे थे। लेकिन राज्य में पहुँचने पर उसे बड़ा सदमा लगा। खेत सूखे पड़े थे। पशु दुबले और कमज़ोर थे। लोग बेहद गरीबी में जी रहे थे और दुखी थे।

लोगों की उन्नति हो तब त्योहार मनाये जाते हैं। जकन्ना यह जानने में असमर्थ था कि यह कैसे हो गया। पूछताछ से उसे मालूम हुआ कि राजा तो भोग विलास और ऐशो-आराम में डूबा रहता था और राज्य की व्यवस्था में कोई रुचि नहीं लेता था। राजा के मन्त्री और अन्य

अफसर इस स्थिति का फ़ायदा उठा कर अपने अपने स्वार्थ को साधते हुए राज्य का काम चलाते थे। वे लोगों से भारी कर वसूल करते थे और उनसे कड़ा व्यवहार करते थे। वे किसी तरह का शिकवा या शिकायत करने वाले व्यक्ति को राजा तक पहुँचने ही नहीं देते थे।

इस हद तक स्थिति बिगड़ते देख कर जकन्ना ने भी राजा के पास जाने की कोशिश की, परन्तु उसकी भेंट भी उन्हीं मन्त्रियों से हुई जिन्होंने उसे राजा से मिले बिना ही वापस भेज दिया।

घर आकर जकन्ना ने गंभीरता से इस विषय पर विचार करना शुरू किया। गणेश प्रतिमाओं के लिए सांचे बनाते समय उसके मन में एक विचार आया।

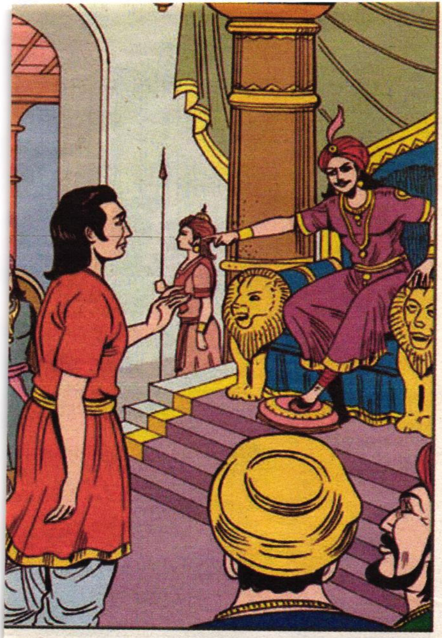

परिणाम यह हुआ कि विनायक चतुर्थी के लिए बनाई गई गणेश प्रतिमाओं में से किसी के भी कान नहीं थे। भगवान गणेश का सौन्दर्य उनके बड़े और चौड़े कानों से है पर अब इन प्रतिमाओं के तो कान ही नहीं थे! कान रहित गणेश प्रतिमाओं को देख कर लोग हैरान थे।

वे एक दूसरे से कहने लगे कि राज्य की वर्तमान स्थिति को देखते हुए गणेश की ऐसी मूर्तियाँ तो और आगे और भी बुरा समय दिखाएँगी। इस के बारे में मन्त्रियों को भी मालूम पड़ा। उन्होंने राजा से मिलकर शिल्पकार की शिकायत करके उसको सज़ा दिलवाने का निश्चय किया जिससे भविष्य में वह ऐसा न करे। तब तक राजा को ये बात मालूम पड़ चुकी थी कि विनायक चतुर्थी के लिए महल में लाई गई प्रतिमा के कान नहीं हैं।

वह गंभीरता से शिल्पकार जकन्ना को दण्डित करने पर विचार करने लगा। जब मन्त्री भी उसके पास शिकायत लेकर आए तो उसका क्रोध और बढ़ गया और फौरन उसने जकन्ना को बुलवाया।

जब वह आया तो राजा ने गुस्से से उससे पूछा, "भगवान की मूर्ति बिना कान के बनाना उनका घोर अपमान है। क्या सोचकर तुमने ऐसा किया? इसके पीछे तुम्हारा क्या उद्देश्य है? यदि हमारे राज्य पर दुर्भाग्य आ जाये तो क्या होगा?"

आत्मविश्वास से भरे हुए जकन्ना ने उत्तर दिया, "महाराज, मेरे पिता मुझ से हमेशा कहते थे कि गणेश के कान इतने बड़े क्यों होते हैं। उन्होंने बताया कि ईश्वर हमारी प्रार्थना सुनते हैं और गणेश के कान इतने बड़े इसलिए होते हैं कि वह हर व्यक्ति की विनती सुन सकें। उसके बाद से मैं ऐसी मूर्तियाँ बनाता था कि जिनमें कान सुन्दर और स्पष्ट दिखें।

"परन्तु हमारे राज्य की दशा को" देखकर तो लगता है कि भगवान के कान हैं भी या नहीं। जनता की ढेरों शिकायतों पर ध्यान नहीं देने के कारण मैंने ईश्वर की मूर्तियाँ ऐसी बनाने का

निश्चय किया जिनके कान न हों क्योंकि वे लोगों की प्रार्थनाएँ सुन ही नहीं रहे हैं,'' जनकन्ना ने आगे कहा।

उसका उत्तर सुनकर राजा भौंचक्का रह गया। ''अब हमारे राज्य के लोगों को क्या हुआ है?'' उसने आश्चर्य से पूछा।

जब जकन्ना ने धीरे धीरे राजा को बताना शुरू किया कि किस तरह राज्य नियन्त्रण से बाहर हो गया है, लोगों के लिए किस तरह जीना मुश्किल हो रहा है और किस तरह राज्य-शक्ति पूरी तरह गलत हाथों में चली गई है तो राजा काँप उठा।

लज्जित और विचलित होते हुए उसकी समझ में आया कि उसने अपने ही देश का कितना नुकसान किया है। उसने अच्छे प्रशासन का वचन दिया और उन सब मन्त्रियों को हटा दिया और अच्छे कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की और फौरन मदद के कार्य प्रारम्भ करवाए।

अपने चतुर तरीके से चालाक मन्त्रियों का भंडा फोड़कर उसकी आँखें खोलने के लिए उसने जकन्ना की प्रशंसा की। ''महाराज, किसी ने नहीं देखा है कि भगवान के कान हैं कि नहीं। यह केवल उनका विश्वास है कि ईश्वर उनकी प्रार्थनाएँ सुनता है। परन्तु राजा उनकी शिकायतें सुनकर उनकी समस्याएँ सुलझाएगा यह सिर्फ़ विश्वास का विषय नहीं है। यह एक वास्तविकता है। यही कारण है कि राजा को ईश्वर का अवतार कहा जाता है। यदि ऐसा राजा भी बिना कान के भगवान जैसा व्यवहार करे, तो लोगों के दुख-दर्द का क्या होगा?'' जकन्ना ने कहा।

राजा ने पुनः जकन्ना की प्रशंसा की और बदलाव लाने की हिम्मत करने के लिए उसका सम्मान किया।

उस साल बड़ी बड़ी गणेश प्रतिमाएँ, हाँ और कानवाली, बनाई गईं और अत्यधिक उत्साह के साथ राज्य में गणेश चतुर्थी मनाई गई।

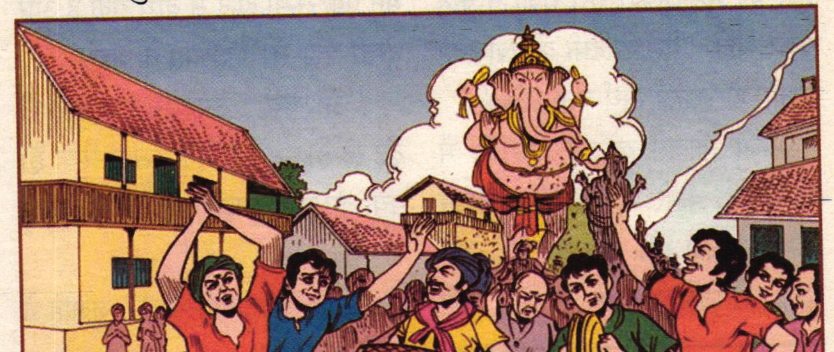

जुलाहे की चतुराई

एक दिन जब एक राजा सिंहासन पर बैठा था, तो पड़ोस के देश के राजा के पास से एक दूत आया और उसने राजा की सिंहासन के चारों ओर खड़िया से एक घेरा बनाया और बिना कुछ कहे खड़ा हो गया। राजा ने अपने मन्त्रियों को बुलाकर पूछा, ''इसका क्या अर्थ है?''

मन्त्री कुछ भी न कह सके। वे एक दूसरे का मुँह ताकते रहे। राजा ने क्रुद्ध होकर कहा, ''ऐसे आदमी को खोजकर लाओ जो इसका अर्थ बता सके।''

मन्त्री खोजते-खोजते एक घर में आये। एक कमरे में, एक झूला अपने आप झूल रहा था। छत पर धान सूखा हुआ था। उसको खाने के लिए पक्षी तैयार थे। परन्तु चूंकि नीचे एक पंखा चल रहा था, इसलिए वे धान के पास नहीं आ रहे थे। मन्त्री एक और कमरे में गये, वहाँ उन्होंने करघे पर बैठे एक जुलाहे को देखा।

''घर में ये क्या आश्चर्य है? झूला स्वयं झूल रहा है। पंखा भी स्वयं चल रहा है।'' उन्होंने कहा।

''मैं उनको चला रहा हूँ। करघे से मैंने एक रस्सी झूले से बाँध रखी है और दूसरी पंखे से।'' जुलाहे ने कहा।

''आश्चर्य....आश्चर्य हम तुम्हें ही ढूँढ़ रहे हैं। हमारे सामने एक समस्या है। क्या तुम उसे सुलझा सकोगे?'' मन्त्रियों ने पूछा।

''क्या है वह समस्या?'' जुलाहे ने

एच. वीरेसालिंगम

पूछा। मन्त्रियों ने उसको बताया। जुलाहे ने कुछ देर सोचकर कहा, ''यह मेरे आये बगैर नहीं सुलझायी जा सकती।''

वह दो गोलियाँ लेकर, उनके साथ राजा के पास गया। जुलाहे ने राजा को प्रणाम किया। घेरे को देखा। दूत की ओर भी एक बार देखा। फिर वह जो गोलियाँ लाया था, उन्हें उसने उसके सामने फेंका।

तुरन्त दूत ने अपनी जेब से मुठ्ठी-भर जौ उन पर फेंके। जुलाहा गया और एक मुर्गे को लाकर उसने जौ के दानों पर छोड़ दिया।

उस मुर्गे ने बिना एक भी दाना छोड़े सब दाने खा लिए। यह देख दूत तुरन्त बाहर निकल गया।

''यह सब क्या है? मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा हूँ।'' राजा ने कहा।

''और कुछ नहीं, महाराज! पड़ोस के राजा ने यह खबर भिजवायी थी कि वह हमारे राज्य को घेर लेगा। दूत यह जानने की प्रतीक्षा में था कि हम उसका मुकाबला करेंगे कि हार मानते हैं।''

''मैंने उससे कहा, ''तुम तो गोलियों से खेलने वाले छोकरे हो।'' उसने यह दिखाने के लिए कि उनके पास बहुत बड़ी सेना है, बहुत से जौ के दाने फेंके। मैंने मुर्गे को छोड़कर यह बता दिया कि हम एक को भी नहीं छोड़ेंगे। यह सन्देश लेकर वह चला गया।'' जुलाहे ने कहा।

''शाबाश....शाबाश, तुम सचमुच अक्लमन्द हो। तुम यहीं रह जाओ। मैं तुम्हें अपना प्रधान-मन्त्री नियुक्त करता हूँ,'' राजा ने सन्तुष्ट होकर कहा।

''वाह....वाह, मुझे घर में इतना काम है। मुझे जाना है।'' कहता, जुलाहा वहाँ से उठकर, घर चला गया।

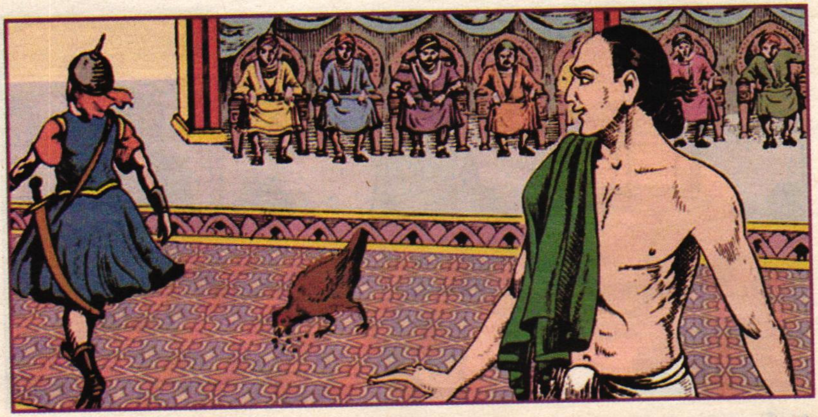

स्थिर जल

खानदानी धनवान होने के बावजूद भूषण एक परिश्रमी व्यक्ति था जो काम और पैसे दोनों की बहुत कद्र करता था। साथ ही वह परोपकार भी करता था। लेकिन उसके इकलौते बेटे वीर का जीवन के प्रति दृष्टिकोण एकदम अलग था। उसे काम करने की इच्छा नहीं होती थी और न ही परोपकार में उसकी रुचि थी। एक दिन भूषण ने अपने बेटे से एक छलनी, पीतल का पानी से भरा घड़ा और एक खाली मिट्टी का बर्तन लेकर आँगन में आने के लिए कहा।

उसने बेटे से पहले छलनी को पानी से भरने के लिए कहा। सब पानी बह गया। फिर उसने पीतल के पानी से भरे घड़े में पानी भरने के लिए कहा। पानी फिर बह गया। फिर भूषण ने उससे मिट्टी के बर्तन में पानी भरने के लिए कहा क्योंकि यह किया जा सकता था। वीर बोला, ''पिताजी छलनी में सब तरफ़ छेद हैं, उसमें कुछ ठहर नहीं सकता।'' तब भूषण ने कहा, ''तब यदि हम बैठ कर खाते रहेंगे तो हमारा धन भी इसी तरह खत्म होता जाएगा।'' वीर ने कहा, ''परन्तु पीतल का घड़ा भरा हुआ है। उसे फिर से भरने की कोशिश क्यों करना? मतलब दूसरों को पैसा दान में क्यों देना? हम इस धन को सुरक्षित भी तो रख सकते हैं।'' भूषण ने प्रसन्नता से बेटे की पीठ थपथपाई और कहा, ''यदि हम बर्तन में पानी भर कर छोड़ देते हैं तो धीरे-धीरे उसमें गन्दगी और कीटाणु पैदा हो जाते हैं। उसी तरह धन को यदि किसी उपयोग में न लाया जाए तो वह भी व्यर्थ है। जैसे हम मिट्टी के घड़े के पानी का उपयोग करते हैं और उसे फिर ताजे पानी से भरते हैं और इसी तरह करते जाते हैं। वैसे ही मनुष्य को मेहनत करके धन कमाना और उसे सबके फायदे के लिए काम में लाना चाहिए।

- गोदावरी ललिता

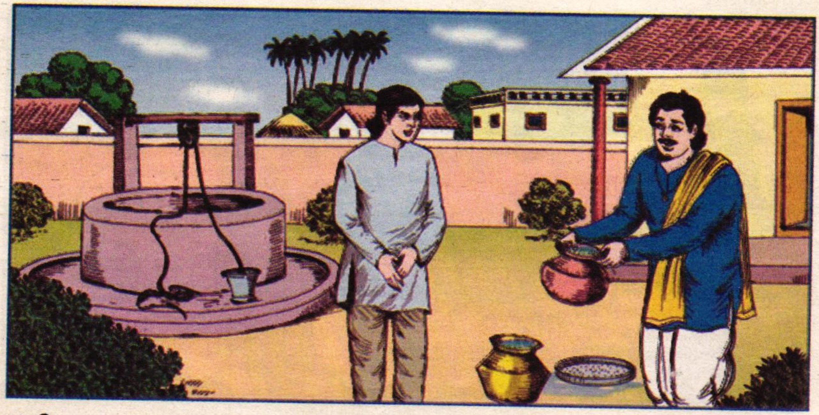

शिथिलालय-३०

(उन्मत्त कैथा खाने पर नांगसोम पागल हो चिल्लाने लगा। पुजारी ने उसे पकड़ लिया और शिथिलालय की खोज में चल दिया। पहाड़ पर शिखिमुखी वगैरह ने उसका सामना किया। उस समय जांगला घायल हुआ। शिथिलालय का पुजारी घाटी में गिर पड़ा। नांगसोम घाटी में कूद पड़ा। इसके बाद-)

नांगसोम 'शिथिलालय' 'शिथिलालय' पुकारते घाटी में कूद पड़ा। इस पर विक्रमकेसरी व शिखिमुखी दंग रह गये। गोलभरा से बड़ी कुशलता के साथ नाव चलाकर नांगसोम ने उन लोगों को इस वृच्छिक टापू में पहुँचा दिया था। यहाँ पहुँचने के बाद भी बड़ी हिम्मत के साथ उनकी मदद की थी। ऐसे विश्वासपात्र का उन्मत्त हो घाटी में कूदकर जान से हाथ धोना उन दोनों के लिये दुख की बात थी।

"शिखी, हम एक अपने बड़े मित्र को खो चुके हैं। उसने किस विश्वास के बल पर उस उन्मत्त कैथे को खाकर यह भयंकर आफ़त मोल ली है!" विक्रमकेसरी ने शिखि से पूछा।

शिखिमुखी उत्तर देने ही वाला था कि इतने में जांगला ज़ोर से कराह उठा और बोला, "शिखी साहब! नांगसोम मर न गया होगा! घाटी में कूदते समय वह किसी महावृक्ष में अटक गया होगा। वृक्ष की डालों ने उसकी रक्षा की होगी। अलावा इसके उसने जब शिथिलालय देखने का उत्साह दिखाया तब वह घाटी में कूद पड़ा। हो सकता है कि इसमें सचाई भी हो।"

दसारि सुब्रह्मण्यम्

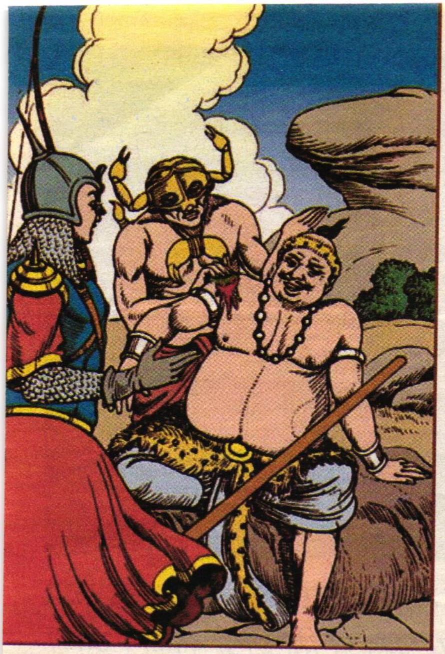

जांगला की बातों से शिखिमुखी के दिल में आशा की रेखा खिंच गई। वह जांगला के निकट पहुँचा। बड़े ही स्नेह से उसके कंधे पर हाथ फेरकर बोला, "जांगला, तुम्हारी स्वामिभक्ति ही नहीं, तुम्हारी हिम्मत पर भी मैं मुग्ध हूँ। अगर तुमने न पकड़ा होता तो शिथिलालय का पुजारी इस बार भी हाथ से ख़िसक जाता।" इसके बाद जांगला के घाव पर खून को जमे देख चारों तरफ़ देखते हुए बोला, "अरे, हम लोग भूल ही गये हैं। क्या घाव पर अब तक पट्टी नहीं बाँधी गयी?"

वृच्छिक जाति का नेता झट पास की झाड़ियों में घुस पड़ा। किसी पत्ते का रस लाकर जांगला के घाव पर मल दिया और पट्टी बाँध दी। उस वक्त विक्रमकेसरी जांगला से बोला, "जांगला, तुम्हारे कहे मुताबिक़ नांगसोम ही नहीं, बल्कि शिथिलालय का पुजारी भी किसी पेड़ की डाल पर गिरकर जिंदा रह सकता है न?"

"जी हाँ, साहब! ऐसा हुआ तो इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं।" जांगला ने उत्तर दिया।

यह बात सुनते ही वृच्छिक नेता क्रोध से उछल पड़ा और बोला, "अगर ज़िन्दा ही हो तो पूर्णिमा के दिन उन दोनों की वृच्छिक माता को बलि दूँगा। उनमें से एक धूर्त है। दूसरे ने उन्मत्त कैथा खाकर वृच्छिक माता के प्रति बहुत बड़ा अपराध किया है।"

वृच्छिक नेता की बातें सुन विक्रमकेसरी क्रोध से पागल हो उठा। उसने झट तलवार खींचकर कहा, "तुम बराबर इस तरह बातें कर रहे हो, मानों तुम्हीं इस वृच्छिक टापू के राजा हो। हमारी बलि देना इतना आसान समझते हो? ज़रा मैं भी तुम्हारी ताक़त की जाँच कर लूँ। तुममें हिम्मत हो तो हथियार लेकर सामने आ जाओ।"

विक्रमकेसरी की बातों से वृच्छिक जाति के लोगों में हलचल मच गई। वे सब अपने नेता को घेरकर डींग हाँकने लगे। पाँच-छः मिनट बाद वृच्छिक नेता

अपने दल के लोगों को हटाकर पत्थर की कुल्हाड़ी उठा विक्रमकेसरी के निकट मत्त हाथी की तरह आ पहुँचा।

शिखी ने समझा कि अब बलि से बढ़कर भयंकर हत्या होनेवाली है। यह सही है कि विक्रम के सामने वृच्छिक नेता किसी भी हालत में ठहर न स्केगा। तलवार के एक ही वार से वह वृच्छिक नेता के टुकड़े-टुकड़े कर सकता है।

शिखिमुखी ने उन दोनों को रोका। जांगला को साथ ले जाकर उन दोनों के बीच खड़ा हो गया और इभ्यु जाति की टूटी-फूटी बोली में कहा, "वृच्छिकनायक! तुम जल्दी न मचाओ। विक्रम की तलवार के सामने तुम्हारी पत्थर की कुल्हाड़ी किसी काम की नहीं। आख़िर इस झगड़े का कोई मतलब भी तो हो। तुमने अब तक यह पता नहीं लगाया कि वृच्छिक माता का मंदिर कहाँ पर है? अलावा इसके हमें यह भी नहीं मालूम कि नांगसोम ज़िंदा है या नहीं। नाहक लड़ने से क्या फ़ायदा?"

जांगला ने शिखिमुखी की बातों को इभ्यु भाषा में वृच्छिकनायक को समझाया। वृच्छिकनायक क्रोध से गरजते बोला, "मैं कहता हूँ कि यह टापू मेरा है। यहाँ पर आये हुए सब लोग मेरे ही गुलाम हैं।"

विक्रमकेसरी गुस्से में पागल हो

तलवार उठाने को हुआ, शिखिमुखी ने उसे रोककर कहा, "कोई किसी का जान बूझकर गुलाम नहीं बन सकता। तुम यह साबित कर हमको अपने गुलाम बना सकते हो कि तुम हमसे ताक़तवर हो। मैं तुम्हारी भलाई के लिए कहता हूँ, देखो, यह तलवार तुम्हारी पत्थर की कुल्हाड़ी से पैनी है। मजबूत भी है। तुम इससे बढ़कर अच्छा हथियार और ताक़त जिस दिन पा जाओगे, उस दिन हम शायद तुम्हारे गुलाम बन जायेंगे। तब तक तुम नाहक़ उछल-कूद न करो, समझे।"

शिखिमुखी की बातों का सार जांगला ने चार वाक्यों में वृच्छिकनेता को समझाया। विक्रम के हाथ से तलवार लेकर अपनी कलाई पर टिका दी, तलवार

के हटाते ही कलाई से खून की बूँदें टपा-टप गिरने लगीं। उस खून को वृच्छिकनायक को दिखाते जांगला बोला, "तुमने जान लिया न कि तलवार की धार कैसी पैनी है। अब तुम शिखी साहब के कहे मुताबिक़ करने को तैयार हो जाओ। वरना तुम्हारी मौत निश्चित है।"

वृच्छिकनेता की आँखें लाल हो उठीं। वह एक बार गरज़ उठा। उसने अपने हाथ की पत्थर की कुल्हाड़ी दूर फेंक दी। छाती ठोकते बोला, "धर्म युद्ध करेंगे। हथियार के बिना खाली हाथों से लड़ेंगे। आ जाओ।"

तलवार फेंककर विक्रम वृच्छिकनायक से जूझने को तैयार हो गया। शिखी ने उसे रोकते हुए कहा, "इस वृच्छिक जाति के नायक से लड़ने का हक़ एक दूसरी जाति के नायक के पुत्र को है। इसके अनुचरों पर निगरानी रखे रहो," ये शब्द कहते शिखिमुखी वृच्छिकनायक पर टूट पड़ा।

दोनों रोष से भरकर आपस में मुट्ठियों का प्रहार करते लड़ने लगे। वृच्छिकनायक शारीरिक बल में शिखिमुखी से मजबूत था, लेकिन शिखिमुखी की लड़ने की कुशलता और चालाकी वृच्छिकनायक में न थी। शिखी ने वृच्छिकनायक के सर व छाती पर ज़ोर से दे मारा, आख़िर एक धक्के से उसे दूर गिरा दिया। उस पर सवार हो उसका गला दबाये दूसरे हाथ से उसके केश पकड़े। सर को एक दो बार खींच-खींच कर ज़मीन पर दे मारा।

वृच्छिकनायक की आँखें निकल सी आयीं। वह अपने दोनों हाथ जोड़कर नीरस कंठ से गुनगुनाने लगा। जांगला ने झुककर उसकी बातें सुनीं, तब शिखी से बोला, "शिखी साहब, इसे छोड़ दीजिये। यह विनती करता है कि ज़िंदगीभर यह आपका गुलाम बना रहेगा।"

शिखिमुखी झट उछलकर उठ खड़ा हुआ। वृच्छिकनायक भी उठ बैठा। आगे झुककर शिखी के पैर पकड़कर गुनगुनाने लगा। अपने नेता को शिखी के पैरों पर पड़ते देख बाक़ी सभी लोग साष्टांग

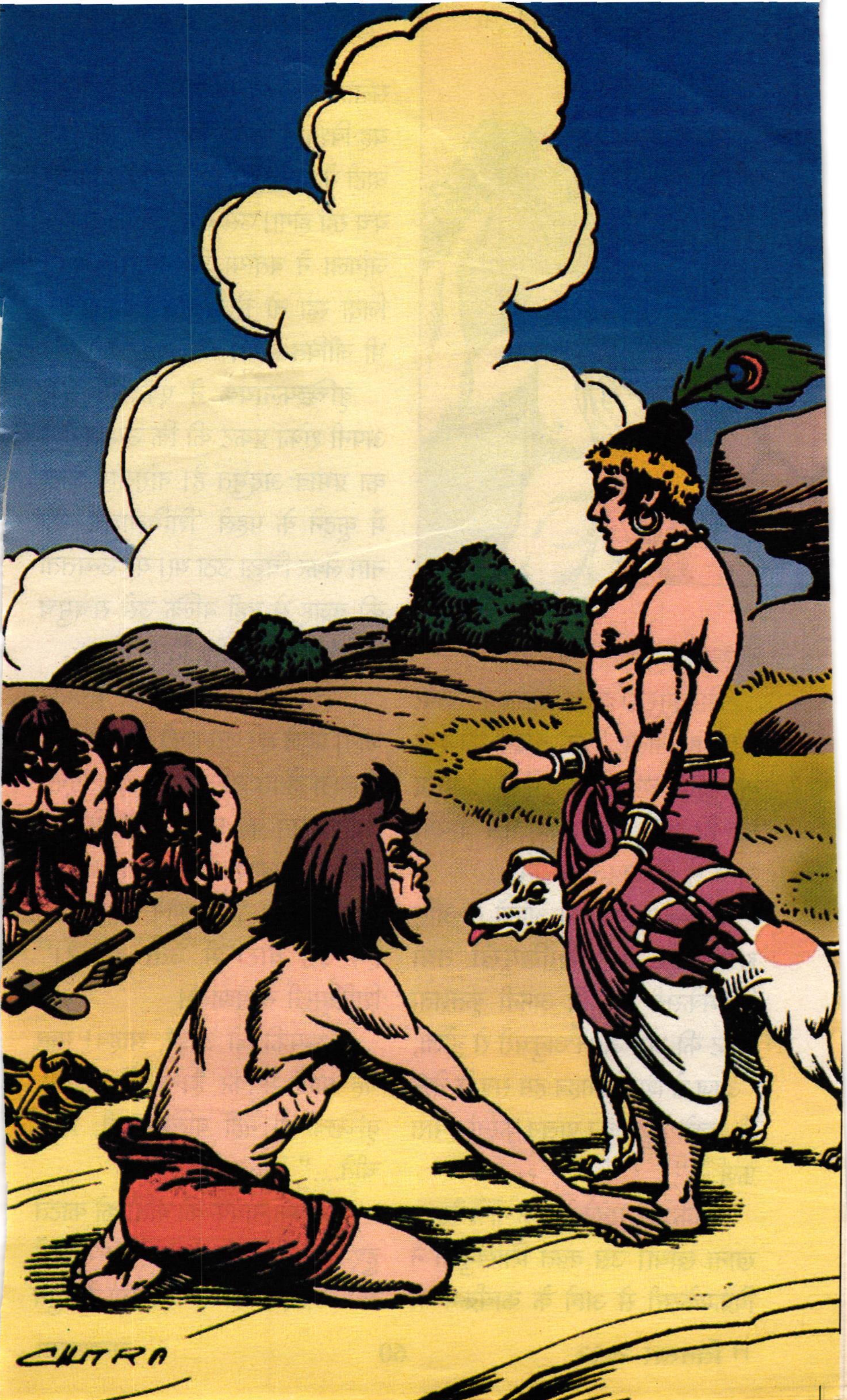
CHITRA

दण्डवत करने लगे।

शिखिमुखी वृच्छिकनेता को ऊपर उठाते हुए बोला, "एक आदमी का दूसरे का गुलाम बन जाना मुझे कतई पसंद नहीं है। जो हुआ, उसे हम भूल जायेंगे। आज से हम सब दोस्त हैं।"

वृच्छिकनायक की आँखों से आँसू झर उठे। उसने शिखिमुखी तथा विक्रमकेसरी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और अपने अनुचरों से बोला, "आज से शिखी साहब हम सब के नेता हैं। उनके हुकुम का पालन करना हमारा फ़र्ज़ है।"

इसके बाद सबने पेड़ों के नीचे बैठकर खाना खाया। उस वक़्त शिखिमुखी ने विक्रमकेसरी से आगे के कार्यक्रम पर सलाह-मशविरा किया। उन दोनों का यह विश्वास था कि नांगसोम उस गहरी घाटी में किसी सुरक्षित जगह पर गिरकर बच रहा होगा। उस बातचीत को सुनकर जांगला ने बताया कि नांगसोम अगर जिंदा रहा तो शिथिलालय का पुजारी भी जीवित होगा।

वृच्छिकनायक ने एक बार और अपनी शंका प्रकट की कि उन्मत्त कैथे का प्रभाव अद्भुत है। नांगसोम घाटी में कूदने के पहले 'शिथिलालय' का नाम लेकर चिल्ला उठा था। यह उन्मत्तता की वज़ह से नहीं बल्कि उसे सचमुच शिथिलालय दिखाई दिया होगा।

"शिथिलालय की बात भगवान जाने। पहले हमें उस घाटी में जाकर उसे जिलाना होगा। जांगला के कहे मुताबिक शिथिलालय का पुजारी अगर पेड़ की डालों में फँसकर बच रहा हो तो उसे मार डालना होगा। अंधेरा होने के पहले ही हम उस घाटी में उतर जायेंगे।" शिखिमुखी ने सुझाया।

"आपकी जो आज्ञा, साहब! मगर यह घाटी भयंकर है। इसमें महासर्प, वृच्छिक ही नहीं बल्कि हाथी, सिंह, चीते...."

वृच्छिक नायक की बातों को काटते हुए शिखिमुखी ने कहा, "इस टापू में भयंकर प्रदेश नहीं तो और क्या हैं? तुम

जिस वृच्छिक माता का मंदिर बताते हो, वह इस घाटी में तो है। उस मंदिर का पता लगाकर उस माता की पूजा करने की ज़िम्मेदारी क्या तुम लोगों पर नहीं है?''

''हम उस माता को अपनी जान तक देने को तैयार हैं, साहब! अगर मैंने उन्मत्त कैथा खाया होता तो पूर्णिमा के दिन माता के मंदिर में जाकर मनुष्य की बलि देता। मनुष्य की बलि दिये बिना माता की कृपा न होगी।'' वृच्छिक नेता ने कहा।

''अरे, बलि की बात बाद को देख लेंगे। पहले घाटी में तो उतरो।'' शिखी ने कहा।

सब लोग पहाड़ पर से घाटी में उतरने लगे। वृच्छिक नेता आगे चलते रास्ता दिखा रहा था। उसके कहे अनुसार घाटी भयंकर थी। वहाँ के विशाल वृक्षों में अधिकांश जटाओं से भरे बरगद के पेड़ थे। उनके नीचे हाथी घूम रहे थे। कुछ पेड़ों के नीचे सिंह गर्जन कर रहे थे। वृक्षों की शाखाओं में महा सर्प लटक रहे थे। उनके तनों से चिपके बड़े बड़े बिच्छू सरक रहे थे।

शिखिमुखी और उसके अनुचर हथियारों को तैयार रखकर चारों ओर चौकन्ने हो देखते हुए घाटी में उतर गये। नांगसोम जिस जगह कूद पड़ा था, उस

ओर वृच्छिकनायक आगे बढ़ा। वह प्रदेश ऊँचे-ऊँचे वृक्षों तथा लताओं से भरा था।

वृच्छिकनायक सर उठाये डालों की ओर देखते थोड़ी दूर चला, हठात रुककर पीछे आनेवाले शिखिमुखी से बोला, ''साहब, इस वक़्त हम उस जगह पहुँच गये हैं जहाँ नांगसोम कूद पड़ा था। देखिये, उन डालों में कोई आकृति दिखाई देती है। लेकिन वहाँ पर पहुँचना ख़तरे से खाली नहीं है। उसके नीचे हाथी का परिवार है।''

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने सर उठाकर उस ओर देखा। उन्हें भी पेड़ों की डालों में मनुष्य की आकृति अस्पष्ट दिखाई दी। वृच्छिक नायक ने शिखी

से कहा- "पहले यह जान ले कि वह नांगसोम की आकृति है या नहीं, तब हाथियों के झुंड को भगाया जा सकता है। नहीं तो हो सकता है कि पहाड़ पर से नीचे गिरा कोई भालू हो।"

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी इसी उधेड़बुन में शंका कर रहे थे कि लाल कुत्ता ज़ोरसे भूँक उठा। उसी दिशा में ध्यान से देखने पर शिखिमुखी को लगा कि वह आकृति नांगसोम की ही हो सकती है।

"विक्रम पहले हमें हाथियों को पेड़ के नीचे से दूर भगाना है। इसके बाद हम में से कोई एक उस पेड़ पर चढ़कर देखेंगे कि वहाँ पर नांगसोम है या नहीं।" शिखी ने कहा।

इसी वक़्त दो भारी हाथी चिंघाड़ते हुएसूँड उठाकर उनकी ओर आने लगे। तब वृच्छिक नायक बोला, "सब लोग उन चट्टानों की ओट में भाग जाइये। वहाँ से चट्टानों को ढकेलकर हाथियों को भगाने की कोशिश करेंगे।"

यह चेतावनी पाकर सब लोग पहाड़ी चट्टानों के पीछे दौड़ गये। हाथी ज़ोर से कान फ़ड़फड़ाते, सूंडों से ज़मीन पर प्रहार करते उनकी ओर झपट पड़े और चट्टानों के बीच की संकरी जगह में घुस न सकने के कारण वापस लौट गये। मौक़ा पाकर शिखिमुखी के दल ने हाथियों पर चट्टानें लुढ़कवा दीं। हाथी सब चिंघाड़ते दूर भाग खड़े हुए।

हाथियों के निकल जाने के बाद सब लोग पेड़ों के नीचे आये। वृच्छिक नायक ने अपने एक अनुचर को पेड़ पर चढ़ जाने का आदेश दिया। तभी लंगड़ा जांगला बैसाखी को पेड़ के तने से सटाकर बंदर की भाँति जल्दी-जल्दी पेड़ पर चढ़ने लगा।

(और है)

विचित्र कर

कल्लोल राज्य का पागल राजा टिक्काराजु एक दिन शाम को आराम से बैठा और सोचने लगा कि राज-कोष किस तरह हमेशा भरा हुआ रह सकता है। तब ही महल का एक पहरेदार दौड़ता हुआ उसे एक समाचार देने आया। जब राजा ने उसे हाँफ़ते हुए और साँस फूलते हुए देखा तो उसे शीघ्र ही अपने ख़जाने को धन से भर लेने का एक विचार सूझ गया। पहरेदार द्वारा दी गई सूचना को अनसुना करके उसने प्रधानमन्त्री को बुलवाया। राजा ने एक नया कानून बना दिया जिसे तुरन्त प्रभाव में लाना था। उस कानून के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को राजा के राज्य की हवा में साँस लेने के लिए उसे कर चुकाना था। धीरे धीरे ख़जाना भरता जा रहा था। एक दिन सिपाही एक पुनीत नाम के नौजवान को राजा के सामने लाये। सिपाही उसे इसलिए लाये थे कि उसने कर देने से इनकार कर दिया था। राजा टिक्काराजु ने क्रोध से उसकी ओर देखा और कड़ककर कहा,-''हमारे राज्य के कानून के अनुसार जब तक तुम यहाँ हो, तुम्हें यहाँ की हवा में साँस लेने के लिए हवा-कर देना पड़ेगा।'' पुनीत ने हाथ जोड़कर राजा का अभिवादन किया और बड़ी नम्रता से बोला, ''महाराज, मैं साँस लेते समय जितनी हवा भीतर लेता हूँ उतनी ही साँस बाहर छोड़ते समय निकाल देता हूँ। इस तरह अन्दर जाने वाली हवा और छोड़ी जाने वाली हवा का सन्तुलन बराबर हो जाता है। महाराज को इस पर ध्यान देना चाहिये और इस बात से सहमत होना चाहिये कि मुझे कर चुकाने की कोई ज़रूरत नहीं है।'' राजा निरुत्तर रह गया।

- एम. मुरली मोहन

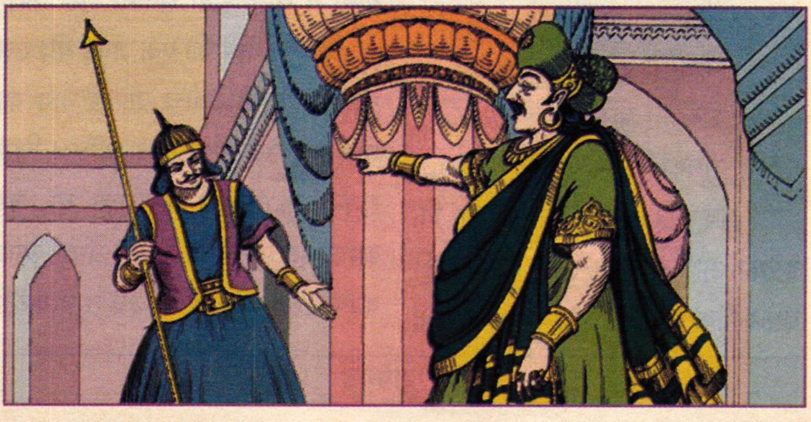

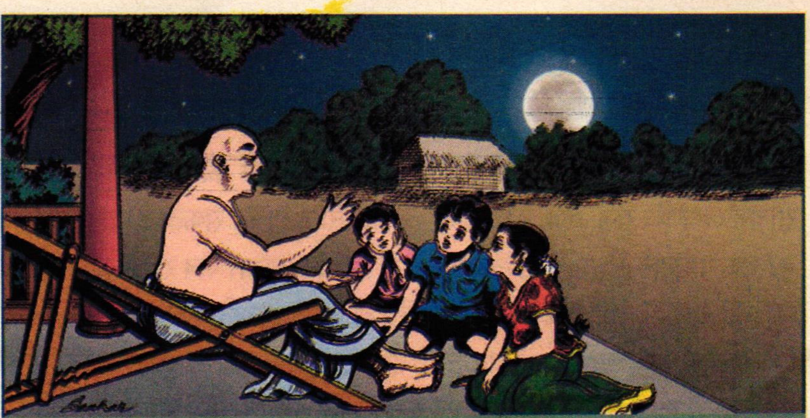

ध्वनि भय

चाँदनी में बैठे बाबा पान चबाते कुछ सोच रहे थे। चारों ओर बैठे बच्चे बाबा की ओर देखते सोच रहे थे कि बाबा कौन सा श्लोक सुनाते हैं।

इतने में मन्दार के पौधे में कुछ आहट हुई। "क्या है यह?" बच्चों ने आपस में एक दूसरे से प्रश्न किये। वे हैरान थे। बाबा ने मन ही मन हँसते, सुंघनी निकालकर नाक में डाल, यह सुनाया:

"शब्द मात्रन्नभेतव्य
मज्ञात्वा शब्द कारणं;
शब्दहेतुं परिज्ञाय
सुमन्त्रौ गौरवं गतः।"

"अब यह पूछना चाहते हो कि इसका अर्थ क्या है। सुनो, सुनाता हूँ। इस श्लोक का अर्थ है, किसी भी शब्द से, बिना यह जाने कि वह क्यों हुआ है, भयभीत हो जाना अच्छा नहीं। सुमन्त्र को शब्द का कारण मालूम करने के कारण ही तो गौरव मिला।"

बच्चे फूले न समाये। तालियाँ बजाकर वे कहने लगे, "बाबा, कहानी सुनाओ। सुमन्त्र कौन था बाबा, वह शब्द क्या है बाबा? उन्होंने प्रश्नों की बौछार कर दी।

"ठहरो भी, वह कहानी सुनाता हूँ," बाबा ने यों कहानी सुनानी शुरू की।

श्रीपर्वत नाम की एक जगह थी। उस श्रीपर्वत के बीचोंबीच ब्रह्मपुर नाम का नगर था। उसका राजा था श्रीधर। जिस सुमन्त्र के बारे में मैंने कहा था, वह इसका महामन्त्री था। यदि श्रीधर प्रजा का परिपालन इतनी अच्छी तरह करता

सी. शेषाद्रि

तो उसका आधा कारण सुमन्त्र ही था।

समझे न? फिर यकायक नगर में एक अफवाह उड़ी। वह यह कि श्रीपर्वत पर कोई घंटाकर्ण नामका राक्षस आया हुआ था। इसे महज अफवाह न समझना, कभी कभी घंटे की आवाज़ भी सुनाई पड़ती। घंटे की ध्वनि से लोग बहुत डर जाते।

घंटाकर्ण के भय से बहुत से लोग नगर छोड़कर चले गये और जो रह गये थे वे हथेली पर जान रखकर जी रहे थे।

यह देखकर राजा को चिन्ता हुई। उसने मन्त्री सुमन्त्र को बुलाकर कहा, ''मन्त्री! लोगों का यह डर हटाना हमारा कर्तव्य है। इसका उपाय सोचो।'' सुमन्त्र मान गया। बुद्धिमान तो था ही इसलिए पहले उसने यह जानना चाहा कि घंटे की ध्वनि क्यों होती थी। वह उस तरफ़ गया, जिस तरफ़ से वह आवाज़ आती थी। जाकर उसने देखा कि वहाँ कोई राक्षस न था। एक बन्दर पेड़ पर घूम रहा था, उसके पास एक घंटा था। जब कभी वह उसे बजाना चाहता, वह बजाता।

यह क्यों नहीं पूछते कि उसे घंटा कैसे मिला? एक चोर घंटा चुराकर कहीं जा रहा था कि एक शेर ने उसे मार दिया। बन्दर घंटे को उठा ले गया।

घंटे की क्यों ध्वनि होती थी, अब मालूम हो गया न? सुमन्त्र ने एक जगह फल वगैरह और बन्दर को बुलाया। बन्दर घंटा रखकर उन्हें खाने आया। सुमन्त्र घंटा लेकर शहर चला आया। जब असलियत लोगों को मालूम हुई तो उन्होंने डरना छोड़ दिया। राजा ने सुमन्त्र का आदर किया।

''देखा, आवाज होते ही न डरा करो। आवाज क्यों हुई यह पता लगाना चाहिये। समझे।'' बाबा ने कहा।

जायदाद का बंटवारा

एक व्यापारी के दो लड़के थे। बड़ा लड़का स्वार्थी और दूसरा भोलाभाला। व्यापारी ने सोचा कि उसकी मृत्यु होने पर बड़ा पुत्र छोटे को धोखा दे सकता है। यह सोचकर उसने अपनी सारी जायदाद दो बोरों में बाँध दी।

उसने मरते समय दोनों पुत्रों को पास बुलाकर कहा, ''बेटे, मेरे पास कुछ संपत्ति है, सब दो बोरों में बाँधकर पश्चिमी दिशा के कमरे में रख छोड़ा है। दोनों एक-एक बोरा लेकर अपनी-अपनी ज़िंदगी जिओ।''

कुछ दिन बाद व्यापारी मर गया। श्राद्ध के पहले दिन बड़े पुत्र ने कमरे में पहुँचकर बोरे खोलकर देखा।

एक बोरे में ऊपर चाँदी के सिक्के और नीचे मिट्टी के ढेले भर लिये। दूसरे दिन अपने छोटे भाई से कहा, ''भैया, पिताजी ने हम दोनों को एक-एक बोरा लेने को बताया है। मैं यह बोरा लेता हूँ, तुम दूसरा ले लो।'' यह कहकर उसने चाँदी के सिक्कों वाला बोरा ले लिया और मिट्टी के ढेरों वाला बोरा छोटे को दिया।

छोटे भाई ने एकांत में यह सोचकर मिट्टी के ढेले को फोड़कर देखा कि इस बोरे में मिट्टी के ढेले क्यों हैं? उसमें सोने का सिक्का था। इस तरह छोटे को सोने के सिक्कों वाला बोरा मिल गया।

सब से महान व्यक्ति

एक बार मगध राज्य के राजा नरसिंहनाथ ने यह जानना चाहा कि उसके राज्य में सब से महान व्यक्ति कौन है और यही पूछने के लिये अपने प्रधानमन्त्री सुबुद्धि को बुलवाया। तब सुबुद्धि ने उत्तर दिया, ''महाराज, हमारे राज्य में सब व्यक्ति महान हैं।

मौका आने पर वे सब उठ खड़े होते हैं और जो कुछ भी उनसे अपेक्षित होता है वह करते हैं।''

राजा इस उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने सुबुद्धि से कहा- ''ऐसे मैं नहीं मान सकता, सिद्ध करके दिखाओ।''

''श्रीमान् ! उचित समय आने पर मैं यह सिद्ध कर दूँगा,'' सुबुद्धि ने शान्त भाव से कहा।

कुछ दिन बीत गये। राजा नरसिंहनाथ ने विदर्भ राज्य पर आक्रमण करने का निश्चय किया। इस पर विचार करते ही उसने अपनी सेना को तैयार किया और दोनों राज्यों के बीच में सीमा पर चौकस होकर खड़े रहने के लिए व्यवस्था की। राजा नरसिंहनाथ और प्रधानमन्त्री सुबुद्धि दोनों विदर्भ राज्य की स्थिति देखने के लिये वेष बदलकर सीमा के अन्दर प्रवेश कर गये।

वे थोड़ी ही दूर गये होंगे कि विदर्भ राज्य के सैनिकों ने उन्हें चोर समझ कर पकड़ लिया और जेल में डाल दिया। राजा और प्रधानमन्त्री दोनों को एक ही कोठरी में रखा गया। उसी कोठरी में बबुआ नामक एक चोर भी था। उसका ध्यान उनके कीमती रत्नों की ओर गया। उसने किसी न किसी तरह उनको चुराना चाहा। परन्तु क्योंकि वे सब जेल में थे अतः यह संभव नहीं था। उसने राजा

एस. रामकिश्टया

और प्रधानमन्त्री को ये बताया कि वह सवेरा होने के पहले जेल से बच कर निकल जायेगा। उसने कहा कि यदि वे भी चाहें तो वे भी उसके साथ बच सकते हैं। राजा और प्रधानमन्त्री ने सहर्ष उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। बबुआ ने उनसे कहा कि वह कोठरी की छोटी सी खिड़की में लगी हुई लोहे की छड़ों को तोड़ देगा। उसके बाद वे एक एक करके उसमें से बाहर निकल सकते हैं।

जैसा कि तय हुआ था उसने खिड़की में लगी हुई लोहे की सलाखों को तोड़ दिया। वह खिड़की से बाहर कूद गया और फिर राजा और मन्त्री को बाहर आने में मदद की। राजा और प्रधानमन्त्री ने बबुआ को बचने में मदद करने के लिए आभार व्यक्त करने के लिये आभूषण दिये। परिस्थितियों के इस प्रकार मोड़ लेने से बबुआ आश्चर्यचकित था। उसने उन्हें धन्यवाद दिया और वहाँ से चल दिया।

यह सुबह होने के कुछ पहले की बात थी। क्योंकि जेलखाना शहर से बाहर था अतः राजा और मन्त्री उस धुँधलके में रास्ता भूलकर जंगल में प्रवेश कर गये। जब वे जंगल में चले जा रहे थे तो एक चीता उन पर झपट पड़ा। क्योंकि उस समय उनके पास कोई हथियार नहीं था, उन्हें विश्वास हो गया कि वे चीते का शिकार बन जायेंगे और वे बुरी तरह चीखे।

उसी क्षण, एक आदिवासी न जाने कहाँ से उनके सामने प्रकट हुआ। उसने चीते पर भाला फेंका जिसने एक ही झटके में उसे मार डाला। राजा और प्रधानमन्त्री उसे यह भी न पूछ सके कि तुम कौन हो? और तब तक वह वहाँ से चल पड़ा। वह उनकी भाषा नहीं समझता था और जल्दी से जंगल में भाग गया। उन्होंने अपने भाग्य को सराहा और दिन भर चलकर तब कहीं अपने डेरे की ओर पहुँचे। जब तक वे अपने डेरे में पहुँचे तब तक बहुत अधिक थक गये थे। बहुत थक जाने के कारण वे अपने डेरे में पहुँच कर गहरी नींद में सो गये।

मध्य रात्रि में विश्राम-स्थल पर आग

लग गई और उसने डेरों को भी निगलना शुरू कर दिया।

एक सैनिक ने फुर्ती दिखाई और राजा को खींचकर सुरक्षित जगह पहुँचाया और फिर प्रधानमन्त्री को निकाल लिया। राजा और प्रधानमन्त्री को बिलकुल चोट न आई। सवेरा होने पर राजा ने अपना निर्णय सुनाया कि वे विदर्भ पर आक्रमण नहीं करेंगे।

प्रधानमन्त्री ने राजा से कहा, ''महाराज!, आपने एक बार मुझ से पूछा था कि सब से महान आदमी कौन है। आज वही प्रश्न मैं आपसे करता हूँ। क्या वह चोर महान था जिसने हमें कैदखाने से निकलने में मदद की? क्या वह आदिवासी अधिक महान था जिसने चीते से हमें बचाया या वह सैनिक जिसने अपनी जान पर खेलकर हमारी जान बचाई अधिक महान था?

राजा ने उत्तर दिया, ''वे सब महान हैं। अपने तरीके से दूसरे राज्यों के लोग भी महान हैं। इस सत्य का उदाहरण वे चोर और आदिवासी हैं। यही कारण था कि मैंने विदर्भ पर आक्रमण करने की अपनी योजना को वापस ले लिया। दूसरे राज्य के भोले-भाले लोगों को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता था।''

तब प्रधानमन्त्री ने कहा, ''मैंने आपसे उसी दिन कहा था कि अपने काम के आधार पर हरेक व्यक्ति महान है। क्या अब आप मेरी बात से सहमत हैं?'' राजा सहमत हो गया।

प्रधानमन्त्री कहता गया, ''आपने अपना मन बदल लिया और शान्तिप्रिय बन गये। अगर आप चाहते तो विदर्भ राज्य को जीत सकते थे। परन्तु वही बात है जिसने आपका विचार बदल दिया। और सिर्फ़ इसीलिये आप उन सब से अधिक महान लग रहे हैं।''

राजा ज़ोर से हँस पड़ा।

चान्दीमल का भेद

एक शहर में चान्दीमल नामका एक सेठ रहा करता था। वह बड़ा लालची था। परन्तु उसकी पत्नी को दान-धर्म आदि का शौक था।

एक त्यौहार के दिन गाँववालों ने चन्दा जमा करके, कथा करवाने की सोची। चान्दीमल ने एक दमड़ी भी न दी।

"मुझे ऐसे बेकार कामों में दिलचस्पी नहीं है। मुझे ऐसे मनोरंजनों की कोई ज़रूरत नहीं है।" उसने साफ़ साफ़ कह दिया।

उस दिन से पति-पत्नी में झगड़ा शुरू हो गया। "पैसा खैर, न दिया तो न दिया, कम से कम मोक्ष का मार्ग जानने के लिए तीन बातें तो सुन आओ।" पत्नी ने कहा।

पत्नी ने जिद पकड़ी तो चान्दीमल तीन बातें सुनने के लिए मान गया।

उस दिन कथा के लिए बड़ के नीचे पन्डाल बनाया गया। पन्डाल लोगों से खचाखच भरा पड़ा था। चान्दीमल भी आकर एक तरफ़ बैठ गया। कथक मालाएँ पहनकर, पैरों में घुंघरू बाँध रहा था, तो ग्रामाधिकारी ने श्रोताओं की ओर मुड़कर कहा, "क्या सब बड़े-बुजुर्ग आ गये हैं? या किसी और को आना है?"

"ओहो, शायद कथक की पहली बात यही है। तीन बातों में से एक तो खतम हुई।" चान्दीमल ने सोचा।

तब तक जगह पूरी तरह भर चुकी

जे. वेंकटैया

थी और कुछ लोग बैठे हुए श्रोताओं के सामने खड़े थे। ग्रामाधिकारी ने फिर खड़े होकर कहा- "बैठो, बैठो! चान्दीमल ने सोचा कि यह दूसरी बात थी। क्योंकि जगह न थी, इसलिए कुछ लोग जा भी रहे थे। तब ग्रामाधिकारी ने कहा, "जाओ मत, जाओ मत। कथक आ रहे हैं।" यह सुन चान्दीमल ने सोचा। "अच्छा, जो तीन बातें मुझे सुननी थीं, मैंने सुन ली हैं," वह उठा। घर चला आया और आराम से सो गया।

यह चान्दीमल की पत्नी को न मालूम हुआ। क्योंकि उसके बहुत कहने पर भी पति ने उसकी बात न सुनी थी इसलिए वह बच्चों को लेकर कथा सुनने चली गई। इस जल्दबाजी में वह घर के किवाड़ बन्द करना भूल गई।

यह सब चोर देख रहे थे। उसके जाते ही वे घर में घुस गए। वे धीमे धीमे कदम रखते अन्दर गये। चान्दीमल सोता सोता बड़बड़ाया, "क्या बड़े-बुजुर्ग सब आ गये हैं, या किसी को आना है?" चोर डर गये।

यह जानकर कि घर का मालिक जगा हुआ था, जो जहाँ था, वह वहाँ बैठ गया।

तब चान्दीमल बड़बड़ाया- "बैठो, बैठो।" उसने ग्रामाधिकारी की बात दुहराई।

"अरे, यह तो यह भी जानता है कि हम बैठे हुए हैं। इसने हमें देख ही लिया होगा।" यह सोच वे एक एक करके उठने की कोशिश करने लगे। इतने में चान्दीमल ने सोते हुए कहा, "जाओ मत, जाओ मत, कथक आ रहे हैं।"

यह सोच कि मालिक उनका पीछा कर रहा था, बिना देखे ही वे जोर से भागने लगे।

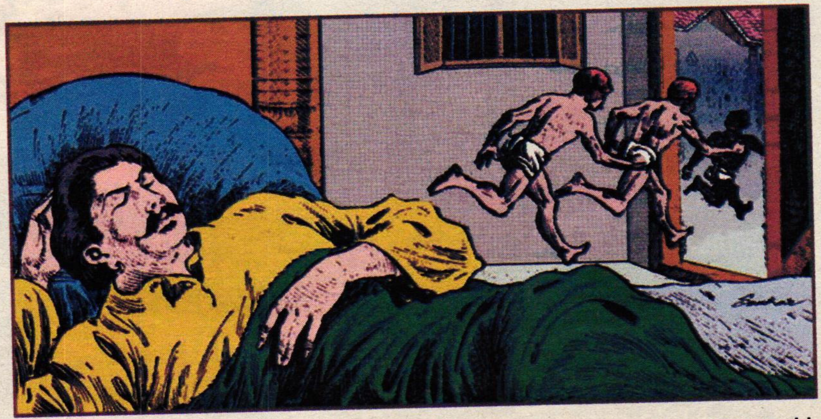

Log onto www.chandamama.com

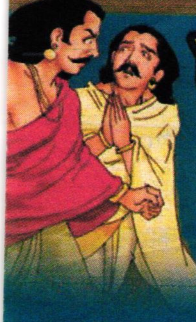

YOUR CHANDAMAMA IS AVAILABLE IN MANY AVATARS!

Junior Chandamama

(4+ age group):

A magazine for the little ones peppered with activities, pictures, and stories that will grip their imagination!

₹ 20/-

Regional Chandamama

Read your favourite stories in your own language! Chandamama takes you closer home even as your imagination soars!

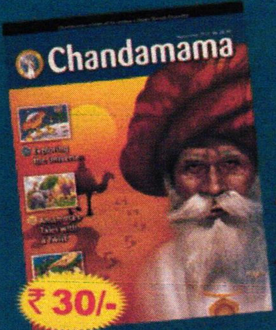

₹ 30/-

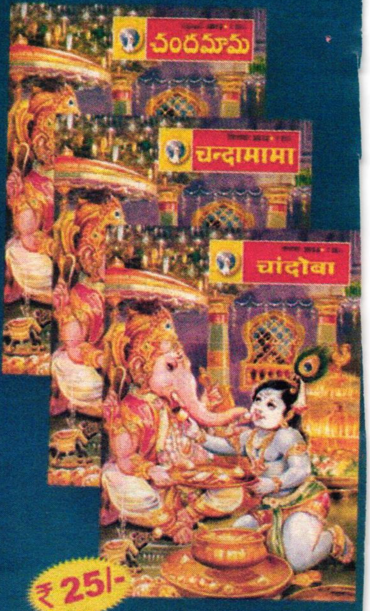

₹ 25/-

Chandamama English

(9+ age group)

A children's magazine that has adapted itself to the changing needs of children across decades, Chandamama English offers you a delectable mix of the classic and the contemporary in 70 pages that value fun!

Revamped
Redesigned

Relevant
Read it!

YOUR LANGUAGE,
YOUR CHANDAMAMA.

Available in 11 languages:

Telugu, Hindi, Marathi, Oriya, Kannada, Bengali, Tamil, Malayalam, Gujarati, Assamese, Sanskrit.

मैं क्या बन सकता हूँ?

इस महीने, हम एक अलग विषय के बारे में कुछ जानेंगे, ''समाज सेवा''।

एक पेशे के रूप में समाज सेवा समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के इच्छुक मुट्ठी-भर ही लोगों से कहीं आगे बढ़ चुकी है। अब यह उच्च कुशलता वाले पेशेवरों का पेशा बन चुका है।

समाज सेवा के बारे में लोगों का अनौपचारिक रवैया गंभीर पेशेवर रवैये में बदल चुका है। लेकिन फिर भी, इसके मूल तत्व वही हैं।

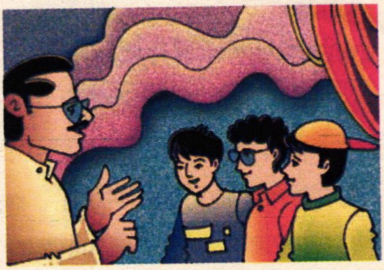

व्यक्ति में समाज की बेहतरी और अन्याय को ख़त्म करने का जज़्बा होना चाहिये। इस पेशे के लिये आवश्यक सबसे मुख्य गुण है विभिन्न प्रकार की और मुश्किल परिस्थितियों में काम करने की क्षमता। बातचीत करने की बेहद अच्छी क्षमता और तालमेल बैठाने का गुण भी आवश्यक हैं।

इसके अलावा, व्यक्ति को सभी के विकास में रुचि लेना चाहिये और इसे वास्तविकता का जामा पहनाने का उसका तरीका रचनात्मक होना चाहिये।

मुख्यधारा के पेशों के साथ ही इस पेशे में भी पारिश्रमिक बढ़ते जा रहे हैं। उचित योग्यताओं के साथ अच्छा धनोपार्जन किया जा सकता है। समाज सेवा के इस क्षेत्र में नौकरियों की सम्भावना व्यक्ति की अपनी विशेषज्ञताओं पर निर्भर है।

- श्रमिक कल्याण विशेषज्ञ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में श्रमिक कल्याण अधिकारी के रूप में और विभिन्न उद्योगों के मानव संसाधन विभागों में काम करते हैं।
- समाज सेवा में स्नातकोत्तर उपाधि लेने के बाद, व्यक्ति को विभिन्न भारतीय व संयुक्त राष्ट्र संगठनों में परामर्शदाता के रूप में नियुक्त किया जा सकता है।
- सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिये पढ़ाना भी एक विकल्प है।
- चिकित्सकीय मदद और मनोरोग के विशेषज्ञ अस्पतालों, क्लिनिक्स, परामर्श केन्द्रों मानसिक चिकित्सालयों, वृद्धाश्रमों और गैर सरकारी संगठनों में नौकरियाँ पाते हैं।

-साई

चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - ४४

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

सही उत्तर देने वाली प्रविष्टियों में से एक को ₹२५०/- रुपये का इनाम दिया जाएगा।*

यदि सही प्रविष्टियों की संख्या एक से अधिक हो तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को ₹५०/- की राशि मिलेगी।

तुम्हें क्या करना है:

१. एक कागज पर उत्तर लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४४** लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर ३१ अक्टूबर तक मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर दिसम्बर २०१२ के अंक में प्रकाशित होंगे।

दुनिया के समुद्रों के बारे में

१. उन दो समुद्रों का नाम बताओ जो सर्दी में जम जाते हैं।

२. कन्याकुमारी में मिलने वाले तीन सागर कौन से हैं?

३. तुर्की और ग्रीस के बीच स्थित सागर का नाम बताओ।

४. कौन सा सागर पूरी दुनिया के सागरों से सबसे दूर है?

५. कौन सा सागर दुनिया के दूसरा सबसे बड़ा माना जाता है?

६. कौन से सागर में सन् २००९ में तेल का बहुत बड़ा रिसाव हुआ था?

७. कौन सा सागर अफ्रीका में नील नदी का मुख कहा जाता है?

८. कौन से सागर को दुनिया का सबसे छोटा सागर कहा जाता है?

९. दुनिया का सबसे गहरा सागर कौन सा है?

१०. कौन सा सागर चीन व कोरिया के बीच प्रशान्त महासागर की उथली शाखा है?

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४१, जून २०१२ के उत्तर:

१. कर्ण/पाण्डव; २. कृष्ण; ३. तुम्बुरु; ४. शकुनी; ५. युधिष्ठिर; ६. पाञ्चजन्य; ७. अश्वत्थामा।

जून'१२ की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का कोई विजेता नहीं है।

चुटकुले

बच्चा: पापा के सिर पर बाल क्यों नहीं हैं?
माँ: क्योंकि वे बहुत सोचते हैं।
बच्चा: तो आपके सिर पर इतने बाल क्यों हैं?

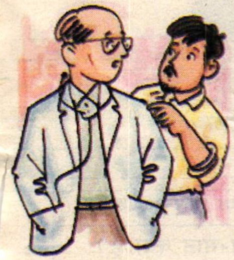

एक व्यक्ति ने एक डॉक्टर को सड़क पर रोककर पूछा, ''क्या आपको याद है आपने दस वर्ष पहले मेरा गठिया का इलाज किया था?''

''हाँ, याद है,'' डॉक्टर बोला।

''तो, मैं सोच रहा था,'' वह व्यक्ति बोला, ''कि क्या आपको लगता है कि अब भी मेरे नहाने से कोई परेशानी हो सकती है?''

विनीत: पुनीत, तुम्हारे पिताजी टीचर हैं, पर तुम्हारी बड़ी बहन तो एक अक्षर भी नहीं पढ़ सकती।

पुनीत: तो क्या? तुम्हारे पिताजी डेन्टिस्ट हैं पर तुम्हारे छोटे भाई के मुँह में एक भी दाँत नहीं है।

छोटू कोने की दुकान पर रुका और दुकानदार को यह सूची सुनाई:
10 किलो शक्कर 1.25 रु. प्रति किलो के भाव से
4 किलो कॉफ़ी 1.50 रु. प्रति किलो के भाव से
2 किलो मक्खन 1.10 रु. प्रति किलो के भाव से
2 साबुन 0.83 रु. प्रत्येक के हिसाब से
''यह सब मिलाकर कितना हुआ?'' छोटू ने पूछा।
''बाईस रुपये और छत्तीस पैसे।''
''यदि मैं तुम्हें तीन दस रुपये के नोट दूँ, तो मुझे क्या वापस मिलेगा?'' उसने फिर पूछा।
''सात रुपये और चौंसठ पैसे,'' इतने सवालों से उकता चुके दुकानदार ने कहा।
बाहर जाते हुए छोटू बोला, ''मुझे कुछ नहीं चाहिये, मैं तो अपना गणित का सवाल हल कराना चाहता था।''

चूँ-चूँ का डिब्बा

आप कितनी भाषाएँ जानते हैं? अब चन्दामामा के माध्यम से बहुत सी भाषाएँ जानें एवं आत्मविश्वास के साथ भारत भ्रमण करें! नीचे की तालिका में दिए गये भाषा के शब्द पढ़ें। उसके बाद तालिका में और नीचे देखकर अन्य भाषाओं में इन्हें किस तरह बोला एवं लिखा जाता है वह जानें।

English	Has the Principal come?	What is your pay-scale?
Hindi	क्या प्रधानाध्यापक आये हैं?	आपका वेतन-मान क्या है?
Telugu	ప్రిన్సిపాల్ వచ్చారా? प्रिंसिपाल वच्छारा?	మీ వేతనం ఎంత? मी वेतनम येन?
Tamil	கல்லூரி முதல்வர் வந்துவிட்டாரா? कल्लोरी मुधालवार वान्धु वित्तारा?	உன்னுடைய சம்பளம் எவ்வளவு? उन्नुडिया सम्बालम एव्वलावु?
Bengali	অধ্যক্ষ এসেছেন কি? अध्यक्षो एसेच्छेन कि?	আপনার মাহিনা কত? आपणार माहिना कातो?
Marathi	प्राचार्य येणार आहेत का? प्राचार्य येणार आहेत का?	तुमचा पगार किती आहे? तुमचा पगार किति आहे?
Kannada	ಪ್ರಾಂಶುಪಾಲರು ಬಂದರೇ? प्राम्शुपालारु बान्दरे?	ನಿಮ್ಮ ವೇತನ-ಶ್ರೇಣಿಯೇನು? निम्मा वेतन-श्रेणिएनु?
Odia	ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଆସିଲେଣି କି? अध्यक्ष्या आसिलेणि कि?	ଆପଣଙ୍କର ବେତନ ସ୍କେଲ କେତେ? आपणान्कारा बेतना स्केल केते?
Gujarati	પ્રિંસીપાલ આવ્યા છે? प्रिंसिपाल आव्या छे?	તમારું પગાર-ધોરણ શું છે? तमारुं पगार-धोरण शुं छे?
Assamese	অধ্যক্ষ আহিলে নে কি? अध्यक्ष्या आहिले नेकी?	তোমাৰ পে-স্কেল কি? तुमार पे-स्केल कि?
Malayalam	പ്രിൻസിപ്പാൾ വന്നുവോ? प्रिन्सिपाल वन्नुवो?	നിങ്ങളുടെ ശമ്പളം എത്രയാണ്? निन्गलुदे सम्बालम एरयानुं?
Sanskrit	मुख्याध्यापक: आगत: वा? मुख्याध्पक: आगता:?	का तव वेतनश्रेणी ? का तव वेतनश्रेणी?

English	Did you read the newspaper?	I'll call his mother
Hindi	क्या आपने अखबार पढा?	मैं उसकी माँ से बात करुंगा/करुंगी
Telugu	మీరు వార్తాపత్రిక చదివారా? मीतु वार्तापत्रिका चाडिवारा?	నేను అతడి తల్లిని పిలుస్తాను. नाएनु अडी ाल्लिनी पिलुस्तानु.
Tamil	நீ பத்திரிகை படித்தாயா? नी पथ्रिकै पडितया?	நான் அவன் அம்மாவைக் கூப்பிடுவேன். नान अवान अम्मावै कूप्पिदुवाएन.
Bengali	আপনি কি সংবাদপত্রটি পড়েছেন? आपणी कि सम्बादपत्रोटि पोर्हेछेन?	আমি তাঁর মাকে ডাকব। आमी तार मा के डाक्बो.
Marathi	तुम्ही पेपर वाचला आहे का? तुम्ही पेपर वाचला आहे का?	मी त्याच्या आईला बोलावेन. मी त्याच्या आइला बोलवेन
Kannada	ನೀವು ಪತ್ರಿಕೆ ಓದಿದಿರಾ? नीवु पत्रिके ऑडिदिरा?	ನಾನು ಅವನ ತಾಯಿಯನ್ನು ಕರೆಯುತ್ತೇನೆ नानु अवाना तायियान्नु कारेयुत्तेने.
Odia	ଆପଣ ଖବରକାଗଜ ପଢ଼ିଥିଲେ କି? आपणा खबरकागजा पढिलि कि?	ମୁଁ ତାଙ୍କ ମାଆଙ୍କୁ କଲ୍ କରିବି। मुन तान्का माआन्कु कल करिबि.
Gujarati	તમે છાપું વાંચ્યું હતું? तमे छापु वांच्युं हतुं?	હું તેની માતાને બોલાવીશ हुं तेनी माताने बोलावीश.
Assamese	তুমি বাতৰি কাকতখন পঢ়িলানে? तुमी बातोरी काकोत्खोन पोर्हिलाने?	মই তাৰ মাকক মাতিম। मोई तार माकोक मातिम.
Malayalam	നിങ്ങൾ പത്രം വായിച്ചുവോ? निन्गाल पारम वायिचुवो?	ഞാൻ അവന്റെ അമ്മയെ വിളിക്കാം. न्यान अवन्ते अम्मये विलिक्कम.
Sanskrit	त्वया वर्तमानपत्रं पठितं वा? त्वया वर्तमानपत्रम पठितम वा?	अहं तस्य मातरम् आह्वयामि। अहम तस्य मातरम आवहायामि.

पर्यावरण की जादूगर

१५ वर्षीय कृति पारेख पर्यावरण के लिये समर्थन जुटाने के लिये कुछ बहुत अच्छे तरीके अपनाती हैं। यह प्रकृति प्रेमी किशोरी पर्यावरण सम्बन्धी मुद्दों को बढ़ावा देने के लिये जादू का उपयोग करती है! कृति भारत की सबसे कम उम्र की जादूगर भी हैं - जो एक ऐसा रिकॉर्ड है जो उन्होंने पिछले पाँच वर्षों से कायम रखा है।

अन्य जादूगरों की ही तरह, वे भी कई जादुई तरकीबें जानती हैं। लेकिन अन्य जादूगरों के विपरीत, उनके खेलों में पर्यावरण सम्बन्धी सन्देश होता है। उदाहरण के लिये, वे क़ाग़ज़ खाने और रीसायकल्ड क़ाग़ज़ निकालने में माहिर हैं, एक ऐसा खेल, जो रीसायकल करने के महत्व को दर्शाता है। उनका पसन्दीदा करतब केले के छिलके को एक सुन्दर गुलाब के पौधे में बदलना है, जो यह दर्शाता है कि किस प्रकार बेकार वस्तुएँ पर्यावरण को सुन्दर बनाने में सहायक हो सकती हैं।

विलियम ज़ैम्बागो (प्रसिद्ध जादूगर पी. सी. सरकार के एक सहायक) के सानिध्य में कृति ने ८,००० से अधिक जादू के खेल सीखे और १,५०० से अधिक प्रदर्शन करके अब इस क्षेत्र की जानी-मानी हस्ती बन चुकी हैं।

इस उत्साही जादूगरनी ने मुम्बई के लगभग १०० स्कूलों को भी पर्यावरण सम्बन्धी प्रोजेक्ट्स में शामिल किया है और स्वयं ईको-किड क्लब, बाल भवन, मुम्बई की सक्रिय सदस्या हैं।

ये बाल भवन में वर्मिलक्चर प्रोजेक्ट के पीछे की प्रेरणा भी हैं, जो बगीचे के कचरे को खाद में बदलने के लिये केंचुओं का प्रयोग करता है। उन्होंने इस सिद्धान्त का प्रयोग अपने घर में और मुम्बई के एक मन्दिर में भी किया है। वर्मिकल्चर प्रोजेक्ट को बहुत सराहना मिली और कृति का साक्षात्कार बीबीसी रेडियो पर प्रसारित हुआ और वे बच्चों के बारे में एक जापानी डॉक्यूमेंट्री में भी दिखाई दीं।

पिछले वर्ष, कृति को पर्यावरण संरक्षण में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिये कृति को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) वैश्विक पुरस्कार मिला। इसी साल, उन्होंने अमेरिका के लास वेगास में वैश्विक जादूगर सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया।

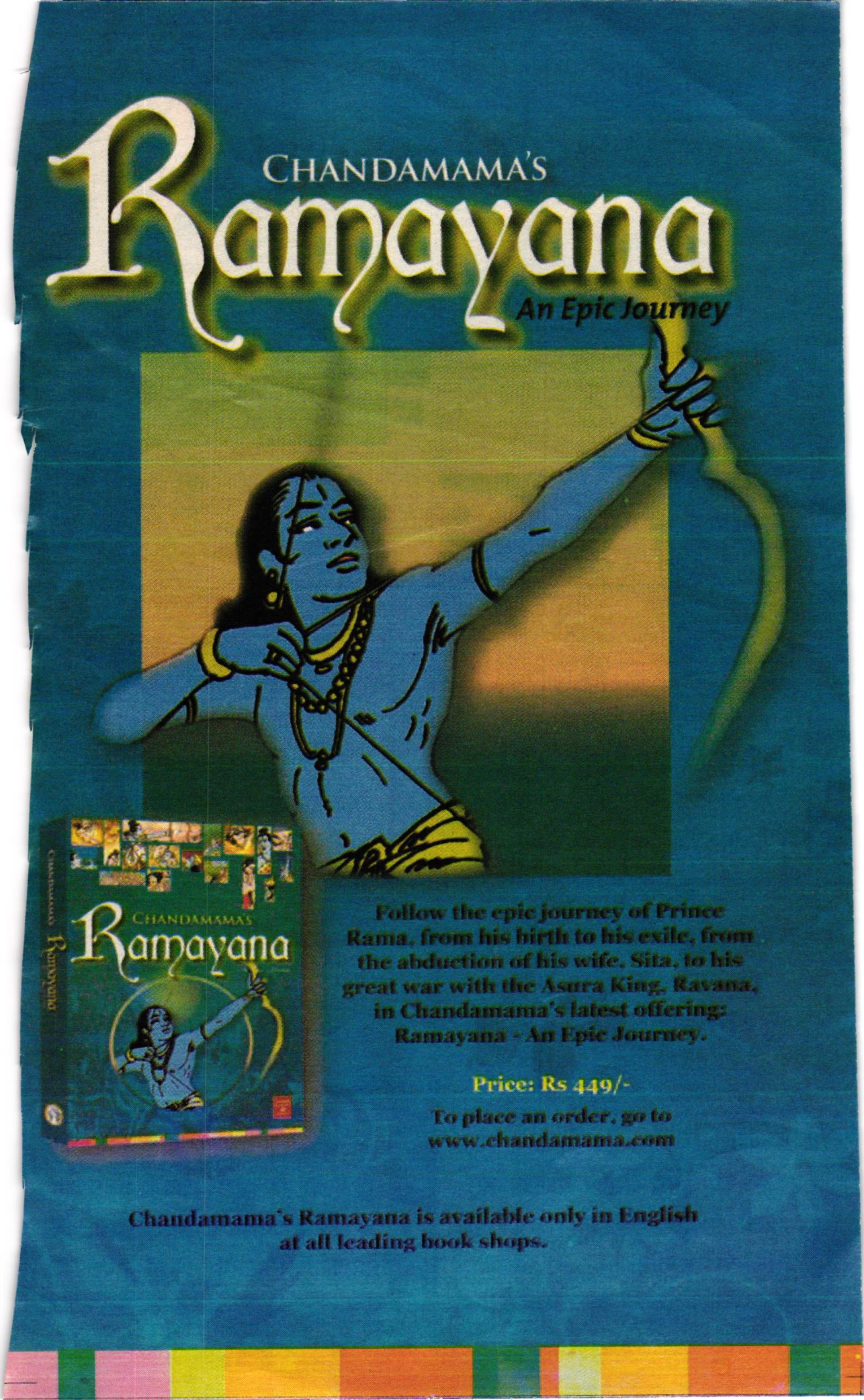
CHANDAMAMA'S
Ramayana
An Epic Journey
CHANDAMAMA'S
Ramayana
Follow the epic journey of Prince Rama, from his birth to his exile, from the abduction of his wife, Sita, to his great war with the Asura King, Ravana, in Chandamama's latest offering: Ramayana - An Epic Journey.
Price: Rs 449/-
To place an order, go to www.chandamama.com
Chandamama's Ramayana is available only in English at all leading book shops.

हाज़िरजवाब बीरबल

बादशाह का स्वप्न

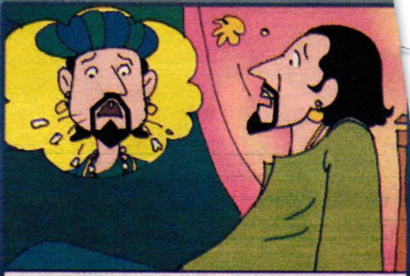

१. एक रात, बादशाह अकबर एक सपने से जाग गए। उनके एक छोड़ सभी दाँत गिर गए थे। उन्हें चिन्ता हुईः 'इसका क्या अर्थ है?'

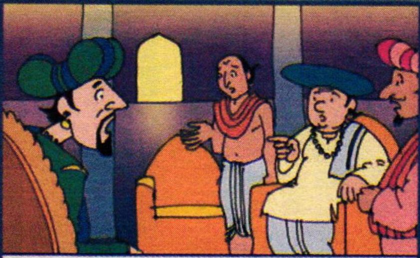

२. अगले दिन, बादशाह ने शाही ज्योतिषियों को बुलाया और अपने सपने का अर्थ बताने को कहा। एक ने कहा, ''शहंशाह, यह अशुभ है।''

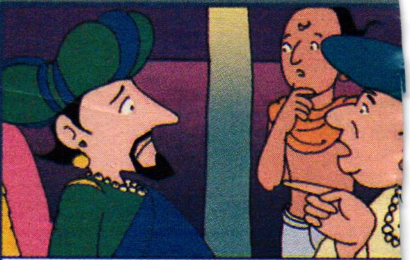

३. उसने कहा, ''यह आपके निकट के लोगों की मृत्यु का सूचक है।'' दूसरे ने टेका लगाया, ''अकेले आप बचेंगे।''

४. बादशाह को झटका लगा। वे चिल्लाए, ''तुम लोग मुझे निराश कर रहे हो। आँखों से दूर हो जाओ।'' ज्योतिषी तुरन्त वहाँ से भागे।

५. अकबर निराश थे। बीरबल ने आते ही पूछाः ''शहंशाह, आप चिन्तित लग रहे हैं।'' अकबर ने उन्हें स्वप्न और उसका फल बताया।

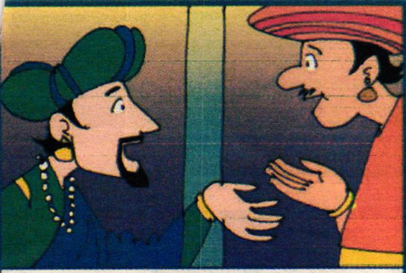

६. बीरबल ने यह कहकर उन्हें समझाने की कोशिश की कि ज्योतिषी ग़लत बोल रहे थे। ''तो तुम बताओ इस स्वप्न का अर्थ!''

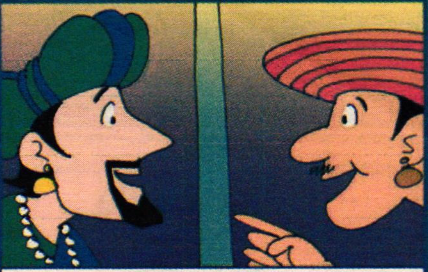

७. बीरबलः ''आप मानते हैं न कि उम्र बढ़ने पर दाँत गिरते हैं! आपके सपने का मतलब यह है कि आपके सम्बन्धियों की उम्र बहुत लम्बी होगी।

८. बीरबल ने जोड़ाः ''अकेला दाँत दर्शाता है कि आप उन सबसे अधिक उम्र पाएँगे और आपका जीवन उनसे अधिक सम्पूर्ण होगा।''

९. बादशाह ने राहत की साँस लेकर बीरबल को अपने मन का बोझ हटाने के लिये धन्यवाद दिया। उन्होंने प्रसन्न होकर उन्हें स्वर्ण मुद्राएँ इनाम में दीं।

यह नाम पढ़कर तुम्हें क्या ध्यान आता है? - पोर्ट्यूगीज़ मैन ऑफ़ वॉर। क्या यह कोई लड़ाकू जहाज है? यदि तुम्हें कोई जहाज याद आया हो, तो फिर से सोचो। यह मैन ऑफ़ वॉर समुद्र की गहराई में भी पाया जाता है। यह एक ख़तरनाक समुद्री जानवर है जो गर्म समुद्रों में रहता है। यह जैली फ़िश परिवार का सदस्य है और वैज्ञानिकों का कहना है कि यह कोई अकेला जानवर नहीं है। इसके विपरीत, यह चार प्रकार के अति रूपांतरित पॉलिप्स की कॉलोनी होता है। पॉलिप्स कोलेन्ट्रेट नामक पशु समूह के सदस्य होते हैं, जिनके शरीर बेलनाकार और मुँह का भाग स्पर्शकों से घिरा होता है। मैन ऑफ़ वॉर एक अकशेरुकी है जो समुद्र में तैरता पाया जा सकता है। यह पानी की सतह के पास तैरता है और समय-समय पर हवा लेने के लिये अपना आकार बदलता है। यह प्राणी अपने लम्बे, नीले, धागेनुमा तन्तुओं से अपने शिकार को डंक मारता है। इसका डंक जलन और नसों में सूजन पैदा कर सकता है। गम्भीर मामलों में इससे साँस लेने में परेशानी हो सकती है या हृदयाघात भी हो सकता है।

ट्रेज़र बॉक्स

इस माह आओ हम हमारे शासकों के कुछ चित्रों पर स्क्रैप बुक बनाते हैं।

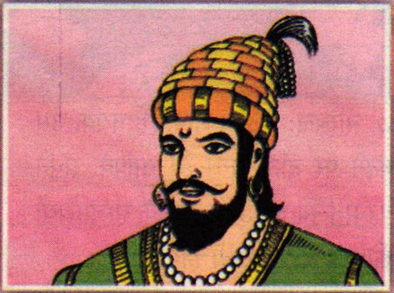

शिवाजी

टीपू सुल्तान

रंजीत सिंह

जहाँगीर

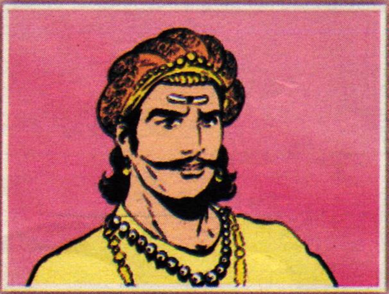

पृथ्वीराज चौहान

अशोक

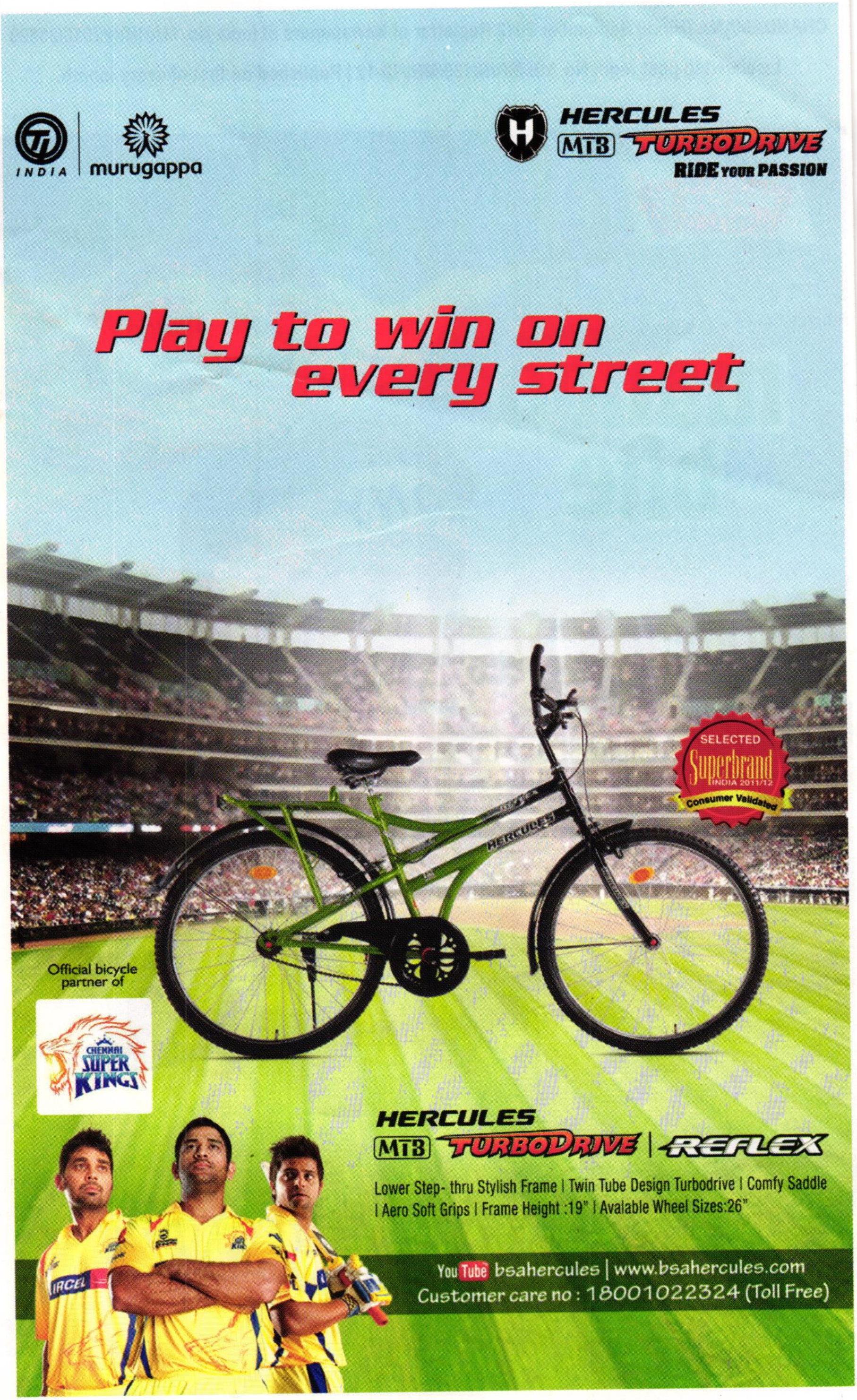

INDIA
murugappa
HERCULES
MTB TURBODRIVE
RIDE YOUR PASSION
Play to win on every street
SELECTED
Superbrand
INDIA 2011/12
Consumer Validated
HERCULES
Official bicycle partner of
CHENNAI SUPER KINGS
HERCULES
MTB TURBODRIVE | REFLEX
Lower Step- thru Stylish Frame | Twin Tube Design Turbodrive | Comfy Saddle | Aero Soft Grips | Frame Height :19" | Avalable Wheel Sizes:26"
YouTube bsahercules | www.bsahercules.com
Customer care no : 18001022324 (Toll Free)

CHANDAMAMA (Hindi) September 2012 Registrar of Newspapers of India No. MAHHIN/2010/35899
Licensed to post regd. No. MH/MR/N/130/MBI/10-12 | Published on first of every month.